ISBN: 978-93-5943-056-0

कबीर के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता: एक अध्ययन



- डॉ. राजीव अग्रवाल
- निशा

कबीर के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता: एक अध्ययन

डॉ.राजीव अग्रवाल
संकायाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

निशा
एम.एस-सी. (रसायन विज्ञान), एम.एड.

कबीर के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता: एक अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

निशा

E-book संस्करण: जून 2026

मूल्य: ₹ 111

ISBN: 978-93-5943-056-0

प्रकाशक-

निशा

पता- मूसा नगर, बिसण्डा रोड, अतर्रा (बाँदा)
Mob- 8423919810

E-mail: mishamisha98691@gmail.com

प्राक्कथन

वैश्विक पटल पर आज का मानव समाज जहाँ एक ओर सूचना तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैज्ञानिक समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर है, वहीं दूसरी ओर वह गंभीर आंतरिक रिक्तिता, नैतिक संकट और मानसिक तनाव से जूझ रहा है। आधुनिक शिक्षा ने मनुष्य को सूचनाओं से तो समृद्ध कर दिया है, परंतु उसके भीतर के मानवीय, नैतिक और सामाजिक मूल्यों को कहीं पीछे छोड़ दिया है। इस युग-संधि पर जब हम वर्तमान शैक्षिक विसंगतियों का समाधान खोजने का प्रयास करते हैं, तो मध्यकाल के महान क्रांतिकारी संत, कवि और विचारक महात्मा कबीर का दर्शन एक प्रकाश-स्तंभ की भांति हमारा मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रस्तुत पुस्तक **"वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कबीर के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों की प्रासंगिकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"** इसी वैचारिक और व्यावहारिक आवश्यकता का एक विनम्र अकादमिक प्रयास है। कबीर केवल एक धार्मिक सुधारक या रहस्यवादी कवि नहीं थे, बल्कि वे एक व्यावहारिक शिक्षक थे, जिन्होंने 'मसि कागद छूयो नहीं' की सहज घोषणा करते हुए भी अनुभवजन्य ज्ञान और आचरण की शुद्धता को सर्वोपरि माना।

इस पुस्तक कार्य को व्यवस्थित रूप देने के लिए इसे पाँच मुख्य अध्यायों में विभाजित किया गया है:

प्रथम अध्याय- समस्या एवं उसकी पृष्ठभूमि

इसके अंतर्गत विषय की पृष्ठभूमि, कबीर के शैक्षिक दर्शन और वर्तमान शैक्षिक संकट के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया गया है। साथ ही शोध की समस्या, उद्देश्य, परिकल्पनाएं, परिसीमन तथा शोध प्राविधि (Methodology) को स्पष्ट किया गया है, जो इस अध्ययन को एक निश्चित वैज्ञानिक दिशा प्रदान करते हैं।

द्वितीय अध्याय- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

इसमें कबीर के दार्शनिक, सामाजिक, शैक्षिक और व्यावहारिक पक्षों पर पूर्व में किए गए शास्त्रीय कार्यों, शोध पत्रों और पत्रिकाओं का गहन विश्लेषण किया गया है, ताकि वर्तमान शोध की मौलिकता और प्रासंगिकता को सुदृढ़ आधार मिल सके।

तृतीय अध्याय- कबीर का जीवन परिचय

इस अध्याय में कबीर के जन्म, माता-पिता, गुरु-शिष्य परंपरा, उनके गृहस्थ जीवन, अलौकिक कृतियों और महाप्रयाण (मृत्यु) से जुड़े ऐतिहासिक एवं प्रामाणिक संदर्भों को प्रस्तुत किया गया है, जो उनके विचारों की पृष्ठभूमि को समझने में सहायक हैं।

चतुर्थ अध्याय- कबीर के चयनित दोहों में निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

यह इस पुस्तक का केंद्रीय स्तम्भ है, जिसमें कबीरदास जी के सात महत्वपूर्ण अंगों–करणी बिना कथनी को अंग, कथनी बिना करणी को अंग, कुसंगति को अंग, संगति को अंग, असाध को अंग, साध को अंग, और पारिख को अंग–का गहन विश्लेषण कर उनमें छिपे शाश्वत शैक्षिक मूल्यों और आधुनिक प्रासंगिकता को उद्घाटित किया गया है।

पंचम अध्याय- निष्कर्ष एवं सुझाव

अंतिम अध्याय में संपूर्ण अध्ययन के निष्कर्षों को समेटते हुए शिक्षाशास्त्र में इसके निहितार्थों को स्पष्ट किया गया है। इसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, जनसामान्य और शिक्षा-नीति निर्माताओं (विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति - NEP 2020 के संदर्भ में) के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। साथ ही, भाषा-विकास, लोक-जीवन, नैतिक-मानवीय मूल्यों के संवर्धन और सामाजिक चेतना के विकास में कबीर की शैक्षिक उपादेयता को सिद्ध किया गया है।

यह पुस्तक कार्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के उन उद्देश्यों के सर्वथा अनुकूल है जो भारतीय ज्ञान परंपरा, अनुभवजन्य शिक्षा और मूल्य-आधारित चरित्र निर्माण पर बल

देते हैं। कबीर की ‘आँखन देखी’ बनाम ‘कागद की लेखी’ की अवधारणा आज की रटंत और केवल सूचनात्मक शिक्षा प्रणाली के लिए एक महान सुधारक सूत्र है।

यह पुस्तक कार्य मात्र एक अकादमिक उपाधि की प्राप्ति के लिए किया गया प्रयास नहीं है, बल्कि कबीर के कालजयी विचारों के आलोक में वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए एक मूल्य-परक, तनाव-मुक्त और समरसता-युक्त शैक्षिक परिवेश के निर्माण की दिशा में एक वैचारिक योगदान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अध्ययन शिक्षाविदों, शोधार्थियों, नीति-निर्माताओं और समाज के संवेदनशील प्रबुद्ध वर्ग के लिए उपयोगी एवं विचारोत्तेजक सिद्ध होगा।

दिनांक- 10/6/2026 **डॉ. राजीव अग्रवाल**

स्थान- अतर्रा (बाँदा) **निशा**

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय

समस्या एवं उसकी पृष्ठभूमि

प्रथम अध्याय

समस्या एवं उसकी पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 विषय की पृष्ठभूमि

शिक्षा मानव जीवन की वह आधारशिला है जो न केवल व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनाती है, बल्कि उसमें सत्य और असत्य के विवेक को भी जागृत करती है। भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा को 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वही है जो बंधनों से मुक्त करे) माना गया है। मध्यकालीन भारत के वैचारिक क्षितिज पर कबीरदास एक ऐसे महान शिक्षक और क्रांतिदृष्टा के रूप में उभरते हैं, जिन्होंने किसी औपचारिक विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, किंतु जिनके पास 'जीवन के अनुभव' की सबसे बड़ी डिग्री थी। उनका काव्य मात्र भक्ति का उद्घोष नहीं है, बल्कि वह मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय और व्यावहारिक नैतिकता का एक वृहद् शैक्षिक पाठ्यक्रम है।

1.1.2 कबीर का शैक्षिक दर्शन: 'मसि कागद' से परे

कबीर का व्यक्तित्व एक ऐसे अनौपचारिक शिक्षक का है जो समाज को ही अपनी प्रयोगशाला मानते थे। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की– *"मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गह्यो नहीं हाथ"*। उनकी यह स्वीकारोक्ति आधुनिक शिक्षा के उस भ्रम को तोड़ती है जो केवल साक्षरता और डिग्री को ही ज्ञान का पर्याय मानती है। कबीर के अनुसार ज्ञान वह है जो आचरण में उतरे। उनकी 'साखियाँ' (साक्षी/प्रत्यक्ष प्रमाण) इसी अनुभवजन्य शिक्षा का प्रमाण हैं। वे पुस्तकीय ज्ञान (Bookish Knowledge) के स्थान पर व्यावहारिक सत्य (Practical Truth) को प्राथमिकता देते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ शिक्षा सूचनाओं का अंबार बनती जा रही है, कबीर का 'आंखन देखी' का सिद्धांत छात्रों में आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करने का सबसे बड़ा मंत्र है।

1.1.3 वर्तमान शैक्षिक संकट और कबीर

आज का युग वैज्ञानिक उन्नति और सूचना क्रांति का युग है, फिर भी मानवीय संवेदनाएँ निरंतर क्षीण हो रही हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने कुशल इंजीनियर, डॉक्टर और प्रबंधक तो पैदा किए हैं, परंतु 'संवेदनशील मनुष्य' के निर्माण में वह कहीं न कहीं असफल रही है। समाज में बढ़ती कट्टरता, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन और मानसिक तनाव इस बात का संकेत हैं कि हमारी शिक्षा में 'मूल्यों' (Values) का अभाव है। कबीर का काव्य यहाँ एक मार्गदर्शक के रूप में प्रासंगिक हो जाता है। उनके काव्य में निहित सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, और प्रेम जैसे मूल्य आधुनिक शिक्षा की इस रिक्तता को भरने की क्षमता रखते हैं।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव (Emergence of the Problem)

1.2.1 आधुनिक शिक्षा का 'सूचनात्मक' होना (Information vs. Wisdom)

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा संकट यह है कि यह **'ज्ञान' (Knowledge)** के स्थान पर **'सूचना' (Information)** पर अधिक केंद्रित हो गई है। छात्र तथ्यों और आंकड़ों को रटने में तो सक्षम हैं, लेकिन जीवन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक 'विवेक' (Wisdom) का उनमें अभाव दिख रहा है। कबीर ने सदियों पहले आगाह किया था कि थोथा ज्ञान (किताबी ज्ञान) मनुष्य को पंडित (विद्वान) नहीं बनाता। समस्या यहीं से उत्पन्न होती है कि क्या हमारी डिग्री-आधारित शिक्षा वास्तव में मनुष्य का मानसिक और आध्यात्मिक विकास कर पा रही है?

1.2.2 नैतिक मूल्यों का निरंतर ह्रास (Erosion of Moral Values)

आज के भौतिकवादी युग में सफलता का पैमाना केवल 'धन' और 'पद' रह गया है। इसके परिणामस्वरूप समाज में भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, और अनैतिकता बढ़ी है। शिक्षा संस्थानों से निकलने वाले युवा तकनीकी रूप से तो दक्ष हैं, लेकिन नैतिक रूप से शून्य होते जा रहे हैं। कबीर के काव्य में निहित 'सत्य', 'ईमानदारी' और 'सन्तोष' जैसे मूल्य आज लुप्तप्राय हैं। समस्या यह है कि बिना चारित्रिक दृढ़ता के क्या कोई भी राष्ट्र प्रगति कर सकता है?

1.2.3 सामाजिक ध्रुवीकरण और कट्टरता (Social Polarization)

वर्तमान समय में जाति, धर्म और संप्रदाय के नाम पर समाज में जो विभाजन और घृणा बढ़ी है, वह शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों पर प्रश्नचिह्न लगाती है। शिक्षित होने के बावजूद लोग संकीर्ण विचारधाराओं के शिकार हैं। कबीर ने 'हिंदू-मुस्लिम' और 'छुआछूत' की दीवारों को तोड़ने का प्रयास किया था। आज की समस्या यह है कि हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली इन सामाजिक बुराइयों को जड़ से मिटाने में विफल क्यों हो रही है?

1.2.4 अनुभवजन्य शिक्षा की उपेक्षा (Neglect of Experiential Learning)

आज की शिक्षा प्रयोगशालाओं और कक्षाओं तक सीमित है, जबकि कबीर 'आँखन देखी' यानी प्रत्यक्ष अनुभव पर जोर देते हैं। वर्तमान में 'स्किल गैप' (कौशल अंतराल) की एक बड़ी समस्या है—डिग्री होने के बाद भी युवा व्यावहारिक कार्यों में अक्षम हैं। कबीर का जुलाहा जीवन और उनका काव्य यह सिद्ध करता है कि कर्म और शिक्षा अलग-अलग नहीं हैं। समस्या का मूल यह है कि हमने 'श्रम' को शिक्षा से अलग कर दिया है।

1.2.5 मानसिक तनाव और आत्मबोध का अभाव (Mental Stress and Lack of Self-Awareness)

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में छात्र और युवा अत्यधिक मानसिक तनाव, अवसाद (Depression) और आत्महत्या जैसे आत्मघाती रास्तों की ओर बढ़ रहे हैं। इसका कारण यह है कि शिक्षा उन्हें 'बाहरी दुनिया' को जीतना तो सिखाती है, लेकिन 'स्वयं' को (Self) जानना नहीं सिखाती। कबीर का 'घट-घट में राम' का दर्शन व्यक्ति को स्वयं के भीतर झांकने और शांति प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

समस्या का सारांश (The Core Problem Statement)

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि समस्या का मूल **'मूल्यविहीन शिक्षा'** और **'यंत्रवत जीवन'** है।

- क्या कबीर का काव्य आधुनिक शिक्षा में उस 'मानवीय स्पर्श' (Human Touch) को वापस ला सकता है?

- क्या उनके कड़े प्रहार आज के पाखंडी और भ्रष्ट तंत्र को सुधारने में सहायक हो सकते हैं?

क्या "साईं इतना दीजिये" का दर्शन आज के अनियंत्रित उपभोक्तावाद (Consumerism) का समाधान है?

इन्हीं गंभीर संकटों और चुनौतियों के बीच से इस शोधसमस्या का प्रादुर्भाव हुआ है, ताकि कबीर की शाश्वत वाणी के आलोक में वर्तमान शिक्षा के 'लोकतांत्रिक और मानवीय स्वरूप' को पुनर्जीवित किया जा सके।

1.3 शोध समस्या का कथन (Statement of the Problem)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली सूचनात्मक ज्ञान (Information) देने में तो सफल है, लेकिन बोधपरक ज्ञान (Wisdom) और चरित्र निर्माण में पिछड़ रही है। क्या कबीर की 'साखी' और 'पद' आज के विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, तर्कशीलता और नैतिक साहस पैदा कर सकते हैं? यह शोध इसी प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास है

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन निम्नालिखत है_

कबीर के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता: एक अध्ययन

1.4 परिभाषात्मक शब्दावली

1.4.1 कबीर

कबीर (लगभग 1398-1518 ई.) एक महान क्रांतिकारी संत और समाज सुधारक कवि थे, जिन्होंने अपनी साखियों और पदों के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार किया। प्रस्तुत शोध में कबीर को एक ऐसे 'लोक-शिक्षक' के रूप में लिया गया है, जिनका काव्य मानवीय और नैतिक मूल्यों का अटूट स्रोत है।

1.4.2 कबीर के काव्य

कबीर द्वारा रचित 'बीजक' (साखी, सबद और रमैनी) एवं कबीर ग्रंथावली की रचनाएँ। इस शोध में इसे मात्र एक साहित्यिक कृति न मानकर एक 'शैक्षिक साधन' के रूप में देखा

गया है, जो अनुभवजन्य ज्ञान और आचरण की शुद्धता के माध्यम से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम है।

1.4.3 शैक्षिक मूल्य

वे आदर्श, मानक और नैतिक सिद्धांत जो विद्यार्थी के चरित्र निर्माण और मानसिक चेतना को विकसित करते हैं। प्रस्तुत शोध के संदर्भ में शैक्षिक मूल्यों से तात्पर्य कबीर के सत्य, अहिंसा, भेदभाव रहित समाज, गुरु की महिमा और तर्कशीलता जैसे जीवन मूल्यों से है, जो शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को पूरा करते हैं।

1.4.4 र्तमान परिप्रेक्ष्य

आज का आधुनिक समय (21वीं सदी), जो वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और नैतिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के लक्ष्यों और आधुनिक समाज में व्याप्त तनाव, जातिवाद एवं रटंत विद्या जैसी समस्याओं को आधार बनाकर कबीर के विचारों का विश्लेषण किया गया है।

1.4.5 प्रासंगिकता

किसी कालजयी विचार की समय और स्थान की सीमाओं से परे जाकर वर्तमान की समस्याओं को सुलझाने की क्षमता। इस शोध में प्रासंगिकता का अर्थ यह है कि कबीर के 15वीं सदी के विचार आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्रों के नैतिक और सामाजिक सुधार के लिए कितने व्यवहारिक और उपयोगी हैं।

1.4.6 एक अध्ययन

किसी विशिष्ट विषय पर किया गया व्यवस्थित, तर्कसंगत और विश्लेषणात्मक शोध। यह पद यह स्पष्ट करता है कि प्रस्तुत कार्य केवल वर्णनात्मक नहीं है, बल्कि उपलब्ध तथ्यों और कबीर की वाणियों का गहन मूल्यांकन करने का एक प्रयास है।

1.5 अध्ययन का औचित्य (Rationale of the Study)

1.5.1 वर्तमान शिक्षा की 'आंतरिक रिक्तता' को भरना

आज की शिक्षा प्रणाली सूचना (Information) और कौशल (Skill) प्रदान करने में तो सफल है, लेकिन यह छात्र के 'आंतरिक व्यक्तित्व' का निर्माण करने में विफल रही है। कबीर का काव्य सीधे मनुष्य के अंतर्मन को संबोधित करता है। शोध का औचित्य इस बात में है कि कबीर के **'आत्म-ज्ञान'** और **'सहजता'** के सिद्धांतों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा की इस यांत्रिकता (Mechanical nature) को दूर कर उसे 'प्राणवान' बनाया जा सके।

1.5.2 नैतिक संकट का समाधान

21वीं सदी का सबसे बड़ा संकट 'नैतिक ह्रास' है। भ्रष्टाचार, हिंसा और झूठ के इस युग में कबीर के मूल्य जैसे– *"सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप"*–केवल उपदेश नहीं, बल्कि सामाजिक अस्तित्व के लिए अनिवार्य शर्त हैं। यह अध्ययन इसलिए उचित है क्योंकि यह कबीर की 'नैतिक कड़ाई' को आधुनिक छात्र के चरित्र निर्माण का आधार बनाने का तर्क प्रस्तुत करता है।

1.5.3 सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता

आज समाज फिर से जाति, धर्म और संप्रदाय के आधार पर बंट रहा है। कबीर ने मध्यकाल में ही "मानस की जाति एक" का संदेश दिया था। वर्तमान में जब कट्टरता बढ़ रही है, तब कबीर की **'मध्यम मार्गी'** और **'मानवतावादी'** दृष्टि का अध्ययन करना अनिवार्य है ताकि युवाओं में 'समावेशी सोच' विकसित की जा सके। यह शोध राष्ट्रीय एकता के शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

1.5.4 'आंखन देखी' बनाम 'कागद की लेखी' (व्यावहारिक शिक्षा)

वर्तमान में 'स्किल इंडिया' और 'व्यावहारिक शिक्षा' पर बहुत जोर दिया जा रहा है। कबीर का पूरा जीवन और दर्शन 'अनुभवजन्य ज्ञान' (Experiential Learning) पर आधारित था। वे किताबी ज्ञान के कट्टर विरोधी थे। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने के लिए उचित है कि कबीर की शिक्षण पद्धति (Pedagogy) कैसे आज की **'क्रिया-आधारित शिक्षा'** (Activity-based Learning) के लिए एक देसी और मजबूत मॉडल प्रदान कर सकती है।

1.5.5 मानसिक तनाव और जीवन जीने की कला

छात्रों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और 'परफॉरमेंस प्रेशर' के कारण मानसिक स्वास्थ्य एक गंभीर समस्या बन गया है। कबीर का **'संतोष'** और **'अपरिग्रह'** का दर्शन ("साईं इतना दीजिये...") मानसिक शांति और संतुलन सिखाता है। यह शोध इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि यह कबीर के काव्य को एक 'मनोवैज्ञानिक परामर्श' (Psychological Counseling) के रूप में प्रस्तुत करता है।

1.5.6 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के साथ संगति

भारत की नई शिक्षा नीति भारतीयता, नैतिक मूल्यों और समग्र विकास पर बल देती है। कबीर के विचार इस नीति के लक्ष्यों—जैसे कि 'सत्य', 'धैर्य', 'परोपकार' और 'संवाद'—को प्राप्त करने में सीधे तौर पर सहायक हैं। अतः कबीर का यह अध्ययन शैक्षिक नीतियों के क्रियान्वयन की दृष्टि से भी अत्यंत औचित्यपूर्ण है।

निष्कर्षतः (Summary of Rationale)

इस अध्ययन का औचित्य केवल एक मध्यकालीन कवि की प्रशंसा करना नहीं है, बल्कि कबीर की **'क्रांतिकारी और जीवंत मेधा'** का उपयोग आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सड़ांध को साफ करने के लिए करना है। यह शोध 'शिक्षित' (Educated) और 'सुशिक्षित' (Enlightened) के बीच के अंतर को स्पष्ट करने की दिशा में एक सार्थक कदम है।

1.6 शोध के उद्देश्य (Objective of the Study)

- कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना
- कबीर के काव्य में निहित प्रमुख शैक्षिक मूल्यों (जैसे- सत्य, आचरण की शुद्धता, गुरु की महत्ता) की पहचान करना।
- कबीर की शिक्षण पद्धति (अनुभवजन्य ज्ञान बनाम किताबी ज्ञान) का विश्लेषण करना।
- वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियों का अध्ययन करना।
- कबीर के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान समय में उपयोगिता और प्रासंगिकता सिद्ध करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

1.7 शोध परिकल्पनाएँ (Research Hypotheses)

एक विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए हम निम्नलिखित **मुख्य परिकल्पनाओं (H_n)** का निर्माण कर सकते हैं:

1.7.1 कबीर का अनुभवजन्य ज्ञान बनाम आधुनिक सूचनात्मक शिक्षा

- **परिकल्पना:** यदि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कबीर के 'अनुभवजन्य ज्ञान' (Experiential Learning) को प्राथमिकता दी जाए, तो विद्यार्थियों में केवल रटने की प्रवृत्ति कम होगी और व्यावहारिक कौशल (Practical Skills) तथा समस्या समाधान की क्षमता में वृद्धि होगी।
- **आधार:** कबीर की उक्ति "मसि कागद छुयौ नहीं" और "आँखन देखी" पर आधारित शिक्षा आज की 'स्किल-बेस्ड लर्निंग' का मूल आधार बन सकती है।

1.7.2 चारित्रिक विकास और नैतिक शुचिता

- **परिकल्पना:** कबीर के काव्य में निहित 'सत्य', 'प्रामाणिकता' और 'आचरण की शुद्धता' जैसे मूल्य आधुनिक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनैतिकता और चारित्रिक पतन को नियंत्रित करने में एक प्रभावी 'नैतिक नियामक' (Moral Regulator) की भूमिका निभा सकते हैं।
- **आधार:** "साँच बराबर तप नहीं" जैसे सूत्र छात्र के व्यक्तित्व को आंतरिक रूप से मजबूत करते हैं।

1.7.3 सामाजिक समरसता और समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)

- **परिकल्पना:** कबीर के काव्य में निहित जाति-पाति का खंडन और 'मानव मात्र की एकता' का संदेश, वर्तमान समय में बढ़ती सांप्रदायिक कट्टरता और सामाजिक ध्रुवीकरण को कम कर एक 'समतामूलक शैक्षिक वातावरण' तैयार करने में सक्षम है।
- **आधार:** "एकै जोति भया सबु जगु" का दर्शन विविधता में एकता को सुदृढ़ करता है।

1.7.4 मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-साक्षात्कार (Mental Well-being)

- **परिकल्पना:** कबीर द्वारा प्रतिपादित 'आत्म-मंथन' और 'सहज जीवन' के सिद्धांत, आधुनिक विद्यार्थियों में बढ़ते प्रतिस्पर्धी तनाव, अवसाद और कुंठा को दूर कर उन्हें मानसिक संतुलन और सकारात्मक जीवन दृष्टि प्रदान करने में सहायक होंगे।
- **आधार:** "बुरा जो देखन मैं चला..." का आत्म-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण छात्रों को बाह्य आलोचना के बजाय आत्म-सुधार की ओर प्रेरित करता है।

1.7.5 गुरु-शिष्य परंपरा का पुनरुद्धार

- **परिकल्पना:** यदि कबीर के 'गुरु-महिमा' संबंधी विचारों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-छात्र संबंधों में लागू किया जाए, तो शिक्षा में व्यापारिक दृष्टिकोण के स्थान पर सम्मान, अनुशासन और ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना पुनर्जीवित होगी।
- **आधार:** कबीर का मानना है कि गुरु ही वह कुम्हार है जो छात्र रूपी घड़े के भीतर हाथ का सहारा देकर बाहर से चोट (अनुशासन) मारकर उसे सुंदर आकार देता है।

1.7.6 सतत् जीवन शैली और पर्यावरण संरक्षण

- **परिकल्पना:** कबीर का 'अपरिग्रह' और 'संतोष' का दर्शन ("साईं इतना दीजिये...") वर्तमान युग के अनियंत्रित उपभोक्तावाद को चुनौती देता है और पारिस्थितिक संतुलन (Ecological Balance) बनाए रखने हेतु एक सादा जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण (Testing of Hypotheses)

इन परिकल्पनाओं का परीक्षण शोध के दौरान निम्नलिखित तरीकों से किया जाएगा:

1. कबीर के मूल पदों और साखियों का गहन विश्लेषण।
2. वर्तमान शिक्षा नीति (NEP 2020) के लक्ष्यों के साथ कबीर के विचारों की तुलना।
3. विभिन्न शैक्षिक विचारकों (जैसे गांधी, टैगोर, जे. कृष्णमूर्ति) के संदर्भ में कबीर की प्रासंगिकता का मूल्यांकन।

निष्कर्ष: ये परिकल्पनाएँ इस विश्वास पर आधारित हैं कि कबीर के विचार केवल 'साहित्यिक' नहीं हैं, बल्कि वे **'व्यावहारिक शैक्षिक तकनीक'** हैं जो आज की मृतप्राय होती शिक्षा व्यवस्था में प्राण फूँक सकते हैं।

1.8 शोध की प्रमुख मान्यताएँ/पूर्व धारणएँ (Research Assumptions)

1.8.1 कबीर का काव्य मात्र धार्मिक नहीं, शैक्षिक है

मान्यता: यह शोध इस मूल धारणा पर आधारित है कि कबीरदास केवल एक संत या भक्त नहीं थे, बल्कि वे एक 'लोक-शिक्षक' (People's Educator) थे।

विस्तार: माना जाता है कि कबीर की साखियों और पदों में जीवन जीने की जो कला सिखाई गई है, वह आधुनिक शिक्षा के 'मूल्य शिक्षा' (Value Education) पाठ्यक्रम का हिस्सा बनने की पूर्ण योग्यता रखती है।

1.8.2 अनुभवजन्य ज्ञान की श्रेष्ठता

मान्यता: शोध यह मानकर चलता है कि केवल किताबी ज्ञान (Rote Learning) व्यक्ति का पूर्ण विकास नहीं कर सकता।

विस्तार: कबीर की 'मसि कागद छूयो नहीं' वाली धारणा यह स्पष्ट करती है कि व्यावहारिक अनुभव और आत्म-चिंतन से प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी और प्रभावशाली होता है। यह शोध मानता है कि आज के कौशल आधारित युग (Skill-based era) में यह दृष्टिकोण अनिवार्य है।

1.8.3 नैतिक पतन का समाधान कबीर के दर्शन में निहित है

मान्यता: यह स्वीकार किया गया है कि वर्तमान पीढ़ी में बढ़ता मानसिक तनाव, असहनशीलता और अनैतिकता का कारण 'मूल्य-विहीन शिक्षा' है।

विस्तार: शोध की यह एक सुदृढ़ मान्यता है कि कबीर के सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और संतोष जैसे मूल्य आज के विद्यार्थियों को मानसिक शांति और चारित्रिक दृढ़ता प्रदान करने में सक्षम हैं।

1.8.4 कबीर की प्रासंगिकता कालातीत (Timeless) है

मान्यता: माना जाता है कि कबीर ने 15वीं शताब्दी में जिन सामाजिक बुराइयों (जातिवाद, अंधविश्वास, पाखंड) पर प्रहार किया था, वे आज भी किसी न किसी रूप में समाज और शिक्षा जगत में मौजूद हैं।

विस्तार: अतः, उनके विचार केवल इतिहास का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए एक 'जीवंत उपकरण' हैं।

1.8.5 गुरु-शिष्य परंपरा का आधुनिक स्वरूप

मान्यता: शोध यह मानता है कि आज के तकनीक-प्रधान युग में भी एक 'मार्गदर्शक' (Mentor) की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

विस्तार: कबीर के 'गुरु' की संकल्पना को यदि आधुनिक 'शिक्षक' के रूप में देखा जाए, तो यह शिक्षा के गिरते स्तर और छात्र-शिक्षक के बीच बढ़ती दूरी को कम करने में सहायक होगी।

मान्यताओं का तार्किक आधार

मान्यता का क्षेत्र तर्क

सामाजिक–कबीर की समानता की बात आज के समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का आधार है।

मनोवैज्ञानिक–'बुरा जो देखन मैं चला' जैसी सोच छात्रों में आत्म-आलोचना (Self-awareness) पैदा करती है।

दार्शनिक–'सहज समाधि' का विचार आधुनिक तनाव प्रबंधन (Stress Management) से जुड़ा है।

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन (Delimitation of the Study)

1.9.1 वैचारिक एवं विषयगत परिसीमांकन (Thematic Delimitation)

कबीर का काव्य बहुआयामी है (आध्यात्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, रहस्यवादी आदि)। यह शोध स्वयं को केवल निम्नलिखित सीमाओं तक सीमित रखेगा:

- यह शोध कबीर के केवल **'शैक्षिक दृष्टिकोण'** और **'मानवीय मूल्यों'** के विश्लेषण तक सीमित होगा।
- कबीर की 'साधना पद्धति' या 'हठयोग' जैसे जटिल दार्शनिक विषयों का अध्ययन केवल तभी किया जाएगा जब वे शिक्षा से सीधे संबंधित हों।
- मुख्य ध्यान 'चरित्र निर्माण', 'गुरु-शिष्य संबंध' और 'अनुभवजन्य ज्ञान' पर रहेगा।

1.9.2 स्रोत एवं सामग्री का परिसीमांकन (Source Delimitation)

कबीर के नाम पर बहुत सा साहित्य उपलब्ध है, जिनमें से कुछ प्रक्षिप्त (मिलावटी) भी माना जाता है। शोध की विश्वसनीयता हेतु इसे निम्नलिखित प्रामाणिक ग्रंथों तक सीमित रखा जाएगा:

- **कबीर ग्रंथावली** (संपादक: बाबू श्यामसुंदर दास)।
- **बीजक** (साखी, सबद, रमैनी)।
- **आदिग्रंथ (गुरु ग्रंथ साहिब)** में संकलित कबीर की बाणी।
- अन्य विद्वानों (जैसे हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह) द्वारा प्रमाणित संकलनों का ही उपयोग किया जाएगा।

1.9.3 कालखंड का परिसीमांकन (Temporal Delimitation)

- शोध में कबीर के **15वीं शताब्दी** के युग-परिवेश का अध्ययन किया जाएगा।
- इसकी तुलना **वर्तमान (21वीं सदी)** की आधुनिक शिक्षा प्रणाली (विशेषकर भारत के संदर्भ में) से की जाएगी।
- विश्लेषण का आधार मुख्य रूप से **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** और समकालीन वैश्विक शैक्षिक चुनौतियों तक सीमित रहेगा।

1.9.4 भौगोलिक परिसीमांकन (Geographical Delimitation)

- यद्यपि कबीर के विचार वैश्विक हैं, लेकिन यह शोध मुख्य रूप से **भारतीय समाज और भारतीय शिक्षा व्यवस्था** के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता की जांच करेगा।
- उदाहरणों और संदर्भों के लिए भारतीय ग्रामीण और शहरी शैक्षिक परिवेश को आधार बनाया जाएगा।

1.9.5 भाषाई परिसीमांकन (Linguistic Delimitation)

- शोध का माध्यम **हिंदी भाषा** होगा।
- कबीर की 'सधुक्कड़ी' या 'पंचमेल खिचड़ी' भाषा केप्रति केवल उन्हीं शब्दों और पदों का विश्लेषण किया जाएगा जो शैक्षिक संदेशों को स्पष्ट करते हों।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कबीर के विशाल साहित्य सागर में से केवल उन **'शैक्षिक मोतियों'** को चुनने तक सीमित है जो आज के यांत्रिक युग में विद्यार्थी के 'सर्वांगीण विकास' के लिए अनिवार्य हैं। यह शोध कबीर की भक्ति के बजाय उनके **'शिक्षक'** रूप को उजागर करने का प्रयास है।

1.10 शोध प्रविधि (Research Methodology)

1.10.1 शोध का प्रकार (Type of Research)

यह शोध **'विश्लेषणात्मक' (Analytical)** और **'तुलनात्मक' (Comparative)** प्रकृति का होगा। इसमें मध्यकालीन कबीर के विचारों का वर्तमान आधुनिक शिक्षा पद्धति और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में विश्लेषण किया गया।

1.10.2 आंकड़ों का संग्रह (Data Collection)

चूँकि यह एक साहित्यिक और दार्शनिक शोध है, इसलिए इसमें आंकड़ों का संग्रह **'द्वितीयक स्रोतों' (Secondary Sources)** के माध्यम से किया गया

इन्हें दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

क. प्राथमिक स्रोत (Primary Sources):

- कबीर की मूल रचनाएँ: **'बीजक'** (साखी, सबद, रमैनी)।
- **'कबीर ग्रंथावली'** (संपादक: श्यामसुंदर दास)।
- **'आदिग्रंथ'** (गुरु ग्रंथ साहिब) में संकलित कबीर की वाणी।

ख. द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):

- कबीर पर लिखी गई आलोचनात्मक पुस्तकें (जैसे- हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, डॉ. धर्मवीर, पुरुषोत्तम अग्रवाल आदि की कृतियाँ)।
- शिक्षाशास्त्र से संबंधित पुस्तकें और शोध पत्र (Journals)।
- भारत सरकार द्वारा जारी **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)** का दस्तावेज़।
- इंटरनेट संसाधन, ई-पुस्तकालय और प्रतिष्ठित साहित्यिक वेबसाइटें।

1.10.3 विश्लेषण की विधि (Method of Analysis)

संग्रहित सामग्री का विश्लेषण निम्नलिखित चरणों में किया गया:

1. **विषय-वस्तु विश्लेषण (Content Analysis):** कबीर के दोहों और पदों में से उन विशिष्ट शब्दों और प्रतीकों को चुना जाएगा जिनका संबंध शिक्षा, गुरु, अनुशासन, नैतिकता और ज्ञान से है।
2. **तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study):** कबीर के 'अनुभववाद' की तुलना वर्तमान 'प्रायोगिक शिक्षा' (Practical Education) से की गयी।
3. **समकालीन संदर्भ (Contextualization):** कबीर के सूत्रों को वर्तमान समाज की समस्याओं (जैसे भ्रष्टाचार, तनाव, कट्टरता) पर लागू करके उनके परिणामों का तार्किक आकलन किया गया।

1.10.4 शोध के उपकरण (Research Tools)

- **तुलनात्मक सारणियाँ (Comparative Tables):** कबीर के मूल्यों और आधुनिक शैक्षिक लक्ष्यों के बीच तुलना हेतु।
- **उद्धरण पद्धति:** शोध की पुष्टि के लिए कबीर के मूल दोहों का प्रमाण के रूप में प्रयोग।
- **पुस्तकालय पद्धति:** दिल्ली, वाराणसी या अन्य प्रतिष्ठित केंद्रों के पुस्तकालयों का उपयोग।

1.10.5 शोध की प्रक्रिया (Research Process)

शोध कार्य को व्यवस्थित करने के लिए इसे निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया गया है:

1. **साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature):** कबीर पर अब तक हुए शैक्षिक शोधों का अध्ययन करना ताकि दोहराव से बचा जा सके।
2. **तथ्य संकलन:** कबीर के काव्य से शैक्षिक मूल्यों का चयन।
3. **वर्गीकरण:** मूल्यों को नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक श्रेणियों में बांटना।
4. **व्याख्या एवं विवेचन:** वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी उपयोगिता सिद्ध करना।
5. **निष्कर्ष एवं सुझाव:** शोध के अंत में प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षा सुधार हेतु सुझाव देना

1.11 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता (Significance of the Study)

1.11.1 अकादमिक महत्व (Academic Significance)

यह शोध कबीरदास को केवल एक 'भक्त कवि' या 'समाज सुधारक' के रूप में नहीं, बल्कि एक **'महान शिक्षाशास्त्री' (Pedagogue)** के रूप में प्रतिष्ठित करेगा।

- **नया दृष्टिकोण:** कबीर के काव्य की 'शैक्षिक व्याख्या' हिंदी साहित्य और शिक्षाशास्त्र (Education) के अंतःविषय (Interdisciplinary) अध्ययन को एक नई दिशा प्रदान करेगी।

- **पाठ्यक्रम निर्माण में सहायक:** शोध के निष्कर्षों का उपयोग स्कूलों और कॉलेजों के नैतिक शिक्षा (Moral Education) पाठ्यक्रम को अधिक व्यावहारिक और प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है।

1.11.2 सामाजिक सार्थकता (Social Relevance)

आज का समाज बढ़ती असहिष्णुता और संकीर्णता से जूझ रहा है। ऐसे में कबीर का अध्ययन समाज के लिए 'संजीवनी' है:

- **सामाजिक एकता:** कबीर का "कबीरा खड़ा बज़ार में" वाला निर्भय व्यक्तित्व और सबका भला चाहने वाली दृष्टि सामाजिक समरसता को बढ़ावा देगी।
- **रूढ़ियों का उन्मूलन:** यह अध्ययन समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और पाखंडों के विरुद्ध एक तार्किक चेतना जागृत करने में सार्थक सिद्ध होगा।

1.11.3 विद्यार्थी और युवा वर्ग के लिए उपयोगिता

वर्तमान युवा पीढ़ी 'पहचान के संकट' (Identity Crisis) और अत्यधिक 'मानसिक दबाव' में है।

- **आत्म-विश्वास का संचार:** कबीर की 'निर्भयता' और 'स्वयं पर विश्वास' करने की सीख युवाओं को हीनभावना से मुक्त करेगी।
- **तनाव प्रबंधन:** कबीर का 'सहज जीवन' दर्शन छात्रों को गलाकाट प्रतिस्पर्धा के बीच मानसिक शांति और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

1.11.4 नैतिक एवं चारित्रिक सार्थकता (Moral and Character Building)

शिक्षा का अंतिम लक्ष्य 'चरित्र निर्माण' है।

- **मूल्यों का पुनरुद्धार:** यह शोध सत्य, ईमानदारी, सादगी और अपरिग्रह जैसे मूल्यों को आधुनिक जीवनशैली का हिस्सा बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।
- **भ्रष्टाचार मुक्त समाज:** यदि कबीर के 'शुद्ध आचरण' के संदेश को शिक्षा में स्थान मिलता है, तो यह भविष्य के नागरिक को भीतर से ईमानदार बनाने में सहायक होगा।

1.11.5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में महत्व

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति **'भारतीय ज्ञान परंपरा'** (Indian Knowledge System) को पुनर्जीवित करने पर बल देती है।

- **स्वदेशी मॉडल:** कबीर का दर्शन शिक्षा का एक ऐसा 'देसी और मौलिक मॉडल' प्रस्तुत करता है जो उधार लिए गए पश्चिमी मॉडलों की तुलना में भारतीय परिवेश के लिए अधिक प्रभावी है।
- **समग्र विकास:** नीति के 'होल्स्टिक डेवलपमेंट' (Holistic Development) के लक्ष्य को प्राप्त करने में कबीर का 'तन-मन-आत्मा' की शुद्धि का विचार अत्यंत सार्थक है।

निष्कर्ष (Importance in a Nutshell)

इस अध्ययन की सार्थकता इस तथ्य में है कि यह **'अतीत के अनुभव'** (कबीर की वाणी) को **'वर्तमान की चुनौतियों'** (मूल्यहीन शिक्षा) से जोड़कर **'भविष्य के समाधान'** (एक प्रबुद्ध समाज) पेश करता है। यह शोध सिद्ध करेगा कि कबीर 15वीं सदी के जितने थे, उससे कहीं अधिक वे 21वीं सदी के 'ग्लोबल' नागरिक के लिए अनिवार्य हैं।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 कबीर के दार्शनिक एवं सामाजिक पक्ष पर शास्त्रीय कार्य

कबीर के व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा को समझने के लिए हिंदी साहित्य के दिग्गज आलोचकों का कार्य प्राथमिक आधार है:

- **आचार्य रामचंद्र शुक्ल (हिंदी साहित्य का इतिहास):** शुक्ल जी ने कबीर को 'निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा' का प्रवर्तक माना। उन्होंने कबीर की 'उलटबाँसियों' और उनकी 'फटकार' पद्धति का विश्लेषण किया। यह सर्वेक्षण यह समझने में मदद करता है कि कबीर की शिक्षण शैली 'सुधारात्मक' और 'कठोर' (Disciplinarian) क्यों थी।

- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (कबीर):** द्विवेदी जी का कार्य इस शोध के लिए मील का पत्थर है। उन्होंने कबीर को "वाणी का डिक्टेटर" और "अक्खड़ समाज सुधारक" कहा। उन्होंने कबीर के 'मानवतावादी' और 'सहज' पक्ष को उजागर किया, जो आज की 'बाल-केंद्रित शिक्षा' के करीब है।
- **डॉ. नामवर सिंह (दूसरी परंपरा की खोज):** उन्होंने कबीर को स्थापित मान्यताओं के विरुद्ध एक विद्रोही स्वर के रूप में देखा। यह सर्वेक्षण कबीर के 'तार्किक एवं आलोचनात्मक चिंतन' (Critical Thinking) वाले शैक्षिक मूल्य को पुष्ट करता है।

2.2 कबीर के शैक्षिक एवं व्यावहारिक दर्शन पर विशिष्ट कार्य

विगत वर्षों में शिक्षाविदों ने कबीर को एक 'अनौपचारिक शिक्षक' के रूप में देखने का प्रयास किया है:

- **डॉ. गोविंद त्रिगुणायत (कबीर की विचारधारा):** इस ग्रंथ में कबीर के दार्शनिक सिद्धांतों के साथ-साथ उनके व्यावहारिक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है। यह सर्वेक्षण कबीर के 'आचरण की शुद्धता' संबंधी मूल्यों को समझने में सहायक है।

- **डॉ. धर्मवीर (कबीर के आलोचक):** दलित विमर्श के दृष्टिकोण से कबीर का अध्ययन करने वाले धर्मवीर जी ने कबीर को 'यथार्थवादी' माना। यह आज की 'समावेशी शिक्षा' (Inclusive Education) के लिए प्रासंगिक है।
- **पुरुषोत्तम अग्रवाल (अकथ कहानी प्रेम की):** इन्होंने कबीर को आधुनिकता के करीब खड़ा किया है। यह कार्य सिद्ध करता है कि कबीर के मूल्य केवल मध्यकाल के लिए नहीं, बल्कि आधुनिक नागरिक बोध के लिए भी अनिवार्य हैं।

2.3 आधुनिक शैक्षिक नीतियाँ एवं मूल्यपरक शिक्षा संबंधी साहित्य

कबीर के मूल्यों की तुलना वर्तमान व्यवस्था से करने के लिए निम्नलिखित दस्तावेजों का अध्ययन अनिवार्य है:

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020):** यह नीति 'भारतीय ज्ञान परंपरा' और 'सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा' जैसे संवैधानिक मूल्यों की बात करती है। इस साहित्य का सर्वेक्षण यह दिखाता है कि कबीर के शैक्षिक विचार सरकार के वर्तमान लक्ष्यों के कितने अनुकूल हैं।
- **यूनेस्को (UNESCO - Delors Report):** शिक्षा के चार स्तंभों का अध्ययन कबीर के "मानुस जनम" की सार्थकता और "सबै भूमि गोपाल की" वाले वैश्विक बंधुत्व के मूल्यों से मेल खाता है।

2.4 शोध पत्रों एवं पत्रिकाओं का सर्वेक्षण

- हिंदी अनुशीलन, शोध सरिता, और वाक् जैसी प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का सर्वेक्षण यह बताता है कि कबीर के ‘गुरु-शिष्य संबंध’ और ‘नैतिक चेतना’ पर हाल के वर्षों में किस प्रकार के नए आयाम जोड़े गए हैं।

2.5 कबीर से संबंधित कतिपय पूर्ववर्ती शोध कार्य

भावना वशिष्ठ (2017) ने “शैक्षिक उन्नयन एवं जीवन मूल्यों के विकास के संत कबीर के योगदान का शोधपरक अनुशीलन” शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

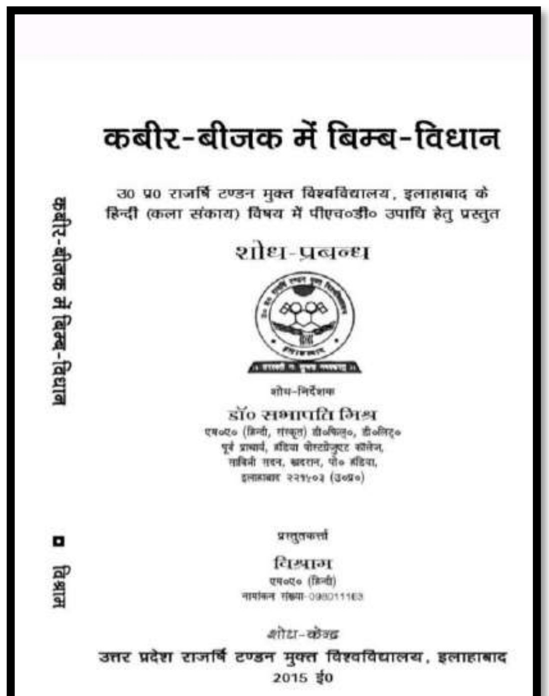
- कबीर ने शुष्क पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर अनुभव-आधारित, जीवन-संबद्ध शिक्षा को महत्त्व दिया; उनकी साखियाँ और दोहे जीवन के वास्तविक संघर्षों से जुड़े हैं, जो शिक्षार्थी को चिंतन और आत्मबोध की ओर ले जाते हैं।


JJT/2k9/EDU/0013
JJT/2k9/ EDU/546

- कबीर ने आध्यात्मिक ज्ञान को शिक्षा का मूल उद्देश्य माना और इसे नैतिक विकास (सत्य, अहिंसा, दया, दयालुता) से जोड़ा, जिससे व्यक्ति केवल जानकार नहीं, बल्कि चरित्रवान बने।
- कबीर ने जाति-धर्म-लिंग आधारित भेदभाव का खुलकर विरोध किया और समानता पर आधारित समाज की व्यवस्था को शिक्षा का नैतिक लक्ष्य बताया; इससे शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक न्याय और समरसता का आधार बना।
- कबीर ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं, बल्कि समाज सुधार और मानवकल्याण का साधन बताया; उनकी शिक्षाएँ अंधविश्वास, पाखंड, जातिवाद आदि को तोड़कर नवीन नैतिक चेतना जगाती हैं।
- कबीर ने भौतिक आडंबर व मूर्ति-पूजा के स्थान पर अंतर-मन में ईश्वर की खोज पर बल दिया, जो शिक्षार्थी को आत्म-नियंत्रण, आत्म-चिंतन और आत्म-अनुशासन की ओर अग्रसर करता है।
- कबीर के दोहे सत्य, अहिंसा, सदाचार, करुणा और विनम्रता जैसे जीवन-मूल्यों को जीवन-दृष्टि का आधार बनाते हैं, जिन्हें आधुनिक शिक्षा में “वैल्यू-एजुकेशन” के रूप में उपयोगी माना जा सकता है।
- कबीर ने हिंदू-मुस्लिम धर्म-संस्कृति के समन्वय से उत्पन्न एक ऐसी व्यापक भावना का प्रतिपादन किया जो धार्मिक अहंकार और कट्टरता का विरोध करती है; इससे शैक्षिक संस्थानों में बहुसांस्कृतिक सहिष्णुता का विकास संभव है।
- कबीर ने सरल, ईमानदार और निष्काम जीवन-शैली को उच्च मूल्य के रूप में स्थापित किया; यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के व्यक्तित्व-विकास में ईमानदारी, नम्रता और स्वाभिमान उत्पन्न करता है।

- कबीर की वाणी में समाज के प्रति दैनिक जिम्मेदारी, अन्याय के प्रति आवाज़ उठाना और दलित-शोषितों के प्रति संवेदनशीलता विद्यमान है, जो आधुनिक शिक्षा में “नागरिक शिक्षा” (civic education) के लिए सबल शोध-आधार उपलब्ध कराती है।
- कबीर के विचार आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मूल्य-शून्य, केवल डिग्री-उन्मुख शिक्षा के विरूद्ध एक विकल्पस्वरूप कार्य करते हैं; उनके उपदेशों को आधुनिक पाठ्यक्रम, शिक्षक-प्रशिक्षण और छात्र-समूह चर्चाओं में सम्मिलित करने से शैक्षिक उन्नयन और जीवन मूल्यों के विकास को नवीन दिशा मिल सकती है।

विश्राम (2015) ने “कबीर-बीजक में बिम्ब-विधान” शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–


कबीर-बीजक में बिम्ब-विधान

उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के हिन्दी (कला संकाय) विषय में पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोध-निर्देशक

डॉ० सभापति मिश्र

प्रस्तुतकर्ता

विश्राम

एम०ए० (हिन्दी)

शोध-केन्द्र

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2015 ई०

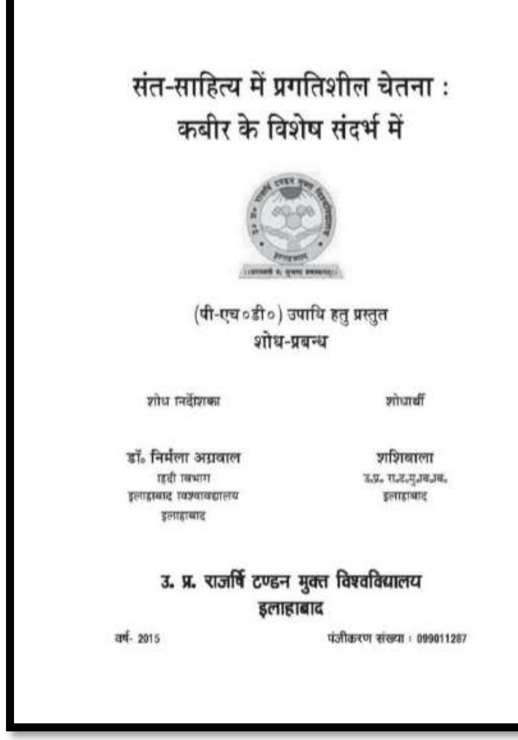
कबीर-बीजक में बिम्ब-विधान ◘ विश्राम

- बीजक की साखियों, रमैनियों और शब्दों में आत्मा-परमात्मा, शरीर-सागर, जीव-लहर, ज्योति-दीप जैसे आध्यात्मिक प्रतीक बार-बार आते हैं, जो अमूर्त तत्त्वों को दृश्य बिम्बों में उतारते हैं।
- कबीर ने घर, चूल्हा, चक्की, दीप, ताल, बांसुरी, धुआँ-आग, जीव-जोहरी आदि दैनिक जीवन की वस्तुओं को आध्यात्मिक रूपकों में बदल दिया, जिससे बीजक का बिम्ब-विधान अत्यंत लोकनिष्ठ और सुबोध बनता है।
- कबीर ने उलटी वाणी/उलटी बुद्धि की शैली में ऐसे बिम्ब दिए हैं जो प्राकृतिक व्यवस्था को उलटकर दिखाते हैं (जैसे: “ऊँची धूल, नीचे कंचन”), जिससे भ्रम-निरास और अहं-मोह का विषय बिम्ब-माध्यम से विस्तृत होता है।
- बीजक में देह = घर, नाड़ियाँ = नदियाँ, चक्र = अंबर, श्वास = जल-धारा, ब्रह्म-ध्यान = घर के अंदर ही ढूँढने योग्य रहस्य जैसे बिम्ब-प्रयोग योग-आधारित उपदेश को दृश्य और स्पष्ट बनाते हैं।

- पंडित, काज़ी, योगी, जोगी, लाला, बाबा आदि के लिए व्यंग्यात्मक बिम्ब (चोर हरामखोर, बंदर की जात, खूँट बंधा मोर आदि) आध्यात्मिकता के नाम पर छिपी धार्मिक दिखावा और भ्रष्ट आचरण को निखारते हैं।
- बीजक में जीव = लहर, परमात्मा = सागर, सर्वत्र विद्यमान एकत्व = आकाश-से-भरा जल जैसे बिम्ब अद्वैत-दृष्टि और धर्मों की एकता को दृश्यात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं।
- माया, विषय-वासना, धन-संचय, प्रतिष्ठा आदि को "मोहनी माया", "विष भरा घड़ा", "मधुर-सा विष" जैसे विरोधाभासी बिम्बों से चित्रित किया गया है, जिससे उसकी आकर्षक और विनाशक प्रकृति स्पष्ट होती है।
- सत्संग, सज्जन-मेल, सद्गुरु की शरण जैसे विषयों के लिए ** "साधु-संग मत टरना, एक अकेला बाँस नहीं", "साधु-संग जहाँ बैठा, वहीं ध्यान बन गया"** जैसे सरल बिम्ब प्रयुक्त हैं, जो मानसिक और नैतिक विकास की शर्त को दृश्यता प्रदान करते हैं।
- समय, मृत्यु, अनित्यता के लिए "काल का कोटा", "मोर-मच्छली-माला", "दीप-तिलक", "सूरज ढलना" आदि बिम्ब बार-बार आते हैं, जो व्यक्ति को जीवन-मूल्यों और आत्म-साधना की ओर धकेलते हैं।
- बीजक में जीव = लहर, परमात्मा = सागर, सर्वत्र विद्यमान एकत्व = आकाश-से-भरा जल जैसे बिम्ब अद्वैत-दृष्टि और धर्मों की एकता को दृश्यात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

शशिबाला (2015) ने "संत-साहित्य में प्रगतिशील चेतना: कबीर के विशेष संदर्भ में" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

- "प्रगतिशील चेतना" से अभिप्राय ऐसी मानस-वृत्ति से है जो अंधविश्वास, अन्याय, जातिवाद और पुरानी परंपराओं के खिलाफ आवाज़ उठाती है तथा समाज को न्याय, बराबरी और मानवता के पथ पर आगे बढ़ाना चाहती है; यह संत-साहित्य में भी दिखाई देती है।
- कबीर की वाणी में मानवता ही सर्वोच्च मूल्य है; वे "सब रतन जात है एक जात" जैसी पंक्तियों द्वारा जाति-भेद का खंडन करते हैं और सबको ईश्वर की दृष्टि में समान बताते हैं।
- कबीर संत-साहित्य में ब्राह्मणवाद, जाति-प्रथा और वर्ण आधारित विभेदन की कड़ी आलोचना करते हैं, जिससे उनकी चेतना स्पष्ट रूप से प्रगतिशील हो जाती है।



संत-साहित्य में प्रगतिशील चेतना :
कबीर के विशेष संदर्भ में

(पी-एच०डी०) उपाधि हतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

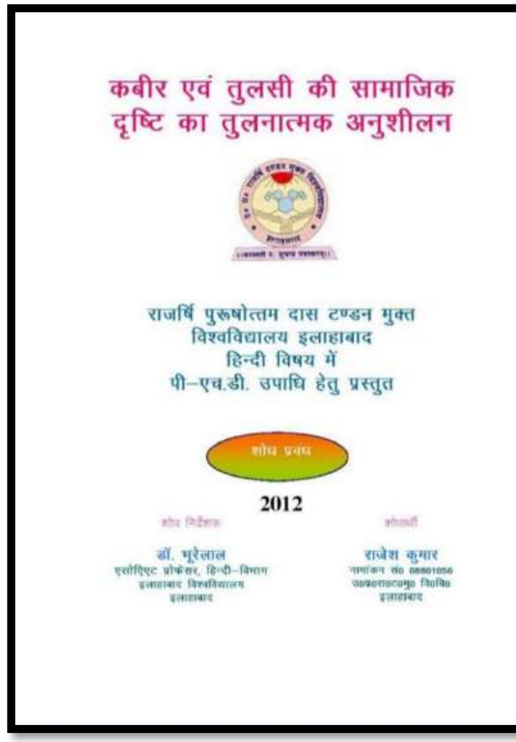
शोध निर्देशिका	शोधार्थी
डॉ॰ निर्मला अग्रवाल हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद	शशिबाला उ.प्र. रा.ट.मु.वि.वि. इलाहाबाद

उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

वर्ष- 2015 पंजीकरण संख्या : 099011287

- कबीर मंदिर-मस्जिद, तीर्थ-यात्रा, जटा, तिलक आदि बाह्य रूपों के महत्त्व को खंडित करते हैं और ईमानदार, निष्काम और सच्चे मन की उपासना को ही सही धर्म बताते हैं, जो प्रगतिशील चेतना का ही अभिन्न अंग है।
- कबीर के द्वारा गढ़ी गई संत-परंपरा न केवल आध्यात्मिक ज्ञान का साधन है, बल्कि जाति, धर्म और लिंग आधारित असमानता के विरुद्ध आंदोलन का भी माध्यम रही है।
- कबीर के पदों में शोषक-शोषित विभाजन, धन-लिप्सा, ताकतवर वर्ग की घमंडी मानसिकता और निर्बल वर्ग के दुख पर गहरी तर्कपूर्ण आलोचना मिलती है, जो उनकी प्रगतिशील सामाजिक चेतना को प्रकट करती है।
- कबीर राजसी और विद्वत्तापूर्ण भाषा के स्थान पर लोक-भाषा और सामान्य जन की समझ में आने वाले उदाहरणों को अपनाकर प्रगतिशील चेतना को नीचे की जनता तक पहुँचाते हैं, जिससे उनका साहित्य लोकतंत्रीय और जन-केंद्रित बन जाता है।
- कबीर का निर्गुण भक्ति-दर्शन रूपों, मूर्तियों और संस्थागत ढाँचों से ऊपर उठाकर आंतरिक अनुभव और नैतिक जीवन को महत्त्व देता है, जो रूढ़िमुक्त और तर्कसंगत चेतना का संकेत है।
- कबीर के अलावा अन्य संत-साहित्य में भी “प्रगतिशील चेतना” का तत्त्व इस रूप में मिलता है कि इसमें जाति, धर्म, लिंग और अन्य विभेदक भावनाओं को तोड़कर “मानव मात्र” को देखने का आहवान होता है, जिसमें कबीर के विचार केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।
- आज के समाज में भी कबीर के प्रगतिशील प्रवृत्ति वाले संदेश अन्याय, जातिवाद, धर्माधारित असहिष्णुता और पारंपरिक रूढ़ि-संस्कृति के विरुद्ध जागरूकता जगाने के लिए प्रासंगिक बने हुए हैं; इसीलिए उनकी “संत साहित्य में प्रगतिशील चेतना” आधुनिक भारतीय विचारधारा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

राजेश कुमार (2012) ने “कबीर एवं तुलसी की सामाजिक दृष्टि का तुलनात्मक अनुशीलन” शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–



- कबीर की सामाजिक दृष्टि विद्रोही, रूढ़ि-विरोधी और समानतापरक है, जबकि तुलसीदास की दृष्टि व्यवस्था-पुष्ट, मर्यादावादी और रामराज्य के आदर्श पर आधारित है।
- कबीर “धर्म जाति न पूछी” जैसे विचारों के माध्यम से जाति-भेद और वर्ण-प्रणाली का खंडन करते हैं, जबकि तुलसीदास समाज-व्यवस्था को आदर्श “रामराज्य” के रूप में देखते हैं, जिसमें वर्ण-आधारित व्यवस्था को सुधारा हुआ माना जाता है।
- कबीर मंदिर-मस्जिद, तीर्थ-यात्रा, मूर्तिपूजा और बाह्य क्रिया-कलापों की तीव्र आलोचना करते हैं, जबकि तुलसीदास सगुण भक्ति, राम-कथा और धार्मिक व्यवस्था के रूप में धर्म को व्यवस्था और सीमा का दायित्व देते हैं।
- कबीर की कविता में सामाजिक विद्रोह और प्रतिरोध की आवाज़ प्रधान है, जबकि तुलसी “रामराज्य” के आदर्श के माध्यम से समाज को सुधारने और व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं, न कि व्यवस्था को ध्वंसित करने का।
- कबीर शोषक-शोषित विभाजन, धन-लिप्सा और ताकतवर वर्ग की घमंडी मानसिकता की सीधे आलोचना करते हैं, जबकि तुलसी राजा-प्रजा के नैतिक संबंध को ज़ोर देकर राजा के “प्रजा-पालन” के कर्तव्य को रेखांकित करते हैं।
- कबीर “सब रतन जात है एक जात” जैसे विचारों से मानवता और समानता को केंद्र में रखते हैं, जबकि तुलसी “मानव-प्रेम” और “राम-भक्ति” के भीतर ही सामाजिक व्यवस्था को स्थिर व नैतिक रखना चाहते हैं।
- कबीर के सामाजिक दृष्टिकोण में आम आदमी, निर्बल वर्ग, श्रमजीवी और दबी हुई जनता की वाणी अधिक उभरती है; तुलसी के दृष्टिकोण में राजकुमार, राजा, ब्राह्मण-समाज और आदर्श राज्य-व्यवस्था का चित्रण अधिक प्रमुख रहता है।

- कबीर संस्थागत ढाँचों के खिलाफ आंदोलन-स्वरूप जागरूकता फैलाते हैं, जबकि तुलसीदास रामराज्य, राजा-प्रजा संबंध और वर्ण-व्यवस्था के आदर्श को बनाए रखते हुए समाज को संतुलित और धार्मिक दिशा देने वाले संस्थागत उन्नायक के रूप में काम करते हैं।
- कबीर सरल, तीखी, व्यंग्यात्मक और चुनौतीपूर्ण भाषा के माध्यम से सामाजिक बुराइयों पर हमला करते हैं, जबकि तुलसी की भाषा शांत, निर्देशात्मक, उपदेश-प्रधान और आदर्श-चित्रण में लगी हुई है।
- कबीर की सामाजिक दृष्टि आधुनिक युग के लिए जाति-विमुक्त, रूढ़ि-विरोधी और नागरिक-केंद्रित समाज के आदर्श के रूप में प्रासंगिक है, जबकि तुलसीदास की दृष्टि "स्थायी नैतिक-राजनीतिक व्यवस्था" और रामराज्य के आदर्श से जुड़े सामाजिक-राजनीतिक चिंतन के लिए प्रासंगिक मानी जाती है।

प्रा. सौ. त्रिवेणी सोनोने (2005) ने "सन्त कबीर और सन्त तुकाराम के सामाजिक दर्शन का तुलनात्मक अनुशीलन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

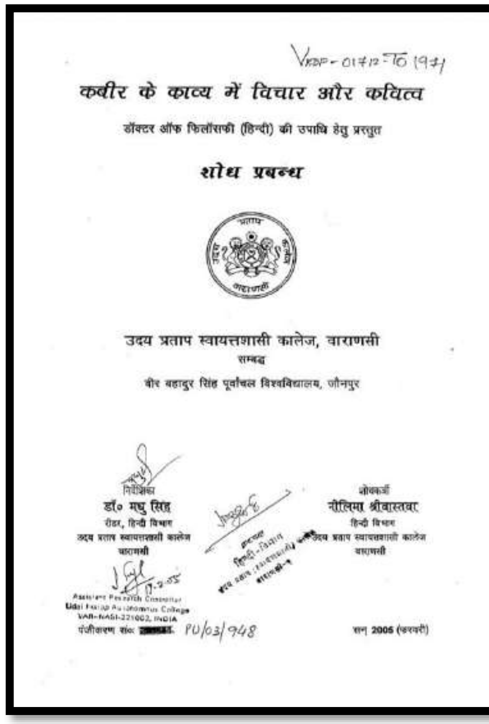
- कबीर और तुकाराम दोनों का सामाजिक दर्शन मानव-कल्याण, मानव-मूल्य और मानव समानता पर केंद्रित है; वे धर्म, जाति और लिंग आधारित विभेदन से ऊपर "सामान्य मानव" को देखते हैं।
- कबीर और तुकाराम दोनों ने जाति-भेद, धर्म-आधारित असहिष्णुता और धार्मिक कट्टरता का खंडन किया है तथा "ब्राह्मण-अधिकारवाद" जैसी संस्थागत विषमताओं के खिलाफ आवाज़ उठाई है।
- दोनों संत बाह्य रूपक्रियाओं, मूर्ति-पूजा, चमत्कारवाद, तीर्थ-यात्रा और धार्मिक दिखावे की तीव्र आलोचना करते हैं और भक्ति को हृदय-से जुड़ा हुआ, नैतिक और आंतरिक अनुभव बताते हैं।
- कबीर निर्गुण भक्ति पर अधिक जोर देते हैं, जबकि तुकाराम बिट्ठल-रूपी सगुण भक्ति को भी स्वीकारते हैं, लेकिन दोनों का उद्देश्य मानवीय मूल्यों की स्थापना और धार्मिक भ्रमों से मुक्त जीवन-दृष्टि बनाना है।
- दोनों एक "समरस" और समानाधिकारी समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ जाति, धर्म और धन-वर्ग के आधार पर कोई भेद न हो; कबीर अधिक सीधे युक्तिवादी और तीक्ष्ण भाषा में यह आह्वान करते हैं।

- कबीर की चेतना अधिक विद्रोही, तीखी और आक्रामक है, जबकि तुकाराम विनम्र, प्रार्थनात्मक और भावुक शैली में समाज की विद्रूपताओं को उजागर करते हैं, इसी में उनके दर्शन का तुलनात्मक अंतर दिखता है।
- दोनों संत शोषित, गरीब, निर्बल और दलित वर्ग की पीड़ा को समझते हैं तथा इनकी रचनाओं में शोषण-विरोध, धन-लालच और राजनीतिक-सामाजिक अन्याय की ओर ध्यान खींचा गया है।



- कबीर और तुकाराम दोनों समाज-सुधार को व्यक्ति-सुधार के माध्यम से देखते हैं; व्यक्ति के चरित्र, सच्चाई, नैतिकता और सेवा-भाव से ही एक सुंदर और गरिमामय समाज निर्मित हो सकता है।
- कबीर दोहे, साखियाँ और तीखे विवादात्मक विचारों के माध्यम से समाज को चुनौती देते हैं, जबकि तुकाराम की अभंग-परंपरा भक्तिमय, लोकप्रिय और गीत-स्वरूप भाषा में समाज को जागरूक करती है, जिससे दोनों की सामाजिक चेतना अलग शैली में अभिव्यक्त होती है।
- कबीर और तुकाराम दोनों का सामाजिक दर्शन आज भी सामाजिक समरसता, धर्म-अलगाव, जाति-भेद और आध्यात्मिक असली भक्ति के लिए प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं; इसीलिए उनका तुलनात्मक अध्ययन आधुनिक भारतीय सामाजिक-धार्मिक चिंतन के लिए विशेष महत्त्व रखता है

नीलिमा श्रीवास्तव (2005) ने "कबीर के काव्य में विचार और कवित्व" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि –



VKDP-01712-TO 1971

कबीर के काव्य में विचार और कवित्व

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज, वाराणसी

सम्बद्ध

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

निर्देशिका
डॉ० मधु सिंह
रीडर, हिन्दी विभाग
उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज
वाराणसी

शोधकर्त्री
नीलिमा श्रीवास्तव
हिन्दी विभाग
उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज
वाराणसी

Assistant Research Controller
Udai Pratap Autonomous College
VARANASI-221002, INDIA

पंजीकरण सं० [redacted] PU/03/948

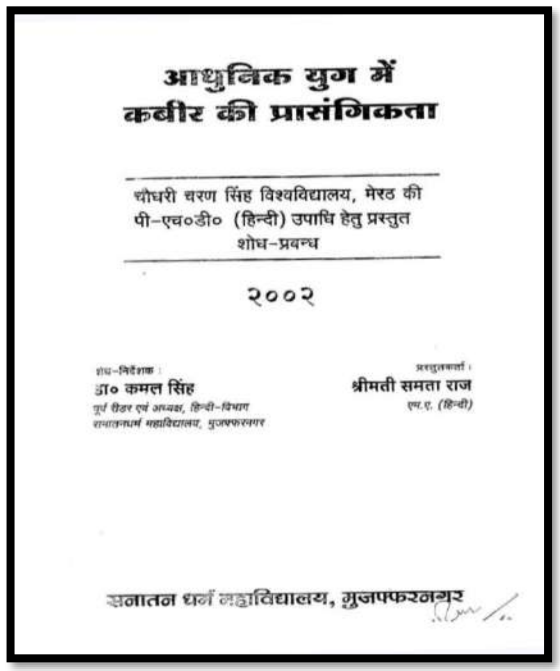
सन् 2005 (फरवरी)

- कबीर के लिए प्रकृति केवल बाहरी वातावरण नहीं थी, बल्कि वह परमात्मा (ब्रह्म) और आत्मा (जीव) के मिलन का एक गहरा आध्यात्मिक और काव्यात्मक रूपक थी।
- कबीर की भक्ति में ईश्वर के प्रति समर्पण केवल दासता का नहीं, बल्कि एक गहरी आत्मीयता और प्रेम का है, जहाँ आत्मा स्वयं को परमात्मा की अर्धांगिनी मानकर पूर्ण एकाकार होना चाहती है।
- कबीर की दृष्टि में मोक्ष या ईश्वर प्राप्ति कोई कठिन क्रिया नहीं, बल्कि प्रेम की वह उच्चतम अवस्था है जहाँ भक्त (आत्मा) अपने आराध्य (परमात्मा) के साथ विवाह के बंधन जैसी पवित्रता और आत्मीयता में बंध जाता है। इसी को कबीर ने "अविचल पुरुष भतार" (अविनाशी पति) के रूप में परिभाषित किया है।
- ईश्वर प्राप्ति का मार्ग उस तीव्र विरह से होकर गुजरता है, जहाँ जीवात्मा सांसारिक मोहमाया को त्यागकर केवल अपने आराध्य की स्मृति में एकाकार हो जाती है।
- कबीर का अध्यात्म कोई शुष्क ज्ञान नहीं, बल्कि एक जीवंत अनुभव है जहाँ विराग की अग्नि ही अंततः आत्मा को परमात्मा के निकट ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती हैं।
- कबीर की 'उलटबाँसियाँ' केवल मनोरंजन या शब्द-जाल नहीं थीं, बल्कि वे जिज्ञासा उत्पन्न करने की एक शैक्षिक प्रविधि (Pedagogical Technique) थीं, ताकि मनुष्य अपनी जड़ता को छोड़कर सत्य की खोज की ओर प्रवृत्त हो सके।
- कबीर केवल एक कवि नहीं थे, बल्कि एक क्रांतिकारी समाज सुधारक थे। उन्होंने उलटबाँसियों जैसी कठिन काव्य शैली का प्रयोग भी केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि समाज की चेतना को झकझोरने और उसे सत्य व भाईचारे की ओर ले जाने के लिए किया था।
- कबीर का काव्य केवल भक्ति नहीं, बल्कि एक व्यवहारपरक शिक्षा है। वे मनुष्य को बाहरी आडंबरों को छोड़कर अपने भीतर स्थित उस परमात्मा को पहचानने की प्रेरणा देते हैं जो प्रेम, समानता और ज्ञान का आधार है।

- कबीर एक ऐसे क्रांतिकारी कवि और शिक्षक है, जिन्होंने प्रेम और ज्ञान के माध्यम से समाज की बुराइयों को दूर करने और मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप (ब्रह्म) से परिचित कराने का जीवनपर्यंत प्रयास किया।

श्रीमती समता राज (2002) ने "आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि –

- कबीर "ऊँच-नीच", जाति-भेद और छुआ-छूत की आलोचना करते हैं; आज भी जातिवाद, धर्म-आधारित असहिष्णुता और सामाजिक विभाजन के बीच उनकी समानता-वाणी अत्यंत प्रासंगिक रहती है।
- कबीर ने धर्म-आधारित विद्वेष और विभाजन को ठीक नहीं माना; आधुनिक युग में बढ़ते धार्मिक आतंक, नफरत और दंगों के बीच उनका "सब रतन जात है एक जात" जैसा आदर्श एकता और सौहार्द के लिए प्रेरक बना हुआ है।
- आज भी समाज में धर्म-पाखंड, टोना-टोटका, चुनौतीपूर्ण रूढ़ियाँ और अन्यायपूर्ण रीति-रिवाज व्याप्त हैं; कबीर की तीखी आलोचना आधुनिक विज्ञान-युग में भी रूढ़िमुक्त और तर्कसंगत चेतना के लिए प्रासंगिक है।


आधुनिक युग में
कबीर की प्रासंगिकता

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की
पी–एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध

२००२

शोध–निर्देशक :
डा० कमल सिंह

प्रस्तुतकर्ता :
श्रीमती समता राज
एम.ए. (हिन्दी)

सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर

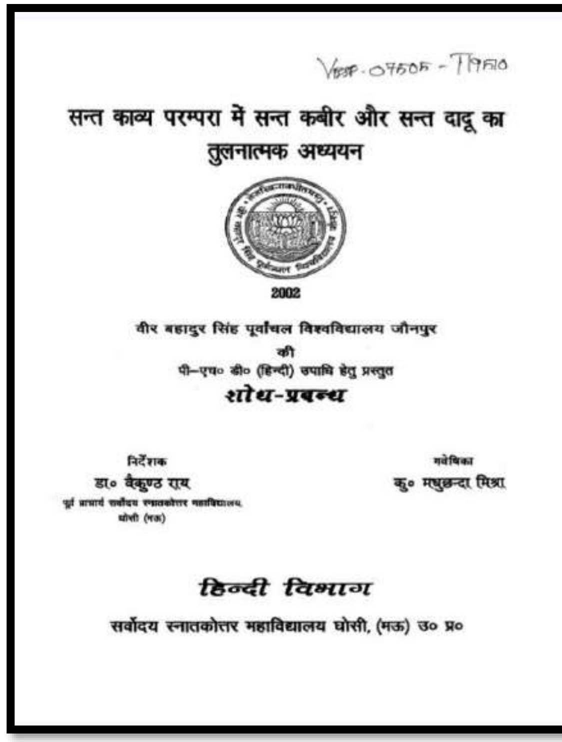
- कबीर सच्चाई, नैतिकता और आंतरिक शुद्धता को बाह्य धार्मिकता से ऊपर बताते हैं; आज के नैतिक मूल्य-विघटन, घूस, भ्रष्टाचार और नैतिक अंधकार में उनके विचार एक नैतिक दिशानिर्देश के रूप में काम करते हैं।
- विज्ञान-युग में व्यक्ति भागदौड़, तनाव और अंतर्मुख दुख से जूझ रहा है; कबीर की निर्गुण भक्ति, आंतरिक आत्म-साधना और ईश्वर-अनुभूति का चिंतन व्यक्ति को आध्यात्मिक शांति और तृप्ति देने में प्रासंगिक माना जाता है।

- कबीर ने ईश्वर-भक्ति को "सेवा करो, नाम जपो" के रूप में जोड़ा; आधुनिक युग में भी गरीब, शोषित और निर्बल की सेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवता-केंद्रित जीवन के लिए उनका यह संदेश प्रासंगिक है।
- आज का व्यक्ति अधिक निर्माण-प्रधान और संवेदनाहीन बन रहा है, जहाँ रिश्ते भी व्यावसायिक हो गए हैं; कबीर की मानवीय, सहानुभूतिपूर्ण और समरस दृष्टि आधुनिक मानवता को वापस लाने के लिए प्रासंगिक रहती है।
- कबीर व्यक्तिवाद को नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ते हैं; आज के अति-व्यक्तिवादी युग में उनकी यह दृष्टि व्यक्ति-स्वतंत्रता और सामाजिक बाध्यता के बीच संतुलन बनाने में सहायक रहती है।
- कबीर अन्याय, शोषण और ताकतवर वर्ग के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं; आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में नागरिक अधिकार, न्याय और जागरूकता-आंदोलनों के लिए उनका विद्रोही दृष्टिकोण एक मार्गदर्शक शक्ति बना हुआ है।
- कबीर के दोहे, साखियाँ और पद आज भी आम जनता की जुबान पर हैं; उनकी सरल, लोक-भाषा में रचित वाणी आधुनिक शिक्षा, मीडिया और सामाजिक कार्यक्रमों में प्रेरणास्त्रोत और शिक्षा-साधन के रूप में प्रासंगिक बनी हुई है।

कु० मधुछन्दा मिश्रा (2002) ने "सन्त काव्य परम्परा में सन्त कबीर और सन्त दादू का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

- कबीर कठोरता से समाज सुधार का प्रयास करते हैं, वहीं दादू अपनी मृदुलता और जादुई स्पर्श से लोगों का मार्गदर्शन करते हैं। समाज के लिए इन दोनों ही संतों का योगदान अविस्मरणीय और अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- संत दादू केवल कबीर के अनुयायी मात्र नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपनी विद्वान् शिष्य परंपरा और अडिग निर्गुण साधना के बल पर भारतीय भक्ति परंपरा में अपना एक स्वतंत्र और गरिमामय स्थान बनाया।
- कबीर की रचनाएँ सामाजिक संघर्ष और शास्त्रीय चुनौती के कारण अधिक सुगठित थीं, वहीं दादू की रचनाएँ आत्मीयता और सरलता पर आधारित थीं। विद्वानों के विशिष्ट दृष्टिकोण के कारण कबीर को अधिक ख्याति प्राप्त हुई।
- कबीर ने समाज को सुधारने के लिए 'फटकार' और 'कठोरता' का मार्ग चुना, वहीं दादू दयाल ने बदलती परिस्थितियों को देखते हुए 'मृदुलता' और 'सहजता' से निर्गुण भक्ति का संरक्षण किया।

- कबीर का सामना एक अशांत और धार्मिक रूप से बिखरे हुए समाज से था, जिसके कारण उनकी शैली आक्रामक और सुधारात्मक थी। वहीं दादू की शैली अधिक सहज और सहयोगात्मक थी।
- सामाजिक और धार्मिक स्थिरता के कारण संत दादू की वाणी कबीर की तुलना में अधिक कोमल और मधुर रही, जबकि कबीर को अपने अनुयायियों को बचाए रखने के लिए कठोरता अपनानी पड़ी।
- संत दादू ने कबीर के वैचारिक उत्तराधिकार को संभाला तो सही, लेकिन उसे बहुत ही कोमल, अनुरोधपूर्ण और आत्मिक सरल शैली में प्रस्तुत किया, जिससे वह जनमानस के हृदय में गहरे तक उतर सकी।


Vbsp-07505-T19510

सन्त काव्य परम्परा में सन्त कबीर और सन्त दादू का तुलनात्मक अध्ययन

2002

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर
की
पी–एच० डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

निर्देशक	गवेषिका
डा० वैकुण्ठ राय	कु० मधुछन्दा मिश्रा
पूर्व आचार्य सर्वोदय स्नातकोत्तर महाविद्यालय घोसी (मऊ)	

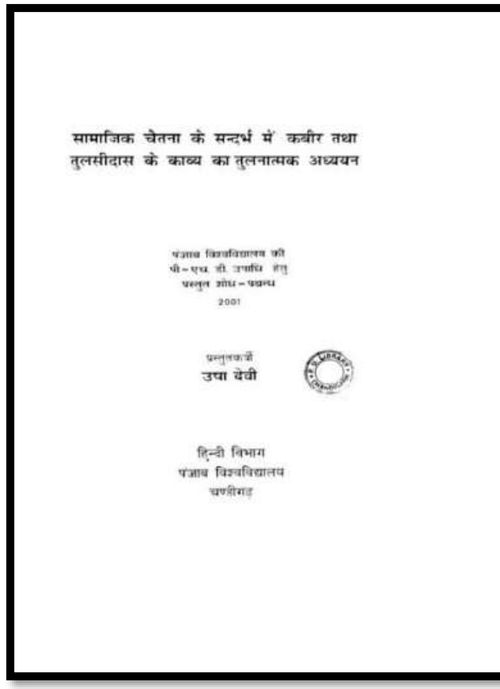
हिन्दी विभाग
सर्वोदय स्नातकोत्तर महाविद्यालय घोसी, (मऊ) उ० प्र०

- कबीर और दादू दोनों ने लोक भाषा के माध्यम से अपनी बात कही, लेकिन उनके पारिवारिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के ऐतिहासिक तथ्यों में काफी भिन्नता और धुंधलापन है।
- कबीर और दादू के समय और शैली में अंतर रहा हो, लेकिन उनके जीवन का उद्देश्य, उनकी भक्ति और समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण पूरी तरह समान और मानवतावादी था।
- दोनों संतों ने बाहय आडंबरों और कठिन शारीरिक साधनाओं को त्यागकर आंतरिक प्रेम और सहज भक्ति के मार्ग को सर्वोपरि माना।

उषा देवी (2001) ने "सामाजिक चेतना के सन्दर्भ में कबीर तथा तुलसीदास के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

- तुलसीदास: सामाजिक चेतना का उपयोग लोक-मंगल, नैतिक सुधार और राम-राज्य की आदर्श-व्यवस्था स्थापित करने के लिए।

- कबीर: जाति, ऊँच-नीच, छुआ-छूत आदि को निरर्थक और धर्म-विरोधी बताकर इनका खुला खंडन करते हैं।
- कबीर की रचनाओं में पाखंड, छुआछूत और कर्मकांडों का तीखा व्यंग्य है, जो समाज सुधारक की भूमिका निभाता है।
- तुलसीदास लोक-मंगल पर केंद्रित होकर कुरीतियों को राम-कथा से दूर करने का प्रयास करते हैं, प्रत्यक्ष आलोचना कम की।
- कबीर स्त्री को समान दृष्टि से देखते हुए पर्दा-प्रथा आदि का विरोध करते हैं, आध्यात्मिक समानता पर बल देते हैं।



सामाजिक चेतना के सन्दर्भ में कबीर तथा
तुलसीदास के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

पंजाब विश्वविद्यालय की
पी-एच. डी. उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध
2001

प्रस्तुतकर्त्री
उषा देवी

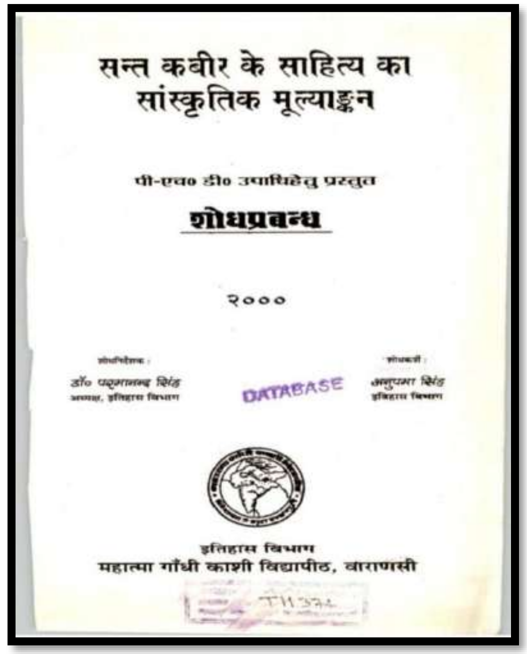
हिन्दी विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़

- कबीर का काव्य निर्गुण पदों में आम जन के हित को प्राथमिकता देता है, आर्थिक शोषण पर चोट करता है।
- तुलसीदास मर्यादा और आचार संहिता को वर्णाश्रम से जोड़कर सामाजिक स्थिरता चाहते थे।
- कबीर केवट, शबरी जैसे निम्न वर्गों को आध्यात्मिक ऊँचाई देकर समानता स्थापित करते हैं।
- तुलसीदास राम-राज्य को आदर्श शासन बताते हुए राजधर्म और प्रजाहित को जोड़ते हैं।
- कबीर काव्य को समाज जागरण का साधन मानते थे, दोहों से सीधी आलोचना की।

अनुपमा सिंह (2000) ने “सन्त कबीर के साहित्य का सांस्कृतिक मूल्याङ्कन” शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

- कबीर के साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पक्ष समाज में व्याप्त जाति-पाति और छुआछूत का विरोध है। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ मनुष्य की पहचान उसके गुणों से हो, न कि उसके जन्म से।
- कबीर ने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों में व्याप्त बाहय आडंबरों, जैसे मूर्ति पूजा, रोजा-नमाज का दिखावा और कर्मकांडों की तीखी आलोचना की है, ताकि धर्म के वास्तविक मानवीय स्वरूप को स्थापित किया जा सके।

- कबीर का साहित्य भारतीय संस्कृति की 'गंगा-जमुनी' तहजीब का प्रतीक है। उन्होंने सूफी मत और वेदांत के तत्वों को मिलाकर एक साझा सांस्कृतिक मंच तैयार किया, जो आज भी प्रासंगिक है।
- कबीर के लिए 'मानवता' ही सबसे बड़ा धर्म था। उनके साहित्य में ईश्वर की भक्ति से भी ऊपर मनुष्य की सेवा और प्रेम को स्थान दिया गया है, जो उनकी संस्कृति का मूल आधार है।


सन्त कबीर के साहित्य का सांस्कृतिक मूल्याङ्कन

पी-एच० डी० उपाधिहेतु प्रस्तुत

शोधप्रबन्ध

२०००

डॉ० परमानन्द सिंह
अध्यक्ष, इतिहास विभाग

DATABASE

अनुपमा सिंह
इतिहास विभाग

इतिहास विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

- सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर ने निराकार ईश्वर (निर्गुण राम) की अवधारणा दी, जिससे ईश्वर तक पहुँचने के लिए किसी बिचौलिये या मंदिर-मस्जिद की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया।
- कबीर ने सत्य, अहिंसा, संतोष और सदाचार पर बल दिया। उनका साहित्य व्यक्ति के आंतरिक शुद्धिकरण के माध्यम से समाज के सांस्कृतिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है।
- कबीर ने संस्कृत जैसी 'कूप जल' भाषा के बजाय 'बहता नीर' यानी लोकभाषा (सधुक्कड़ी) का प्रयोग किया। इससे साहित्य और संस्कृति सीधे आम जनता तक पहुँची और जन-संस्कृति का विकास हुआ।
- कबीर की संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया है ('गुरु गोविंद दोऊ खड़े')। यह भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा का एक अनूठा सांस्कृतिक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।
- कबीर ने समय-समय पर समाज में जमी हुई बासी और सड़ी-गली परंपराओं को चुनौती दी। उनका विद्रोही स्वर दरअसल संस्कृति को आधुनिक और तर्कसंगत बनाने का प्रयास था।
- कबीर के विचार संकीर्ण सीमाओं में नहीं बंधे हैं। "कबीरा खड़ा बाज़ार में, माँगे सबकी खैर" के माध्यम से उन्होंने वैश्विक भाईचारे और शांति का जो संदेश दिया, वह विश्व संस्कृति के लिए उनकी अनमोल देन है।

2.6 साहित्य सर्वेक्षण से प्राप्त शोध अन्तराल (Gaps Identified)

1. अधिकांश कार्य कबीर के 'भक्ति पक्ष' या 'साहित्यिक पक्ष' पर केंद्रित हैं; उनके **'शुद्ध शैक्षिक दर्शन' (Pure Educational Philosophy)** पर स्वतंत्र और विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन की कमी है।

2. कबीर के मूल्यों को **21वीं सदी के मानसिक तनाव, साइबर अपराध और उपभोक्तावाद** जैसी विशिष्ट आधुनिक समस्याओं के समाधान के रूप में बहुत कमपरखा गया है।

3. नई शिक्षा नीति (2020) के कार्यान्वयन में कबीर के **'अनुभवजन्य ज्ञान'** को एक 'शिक्षण पद्धति' (Pedagogy) के रूप में कैसे अपनाया जाए, इस पर शोध की अपार संभावनाएं शेष हैं।

निष्कर्ष

साहित्य का यह सर्वेक्षण स्पष्ट करता है कि कबीर एक कालजयी शिक्षक हैं। पूर्ववर्ती विद्वानों ने उनके व्यक्तित्व की परतें खोली हैं, जबकि प्रस्तुत शोध उन परतों में छिपे **'शैक्षिक सूत्रों'** को आधुनिक स्कूल और कॉलेज के परिवेश में लागू करने की सार्थकता सिद्ध करता है।

तृतीय अध्याय

कबीर का जीवन परिचय

3.1 जन्म

3.2 माता-पिता

3.3 गुरु

3.4 शिष्य

3.5 गार्हस्थ्य जीवन

3.6 अलौकिक कृत्य

3.7 मृत्यु

तृतीय अध्याय

कबीर का जीवन परिचय

3.1 जन्म

कबीरपंथियों में कबीर के जन्म के विषय में यह पद्य प्रसिद्ध है-

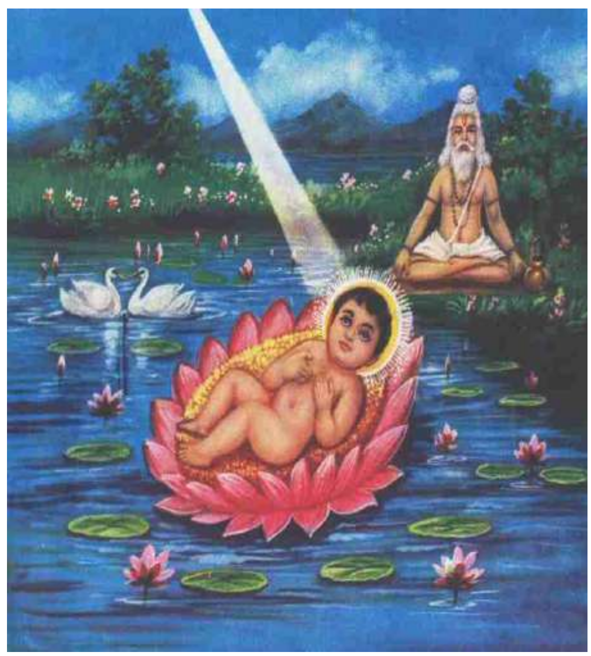
चौदह सौ पचपन साल भए, चंद्रवार एक ठाठ वए।

जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए।।

घन गरजें दामिनि दमके बूंदे बरखें झर लाग गए।

लहर तलाब में कमल खिले तहँ कबीर भानु प्रगट भए।।

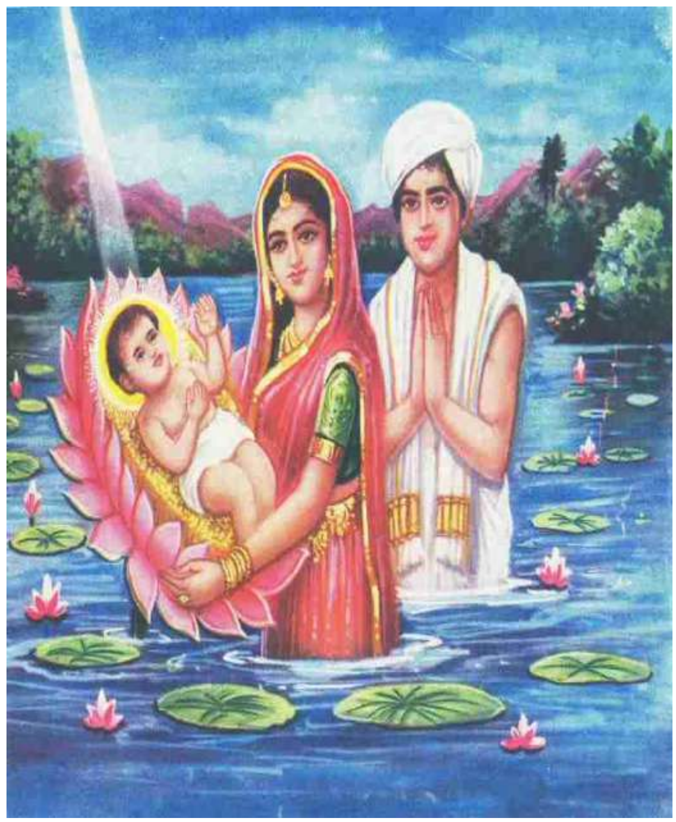
यह पद्य कबीरदास के प्रधान शिष्य और उत्तराधिकारी धर्मदास का कहा हुआ बताया जाता है। इसके अनुसार कबीरदास का जन्म लोगों ने संवत् 1455 ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा चंद्रवार को माना है, परंतु गणना करने से संवत् 1455 में ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा चंद्रवार को नहीं पड़ती। पद्य को ध्यान से पढ़ने पर संवत् 1456 निकलता है, क्योंकि उसमें स्पष्ट शब्दों में लिखा है 'चौदह सौ पचपन साल गए, अर्थात् उस समय तक संवत् 1455 बीत गया था।



ज्येष्ठ मास वर्ष के आरम्भिक मासों में है, अतएव उसके लिये चौदह सौ पचपन साल गए लिखना स्वाभाविक भी है, क्योंकि वर्षारंभ में नवीन संवत् लिखने का उतना अभ्यास नहीं रहता। सं० 1456 में ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा चंद्रवार को ही पड़ती है। अतएव यही संवत् कबीर के जन्म का ठीक संवत् जान पड़ता है।

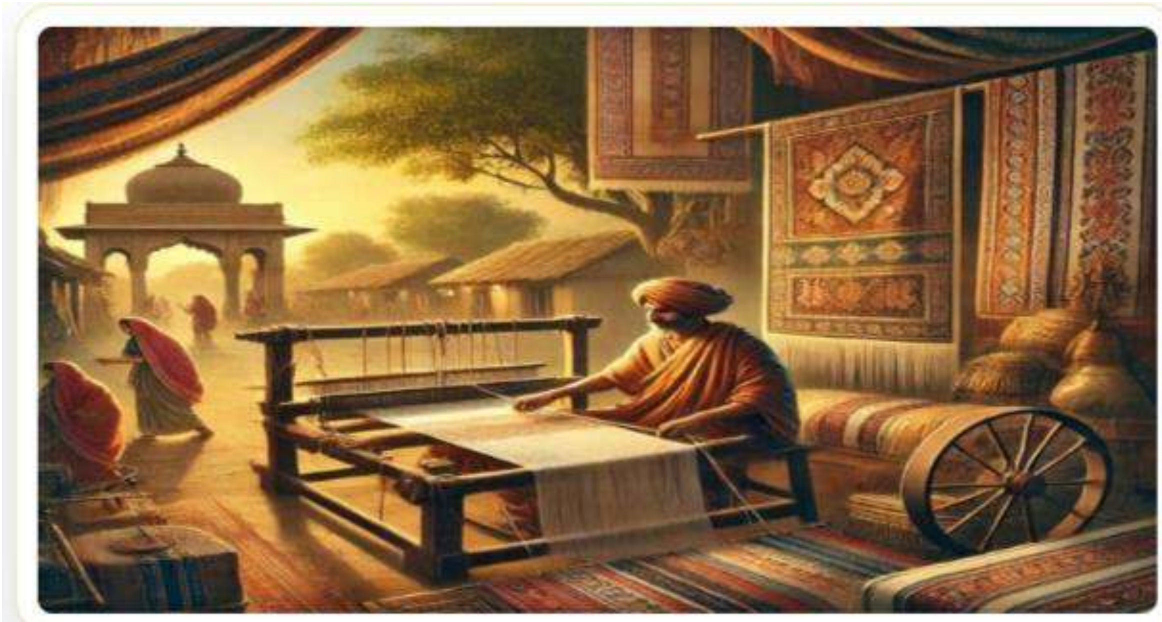
3.2 माता-पिता

यह कहा जा चुका है कि कबीरदास जी के जीवन की घटनाओं के संबंध में कोई निश्चित बात ज्ञात नहीं होती, क्योंकि उन सबका आधार जनसाधारण और विशेषकर कबीरपंथियों में प्रचलित दंतकथाएँ हैं। कहते हैं कि काशी में एक सात्विक ब्राह्मण रहते थे जो स्वामी रामानंद जी के बड़े भक्त थे। उनकी एक विधवा कन्या थी। उसे साथ लेकर एक दिन वे स्वामी जी के आश्रम पर गए। प्रणाम करने पर स्वामी जी ने उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। ब्राह्मण देवता ने चौंककर जब पुत्री का वैधव्य निवेदन किया तब स्वामी जी ने सखेद कहा कि मेरा वचन तो अन्यथा नहीं हो सकता है, परंतु इतने से संतोष करो कि इससे उत्पन्न पुत्र बड़ा प्रतापी होगा। आशीर्वाद के फलस्वरूप जब इस ब्राह्मण कन्या को पुत्र उत्पन्न हुआ तो लोक लज्जा और लोकापवाद के भय से उसने उसे लहर तालाब के किनारे डाल दिया। भाग्यवश कुछ ही क्षण के पश्चात् नौरू नाम का एक जुलाहा अपनी



स्त्री नीमा के साथ उधर से आ निकला। इस दंपति के कोई पुत्र न था। बालक का रूप पुत्र के लिये लालायित दम्पति के हृदय में चुभ गया और वे इसी बालक का भरण-पोषण कर पुत्र वाले हुए। आगे चलकर यही बालक परम भगवद्भक्त कबीर हुआ। बीर का विधवा ब्राह्मण कन्या का पुत्र होना असंभव नहीं किंतु स्वामी रागानंद जी के आशीर्वाद की बात ब्राह्मण कन्या का कलंक मिटाने के उद्देश्य से ही पीछे से जोड़ी गई जान पड़ती है, जैसे कि अन्य प्रतिभाशाली व्यक्तियों के संबंध में जोड़ी गई है। मुसलमान घर में पालित होने पर भी कबीर का हिंदू विचारों में सराबोर होना उनके शरीर में प्रवाहित होने वाले ब्राह्मण अथवा कम-से-कम हिंदू रक्त की ही ओर संकेत करता है। स्वयं कबीरदास ने अपने माता-

पिता का कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है और जहाँ कहीं उन्होंने अपने संबंध में कुछ कहा भी है वहाँ अपने को जुलाहा और बनारस का रहने वाला बताया है।



'जाति जुलाहा मति को धीर। हरषि हरषि गुण रमै कबीर' ।।

'मेरे राम की अभैपद नगरी, कहै कबीर जुलाहा।'

'तू ब्राह्मन मैं काशी का जुलाहा।'

परंतु जान पड़ता है कि उनकी हार्दिक इच्छा थी कि यदि मेरा ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ होता तो अच्छा होता। वे पूर्व जन्म के अपने ब्राह्मण होने की कल्पना कर अपना परितोष कर लेते हैं। एक पद में वे कहते हैं-

'पूरब जनम हम ब्राह्मन होते वोछे करम तप हीना।

रामदेव की सेवा चूका पकरि जुलाहा कीना।।'

ग्रंथ साहब में कबीरदास का एक पद दिया है जिसमें कबीरदास कहते हैं- 'पहले दर्शन मगहर पायो पुनि काशी बसे आई।' एक दूसरे पद में कबीरदास कहते हैं- 'तोरे भरोसे मगहर बसियो मेरे मन की तपन बुझाई।' यह तो प्रसिद्ध ही है कि कबीरदास अंत में मगहर में जाकर बसे और वहीं उनका परलोकवास हुआ। पर 'पहले दर्शन मगहर पायो पुनि काशी

बसे आई' से तो यह ध्वनि निकलती है कि उनका जन्म ही मगहर में हुआ था और फिर ये काशी में आकर बस गए और अंत में फिर मगहर में जाकर परलोक सिधारे। तो क्या विधवा ब्राहमणी के गर्भ में जन्म पाने और नीरू तथा नीमा से पालित-पोषित होने की समस्त कथा केवल मनगढ़ंत है और उसमें कुछ भी सार नहीं। यह विषय विशेष रूप से विचारणीय है।

कुछ लोग कबीर को नीरू और नीमा का औरस पुत्र मानते हैं, परंतु इस मत के पक्ष में कोई साधार प्रमाण अब तक किसी ने नहीं दिया। स्वयं कबीर की एक उक्ति हम ऊपर दे चुके हैं जिसमें जन्म से मुसलमान न होना प्रकट होता है, परंतु 'जौ रे खुदाई तुरक मोहि करता आपै कटि किन जाई' से यह ध्वनित होता है कि वे मुसलमान माता-पिता की संतति थे। सब बातों पर विचार करने से इसी मत के ठीक होने की अधिक संभावना है कि कबीर ब्राहमणी या किसी हिंदू स्त्री के गर्भ से उत्पन्न और मुसलमान परिवार में लालित-पालित हुए थे। कदाचित् उनका बालकपन मगहर में बीता हो और पीछे से आकर काशी में बसे हों, जहाँ से अंतकाल के कुछ पूर्व उन्हें पुनः मगहर में जाना पड़ा हो।

3.3 गुरु

किंवदंती है कि जब कबीर भजन गा गा कर उपदेश देने लगे तब उन्हें पता चला कि बिना किसी गुरु से दीक्षा लिये हमारे उपदेश मान्य नहीं होंगे क्योंकि लोग उन्हें 'निगुरा' कहकर चिढ़ाते थे। लोगों का कहना था कि जिसने किसी गुरु से उपदेश नहीं ग्रहण किया, वह औरों को क्या उपदेश देगा ! अतएव कबीर को किसी को गुरु बनाने की चिन्ता हुई। कहते हैं, उस समय स्वामी रामानंद जी काशी में सबसे प्रसिद्ध महात्मा थे। अतएव कबीर उन्हीं की सेवा में पहुँचे। परंतु उन्होंने कबीर के मुसलमान होने के कारण उनको अपना शिष्य बनाना स्वीकार नहीं किया। इस पर कबीर ने एक चाल चली जो अपना काम कर गई। रामानंद जी पंचगंगा घाट पर नित्य प्रति प्रातःकाल ब्राहममुहूर्त में स्नान करने जाया करते

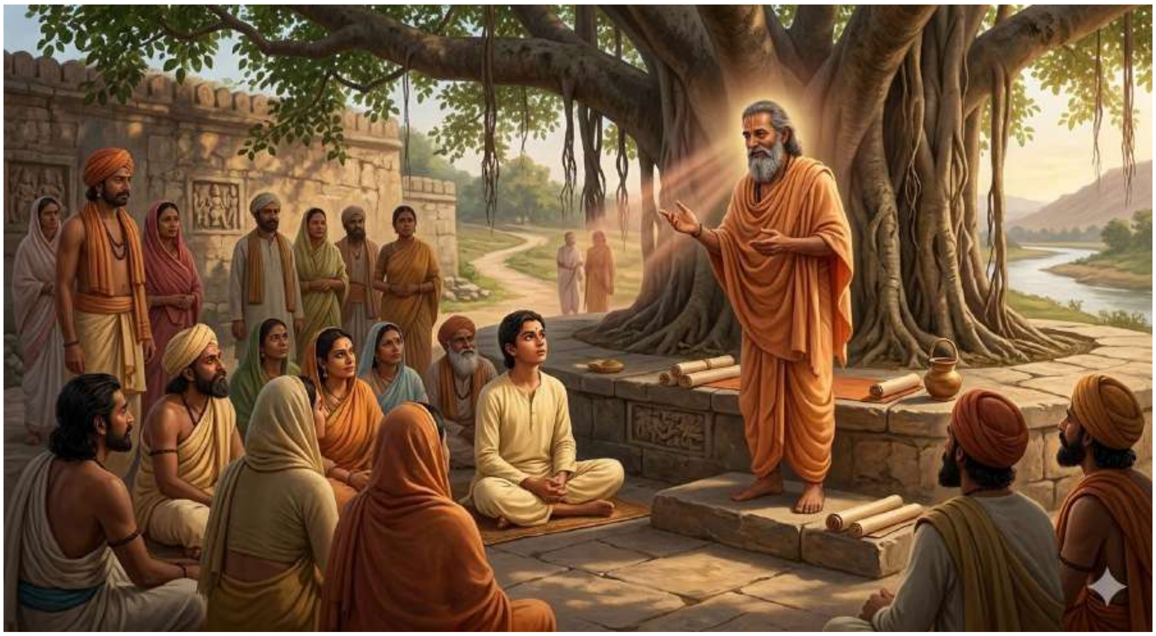
थे उस घाट की सीढ़ियों पर कबीर पहले से ही जाकर लेट रहे। स्वामी जी जब स्नान करके लौटे तो उन्होंने अँधेरे में इन्हें न देखा, उनका पाँव इनके सिर पर पड़ गया जिस पर स्वामी जी के मुँह से 'राम राम' निकल पड़ा। कबीर ने चट उठ कर उनके पैर पकड़ लिए और कहा कि आप राम-राम का मंत्र देकर आज मेरे



गुरु हुए हैं। रामानंद जी से कोई उत्तर देते न बना। तभी से कबीर ने अपने को रामानंद का शिष्य प्रसिद्ध कर दिया।

'कासी में हम प्रकट भये हैं रामानंद चेताए' कबीर का यह वाक्य इस बात के प्रमाण में प्रस्तुत किया जाता है कि रामानंद जी उनके गुरु थे। जिन प्रतियों के आधार पर इस ग्रंथावली का संपादन किया गया है उसमें नह वाक्य नहीं है और न ग्रंथसाहब ही में यह मिलता है। अतएव इसको प्रमाण मान कर इसके आधार पर कोई मत स्थिर करना उचित नही जँचता। केवल किंवदंती के आधार पर रामानंद जी को उनका गुरु मान लेना ठीक नहीं। यह किंवदंती भी ऐतिहासिक जाँच के सामने ठीक नहीं ठहरती। रामानंद जी की मृत्यु अधिक-से-अधिक देर में मानने से संवत् 1467 में हुई, इससे 14 या 15 वर्ष पहले भी उनके होने का प्रमाण विद्यमान है। उस समय कबीर की अवस्था 11 वर्ष की रही होगी, क्योंकि हम ऊपर उनका जन्म संवत् 1456 सिद्ध कर आए हैं। 11 वर्ष के बालक का घूम-फिरकर उपदेश देने लगना सहसा ग्राह्य नहीं होता और यदि रामानंद जी की मृत्यु संवत् 1453 के लगभग हुई तो यह किंवदंती झूठ ठहरती है: क्योंकि उस समय तो कवोर को संसार में आने के लिये अभी तीन-चार वर्ष रहे होगे।

पर जब तक कोई विरुद्ध दृढ़ प्रमाण नहीं मिलते, तव तक हम इस लोकप्रसिद्ध बात को कि रामानंद जो कबीर के गुरु थे, बिलकुल असत्य भी नहीं ठहरा सकते। हो सकता है कि बाल्यकाल में बार-बार रामानंद जो के साक्षात्कार तथा उपदेश-श्रवण से ('गुरु के सबद मेरा मन लागा') अथवा दूसरों के मुँह से उनके गुण तथा उपदेश सुनने से बालक कबीर के चित्त पर गहरा प्रभाव पड़ गया हो जिसके कारण उन्होंने आगे चलकर उन्हें अपना मानस



गुरु मान लिया हो। कबीर मुसलमान माता पिता की संतति हों चाहे नहीं, किंतु मुसलमान के घर में लालित -पालित होने पर भी उनका हिंदू विचारधारा में आप्लावित होना उन पर बाल्यकाल ही से किसी प्रभावशाली हिंदू का प्रभाव होना प्रदर्शित करता है।

'हम भी पाहन पूजते होते बन के रोझ।

सतगुरु की किरपा भई सिर हैं उत्तरख्या बोझ।।'

से प्रकट होता है कि अपने गुरु रामानंद से प्रभावित होने से पहले कबीर पर हिंदू प्रभाव पड चुका था जिससे वे मुसलमान कुल में परिपालित होने पर भी 'पाहन' पूजनवाले हो गए थे। कबीर लोगों के कहने से कोई काम करने वाले नहीं थे। उन्होंने अपना सारा जीवन हो अपने समय के अंधविश्वासों के विरुद्ध लगा दिया था। यदि स्वयं उनका हार्दिक विश्वास

न होता कि गुरु बनाना आवश्यक है, तो वे किसी के कहने की परवाह न करते। किंतु उन्होंने स्वयं कहा यह है-

'गुरु बिन चेला ज्ञान न लहै।'

'गुरु बिन इह जग कौन भरोसा, काके संग है रहिए।'

परंतु वे गुरु और शिष्य का शारीरिक साक्षात्कार आवश्यक नहीं समझते थे। उनका विश्वास था कि गुरु के साथ मानसिक साक्षात्कार से भी शिष्यत्व का निर्वाह हो सकता है।

कबीर गुरु बसै बनारसी सिष समंदर तीर।

बिसऱ्याबिसऱ्या नहीं बीसरे जे गुण होई सरीर।।'

कबीर अपने आप में शिष्य के लिये आबश्यक गुणों का अभाव नहीं समझते थे। वे उन एक-आध में से थे जो गुरुज्ञान से अपना उद्धार कर सकते थे, जिनके संबंध में कबीर ने कहा

'माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़त।

कहै कबीर गुरु ज्ञान थे, एक आघ उबरंत ।।'



मुसलमान कबीरपंथियों का कहना है कि कबीर ने सूफी फकीर शेख तकी से दीक्षा ली थी। कबीर ने अपने गुरु के बनारस निवासी होने का स्पष्ट उल्लेख किया है। इस कारण ऊँजी के पौर और तकी उनके गुरु नहीं हो सकते। घट घट है अविनासी सुनहु तको तुम शेख में उन्होंने तकी का नाम उस आदर से नहीं लिया है जिस आदर से गुरु का नाम लिया जाता है और जिसके प्रभाव से कबीर ने असंभव का भी संभव होना लिखा है।

'गुरु प्रसाद सूई के नोकै हस्ती आवै जाहि।।'

बल्कि वे तो उलटे तकी को ही उपदेश देते हुए जान पड़ते हैं। यद्यपि यह वाक्य इस ग्रंथावली में कहीं नहीं मिलता फिर भी स्थान-स्थान पर 'शेख' शब्द का प्रयोग मिलता है जो विशेष आदर से नहीं लिया गया है, वरन् जिसमें फटकार की मात्रा ही अधिक देख पड़ती है। अतः तकी कबीर के गुरु तो हो ही नहीं सकते, हाँ, यह हो सकता है कि कबीर कुछ समय तक उनके सत्संग में रहे हों, जैसा कि नीचे लिखे वचनों से भी प्रकट होता है। पर यह स्वयं कबीर के वचन हैं, इसमें भी संदेह है-

'मानिकपुरहिं कबीर बसेरी। मदहति सुनि शेख तकि केरी।

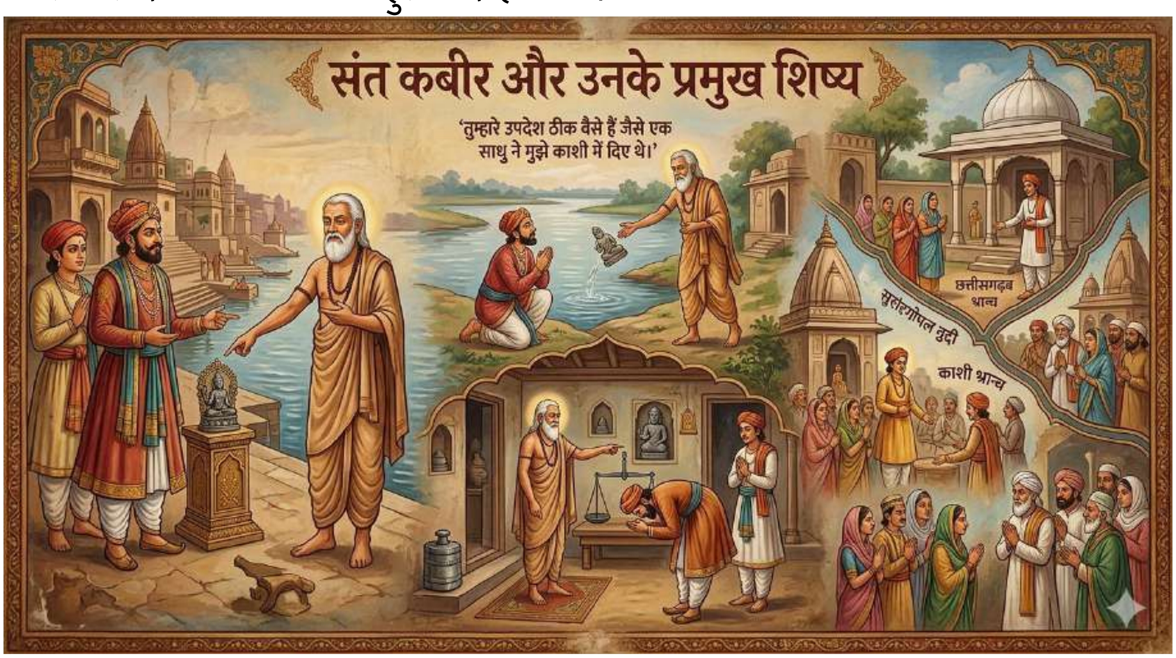
ऊजी सुनी जौनपुर थाना। झूसी सुनि पीरन के नामा।।'

परंतु इसके अनंतर भी वे जीवनपर्यंत राम नाम रटते रहे जो स्पष्टतः रामानंद के प्रभाव का सूचक है; अतएव स्वामी रामानंद को कबीर का गुरु मानने में कोई अड़चन नहीं है, चाहे उन्होंने स्वयं उन्हीं से मंत्र ग्रहण किया हो अथवा उन्हें अपना मानस गुरु बनाया हो। उन्होंने किसी मुसलमान फकीर को अपना गुरु बनाया हो इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता।

3.4 शिष्य

धर्मदास और सुरतगोपाल नाम के कबीर के दो चेले हुए। धर्मदास बनिए थे। उनके विषय में लोग कहते हैं कि वे पहले मूर्तिपूजक थे, उनका कवीर से पहले पहल काशी में साक्षात्कार हुआ था। उस समय कबीर ने उन्हें मूर्तिपूजक होने के कारण खूब फटकारा था। फिर वृन्दावन में दोनों की भेंट हुई। उस समय उन्होंने कबीर को पहचाना नहीं, पर बोले- तुम्हारे उपदेश ठीक वैसे हैं जैसे एक साधु ने मुझे काशी में दिए थे।' इस समय कवीर ने उनकी

मूर्ति को, जिसे वे पूजा के लिए सदैव अपने साथ रखते थे, जमुना में डाल दिया। तीसरी बार कवीर स्वयं उनके घर बाँधोगढ़ पहुँचे। वहाँ उन्होंने उनसे कहा कि तुम उसी पत्थर की मूर्ति पूजते हो जिसके तुम्हारे तौलने के बाट हैं। उनके दिल में यह वात बैठ गई और ये कवीर के शिष्य हो गए। कबीर की मृत्यु के बाद धर्मदास ने छत्तीसगढ़ में कबीरपंथ की एक अलग शाखा चलाई और सुरतगोपाल काशीवाली शाखा की गद्दी के अधिकारी हुए। धीरे धीरे दोनों शाखाओं में बहुत भेद हो गया।



कबीर कर्मकांड को पाखंड समझते थे और उसके विरोधी थे; परंतु आगे चलकर कबीरपंथ में कर्मकांड की प्रधानता हो गई। कंठी और जनेऊ कबीरपंथ में भी चल पड़े। दोक्षा से मृत्युपर्यंत कबीरपंथियों को कर्मकांड की कई क्रियाओं का अनुसरण करना पड़ता है। इतनी बात अवश्य है कि कबीरपंथ में जात-पाँत का कोई भेद नहीं और हिंदू मुसलमान दोनों धर्म के लोग उसमें सम्मिलित हो सकते हैं। परंतु ध्यान रखने की बात यह है कि कबीरपंथ में जाकर भी हिंदू मुसलमान का भेद नहीं मिट जाता। हिंदू धर्म का प्रभाव इतना व्यापक है कि उससे अलग होने पर भी भारतीय नए-नए मत अंत में उसके प्रभाव से नहीं बच सकते।

3.5 गार्हस्थ्य जीवन

कबीर के साथ प्रायः लोई का भी नाम लिया जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि यह कबीर की शिष्या थी और आजन्म उनके साथ रही ! अन्य इसे उनकी परिणीता स्त्री बताते हैं और कहते हैं कि इसके गर्भ से कबीर को कमाल नाम का पुत्र और कमाली नाम की पुत्री हुई थी। कबीर ने लोई को संबोधित करके कई पद कहे हैं। एक पद में वे कहते हैं-



रे यामें क्या मेरा क्या तेरा, लाज न मरहिं कहत घर मेरा।

कहत कबीर सुनहु रे लोई, हम तुम विनसि रहेगा सोई।

इसमें लोई और कबीर का एक घर होना कहा गया है। जिससे लोई को कबीर को स्त्री होना ही अधिक संभव जान पड़ता है। कबीर ने कामिनी की बहुत निंदा की है। संभवतः इसीलिए लोई के संबंध में उनकी पत्नी के स्थान में शिष्या होने की कल्पना की गई है।

'नारि नसावै तीनि सुख, जा नर पासै होइ।

भगति मुकति निज ज्ञान में, पैसि न सकई कोई।।

एक कनक अरु कामिनी, विष फल कीएउ पाइ।

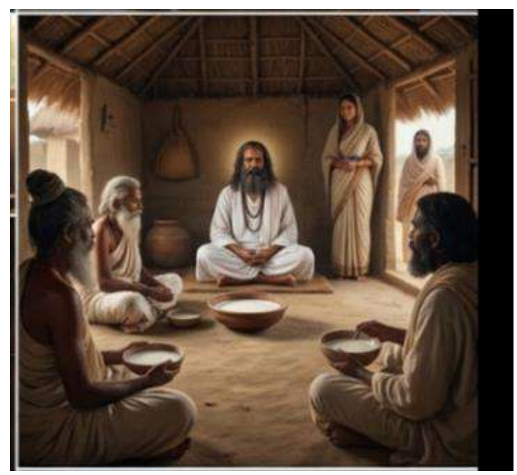
देखे ही थे विष चढ़े, खाए सूँ मरि जाइ।।'

परंतु कामिनी कांचन की निंदा के उनके वाक्य वैराग्यावस्था के समझने चाहिए। यह अधिक संगत जान पड़ता है कि लोई कबीर की पत्नी थी जो कबीर के विरक्त होकर नवीन पंथ चलाने पर उनकी अनुगामिनी हो गई। कहते हैं कि लोई एक बनखंडी वैरागी की परिपालिता कन्या थी। वह लोई उस वैरागी को स्नान करते समय लोई में लपेटी और टोकरी में रखी हुई गंगाजी में बहती हुई मिली थी। लोई में लपेटी हुई मिलने के कारण ही उसका नाम लोई पड़ा। वनखंडी



वैरागी की मृत्यु के बाद एक दिन कबीर उनकी कुटिया में गए। वहाँ अन्य संतों के साथ उन्हें भी दूध पीने को दिया गया, औरों ने तो दूध पी लिया, पर कबीर ने अपने हिस्से का रख छोड़ा। पूछने पर उन्होंने कहा कि गंगा पार से एक साधु आ रहे हैं, उन्हीं के लिए रख छोड़ा है। थोड़ी देर में सचमुच एक साधु आ पहुँचा जिससे अन्य साधु कबीर की सिद्धई पर आश्चर्य करने लगे। उसी दिन से लोई उनके साथ हो लो।

कबीर की संतति के विषय में तो कोई प्रमाण नहीं मिलता। कहते हैं कि उनका पुत्र कमाल उनके सिद्धांतों का विरोधी था। इसी से कबीर ने कहा-

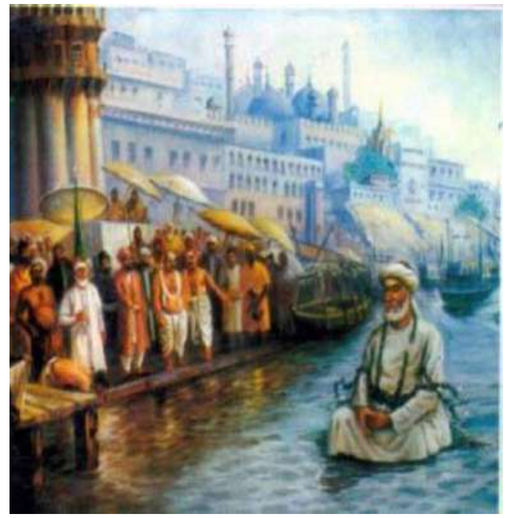


'डूबा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल ।

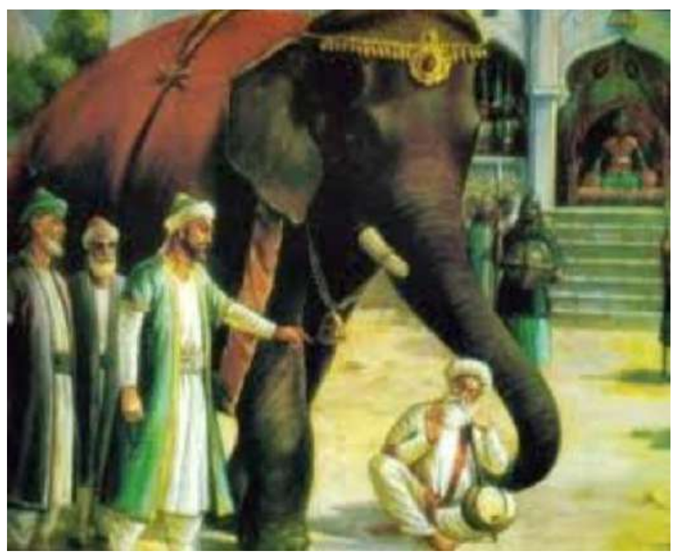
हरि का सुमिरन छाँड़ि के, घर ले आया माल।

इस दोहे के भी कबीरकृत होने में संदेह ही है। परंतु कमाल के कई पद ग्रंथसाहब में सम्मिलित किए गए हैं।

3.6 अलौकिक कृत्य



कबीर के विषय में कई आश्चर्यजनक कथाएँ प्रसिद्ध हैं जिनसे उनमें लोकोत्तर शक्तियों का होना सिद्ध किया जाता है। महात्माओं के विषय में प्रायः ऐसी कल्पनाएँ की ही जाती हैं। यद्यपि इस युग में इस प्रकार की बातों पर शिक्षित और समझदार लोग विश्वास नहीं करते, परंतु फिर भी महात्मा गाँधी के विषय में भी असहयोग के समय में ऐसी कई गप्पें उड़ी थीं। अतएव हम उन सबका उल्लेख मात्र करके व्यर्थ इस प्रस्तावना का कलेवर बढ़ाना उचित नहीं समझते। यहाँ एक ही कथा दे देना पर्याप्त होगा, जिसके लिए कुछ स्पष्ट आधार है।कहते हैं कि एक बार सिकंदर लोदी के दरबार में कबीर पर अपने आपको ईश्वर कहने का अभियोग लगाया गया। काजी ने उन्हें काफिर बताया और उनको मंसूर हल्लाज की भाँति मृत्युदंड की आज्ञा हुई। बेड़ियों से जकड़े हुए कबीर नदी में फेंक दिए गए। परंतु जिन कबीर को माया मोह की श्रृंखला न बाँध सकती थी, जिनकी पाप की बेड़ियाँ कट चुकी थीं उन्हें यह जंजीर बाँधे न रख सकी और वे तैरते हुए नदी तट पर आ खड़े हुए। अब काजी ने उन्हें धधकते हुए अग्निकुंड में डलवाया; किंतु उनके प्रभाव से आग बुझ गई और कबीर की दिव्य देह पर आँच तक न आई। उनके शरीर नाश के इस उद्योग के भी निष्फल हो जाने पर उन पर एक मस्त हाथी छोड़ा गया। उनके पास पहुँचकर हाथी उन्हें नमस्कार कर चिंग्घाड़ता हुआ भाग खड़ा हुआ। इसका आधार कबीर का यह पद कहा जाता है-



'अहो मेरे गोब्यंद तुम्हारा जोर, काजी बकिवा हस्ती तोर।।

बाँधि भुजा भले करि डार्यौ, हस्ती कोपि सूँड मैं मारौ।।

भाग्यो हस्ती चीसा मारी, वा मूरति की मैं बलिहारी ।।

महावत तोकूँ मारी साँटी, इसही मराउँ धालौं काटी ।।

हस्ती न तोरै धरे धियान, वाकै हिरदे बसै भगवान।।

कहा अपराध संत हौ कीन्हाँ, बाँधि पोट कुंजर कू दीन्हा।।

कुंजर पोट बहु बंदन करै, अँगहुँ न सूझै काजी अँधरै।।

तीनि बेर पतियारा लीन्हा, मन कठोर अजहूँ न पतीनाँ।।

कहै कबीर हमारे गोब्यंद, चौथे पद भै जन को गयंद ।।

परतु यह पद प्राचीन प्रतियों में नहीं मिलता। यदि यह कबीर जी का ही कहा हुआ है तो इस पद से केवल यह प्रकट होता है कि उनको मारने के तीनों प्रयत्न हाथी के द्वारा किए गए थे, क्योंकि इसमें उनके नदी में फेंके जाने या आग में जलाए जाने का कोई उल्लेख नहीं है।

ग्रंथसाहब में कबीर जी का यह पद भी मिलता है जो गंगा में जजीर से बाँधकर फेंके जाने वाली कथा से संबंध रखता है।

'गंगा गुसाइन गहिर गंभीर। जंजीर बाँध करि खरे कबीर।।

गंगा की लहरि मेरी टूटी जंजीर। मृगछाला पर बैठे कबीर।।

3.7 मृत्यु

कबीर का जीवन अंधविश्वासों का विरोध करने में ही बीता था। अपनी मृत्यु से भी उन्होंने इसी उद्देश्य की पूर्ति की। काशी मोक्षदापुरी कही जाती है। मुक्ति की कामना से लोग काशीवास करके यहाँ तन त्यागते हैं और मगहर में मरने का अनिवार्य परिणाम या फल नरकगमन माना जाता है। यह अंधविश्वास अब तक चला आता है। कहते हैं कि इसी के

विरोध में कबीर मरने के लिये काशी छोड़कर मगहर चले गए थे। वे अपनी भक्ति के कारण ही अपने आपको मुक्ति का अधिकारी समझते थे। उन्होंने कहा भी है-

'जौ काशी तन तजै कबीरा तौ रामहिं कहा निहोरा रे।'

इस अंधविश्वास का उन्होंने जगह-जगह खंडन किया है-

क. 'हिरदै कठोर मर्यो बनारसी नरक न बंच्या जाई।
हरि को दास मरै जो मगहर सेन्या सकल तिहाई।।'
ख. 'जस कासी तस मगहर ऊसर हृदय राामसति होई।'

आदि ग्रंथ में उनका नीचे लिखा पद मिलता है-

'ज्यों जल छाड़ि बाहर भयो मीना। पूरब जनम हौं तप का होना।।

अब कहु राम कवन गति मोरी। तजिले बनारस मति भइ थोरी।।

बहुत बरष तप कीया कासी। मरनु भया मगहर को बासी।।

कासी मगहर सम बीचारी। ओछी भगति कैसे उतरसि पारी।

कहु गुर गति सिव संभुव को जानै। मुआ कबीर रमता श्री रामै।"



कबीर के ये वचन मरने के कुछ ही समय पहले के जान पड़ते हैं। आरंभिक चरणों में जो क्षोभ प्रकट किया है, वह इसलिये कि बनारस उनका जन्मस्थान था जो सभी को अत्यंत प्रिय होता है। बनारस के साथ वे अपना संबंध वैसा ही घनिष्ट बतलाते हैं जैसा जल और मछली का होता है। काशी और मगहर को वे अब भी समान समझते थे। अपनी मुक्ति के संबंध में उन्हें तनिक भी संदेह नहीं था, क्योंकि उन्हें परमात्मा की सर्वज्ञता में अटल विश्वास था, 'शिव सम को जनै' और राम का नाम जाप करते-करते वे शरीर त्यागने जा रहे थे **'मुआ कबीर रमत श्री राम।'**

उनकी अंत्येष्टि क्रिया के विषय में एक बहुत ही विलक्षण प्रवाद प्रसिद्ध है। कहते हैं हिंदू उनके शव का अग्नि संस्कार करना चाहते थे और मुसलमान उसे कब्र में गाड़ना चाहते थे। झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि तलवारें चलने की नौबत आ गई। पर हिंदू-मुस्लिम ऐक्य की प्रयासी कबीर की आत्मा यह बात कब सहन कर सकती थी। आत्मा ने आकाशवाणी की 'लड़ो मत ! कफन उठाकर देखो।' लोगों ने कफन उठाकर देखा तो शव के स्थान पर एक पुष्प राशि पाई गई, जिसको हिंदू-मुसलमान दोनों ने आधा-आधा बाँट लिया। अपने हिस्से के फूलों को हिंदुओं ने जलाया और उनकी राख को काशी ले जाकर समाधिस्थ किया। वह स्थान अब तक कबीरचौरा के नाम से प्रसिद्ध है। अपने हिस्से के फूलों के ऊपर मुसलमानों ने मगहर ही में कब्र बनाई। यह कहानी भी विश्वास करने योग्य नहीं है, परंतु इसका मूल भाव अमूल्य है।

चतुर्थ अध्याय

कबीर के चयनित दोहों में निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

4.1 करणीं बिना कथणीं कौ अंग

4.2 कथणीं बिना करणीं कौ अंग

4.3 कुसंगति कौ अंग

4.4 संगति कौ अंग

4.5 असाध कौ अंग

4.6 साध कौ अंग

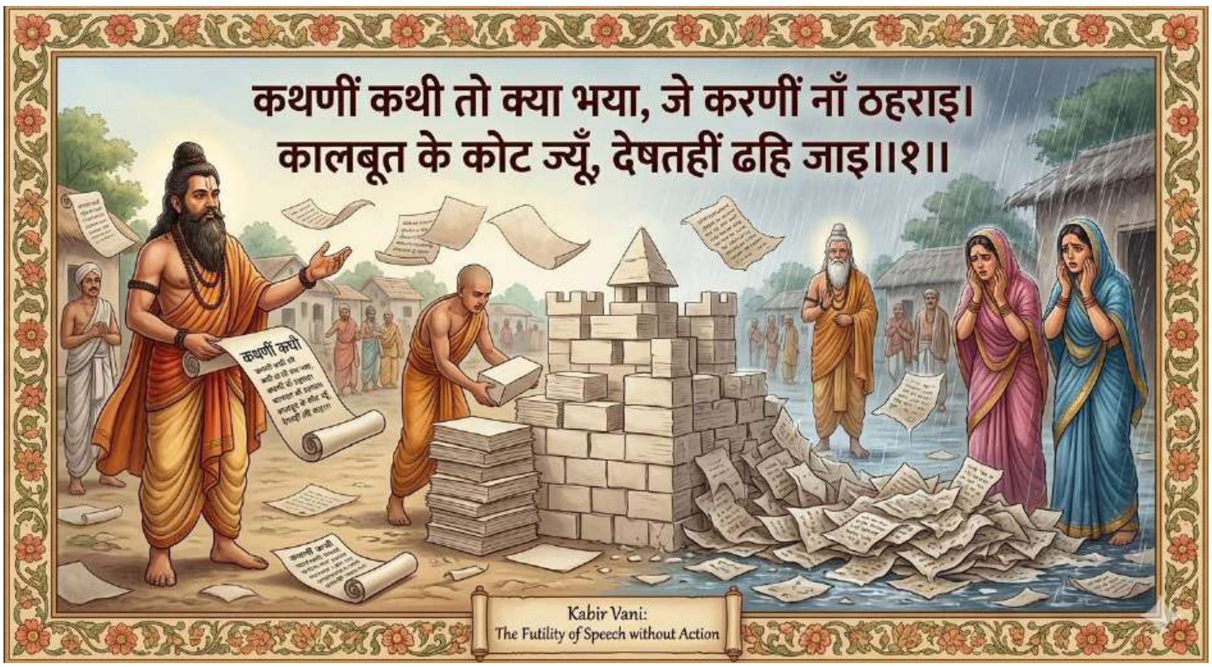
4.7 पारिष कौ अंग

चतुर्थ अध्याय

कबीर के चयनित दोहों में निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

4.1 करणीं बिना कथणीं कौ अंग

4.1.1 करणीं कथी ---ढाई जाइ।।



भावार्थ

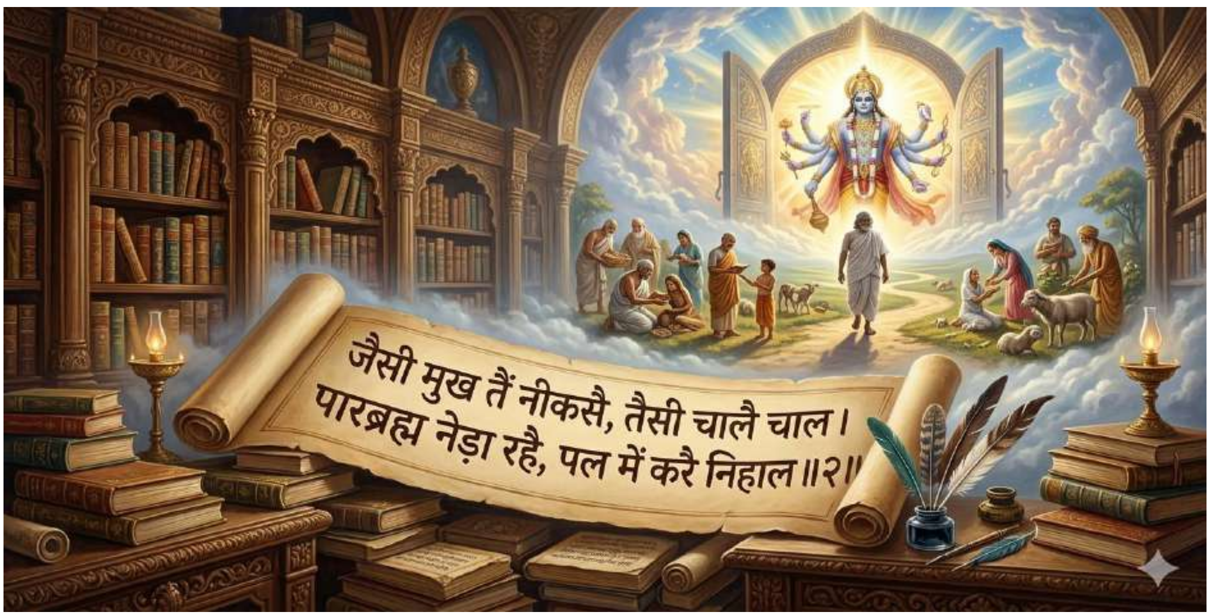
प्रस्तुत साखी में संत कबीर ने 'कथनी' (कहना) और 'करनी' (आचरण) के मध्य व्याप्त अंतर पर प्रहार किया है। कबीर के अनुसार, केवल ऊँचे सिद्धांतों का बखान करने से कोई लाभ नहीं है, यदि वे व्यक्ति के आचरण में परिलक्षित न होते हों। वे 'कालबूत' (साँचे या कागज़ के बने कृत्रिम दुर्ग) का उदाहरण देते हुए समझाते हैं कि जिस प्रकार एक कागज़ी

किला देखते ही देखते ढह जाता है, उसी प्रकार बिना आचरण का ज्ञान भी प्रभावहीन और क्षणभंगुर होता है।

प्रासंगिकता

आज की शिक्षा प्रणाली में जहाँ 'सूचनात्मक ज्ञान' की अधिकता है, वहाँ कबीर का यह दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक समाज में बढ़ते नैतिक पतन और दोहरे मापदंडों के बीच, यह साखी विद्यार्थियों में 'ईमानदारी' और 'उत्तरदायित्व' जैसे गुणों को विकसित करने की प्रेरणा देती है।

4.1.2 जैसी मुख --- करै निहाल।।



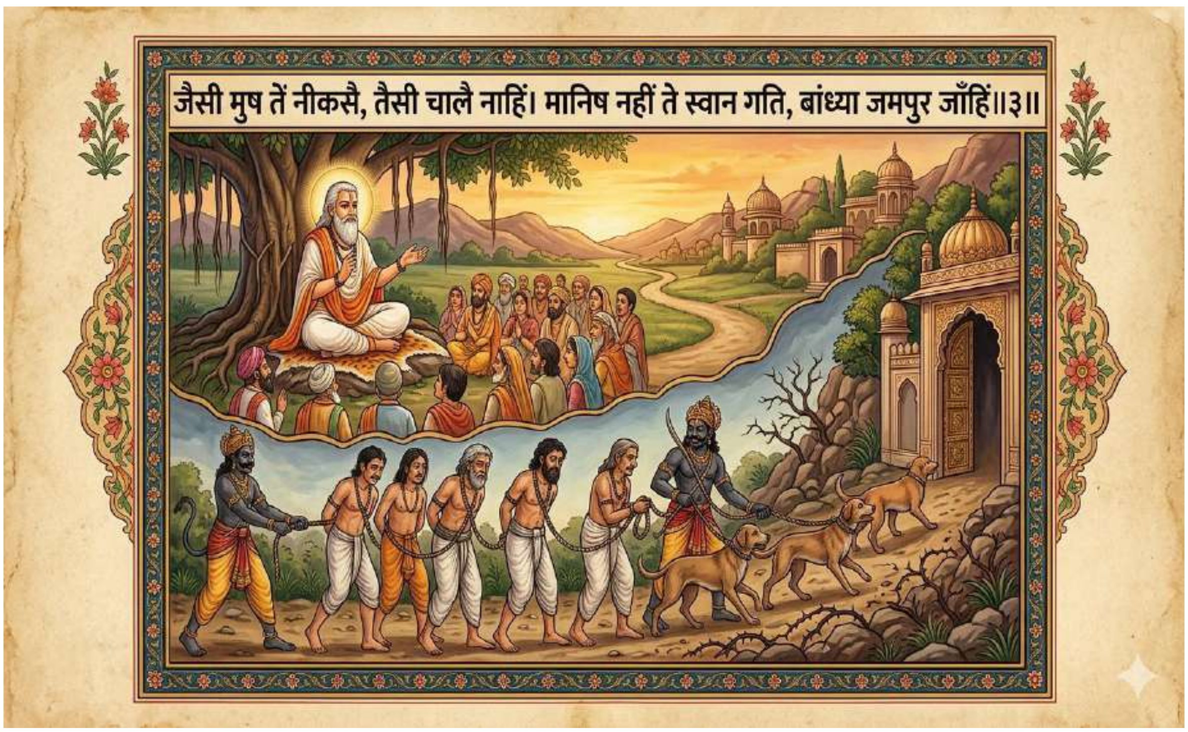
भावार्थ

जिस व्यक्ति की वाणी और उसका आचरण एक समान हो जाता है, उस पर ईश्वर की असीम कृपा बरसती है। कबीर दास जी कहते हैं कि जैसा मनुष्य के मुख से वचन निकलता है, यदि वह अपने जीवन में वैसा ही व्यवहार अपना ले, तो परमात्मा उसके अत्यंत निकट निवास करते हैं और उसे एक पल में ही परम आनंद व मोक्ष प्रदान कर निहाल कर देते हैं।

प्रासंगिकता

इस तथ्य में निहित है कि आज का समाज विश्वसनीयता के संकट से जूझ रहा है। वर्तमान समय में लोग आदर्शों की बातें तो बहुत करते हैं, परंतु जब उन्हें जीवन में उतारने की बारी आती है, तो वे पीछे हट जाते हैं। कबीर का यह संदेश सत्यनिष्ठा और ईमानदारी की नींव पर एक स्वस्थ समाज के निर्माण का आह्वान करता है, जहाँ व्यक्ति के भीतर और बाहर के व्यक्तित्व में कोई अंतर्विरोध न हो।

4. 1.3 वैसी मुष तें --- जमपुर जाँहिं।।



भावार्थ

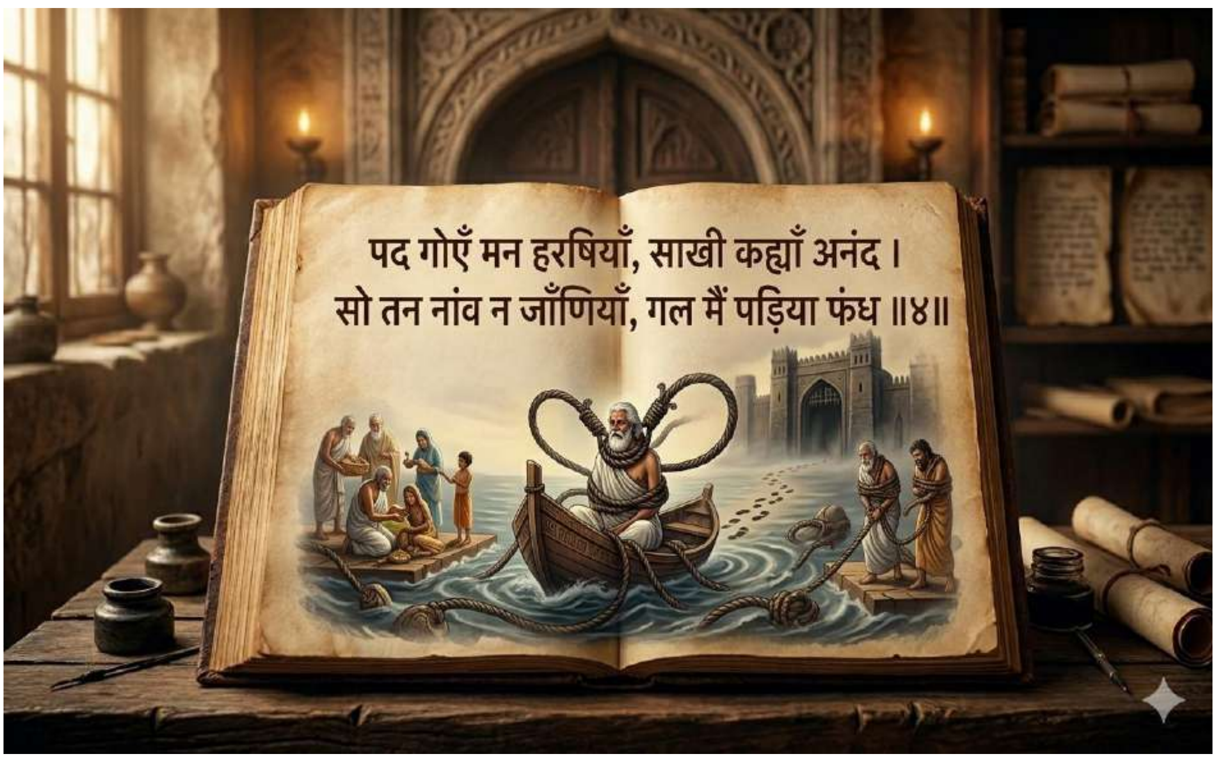
कबीर दास जी इस दोहे में उन लोगों पर कठोर प्रहार करते हैं जो कहते कुछ और हैं और करते कुछ और हैं। वे कहते हैं कि जिस मनुष्य के मुख से जैसे वचन या उपदेश निकलते हैं, यदि वह अपने जीवन की चाल अर्थात आचरण वैसा नहीं रखता, तो वह वास्तव में 'मनुष्य' कहलाने योग्य नहीं है। कबीर ऐसे व्यक्ति की तुलना उस कुत्ते (स्वान) से करते हैं जो केवल व्यर्थ भौंकता है पर उसके जीवन में कोई मर्यादा नहीं होती। अंततः ऐसे पाखंडी

लोग बंधे हुए यमपुरी (नरक या कष्ट) को प्राप्त होते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में सत्य और निष्ठा का त्याग कर दिया होता है।

प्रासंगिकता

आज के दौर में यह साखी पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान समाज में दिखावा और दोहरी मानसिकता बहुत बढ़ गई है। लोग सार्वजनिक रूप से नैतिकता और आदर्शों की बातें तो करते हैं, लेकिन व्यक्तिगत लाभ के लिए भ्रष्ट आचरण अपनाने से नहीं चूकते। कबीर का यह संदेश हमें चेतावनी देता है कि बाहरी आडंबर और झूठी बातों से कुछ समय के लिए सम्मान पाया जा सकता है, लेकिन अंततः व्यक्ति की पहचान उसके वास्तविक कर्मों से ही होती है। यह समाज में व्याप्त पाखंड को समाप्त कर एक ईमानदार और पारदर्शी व्यक्तित्व निर्माण का आहवान करता है।

4.1.4 पद गोएँ मन -- पड़िया फंध।।



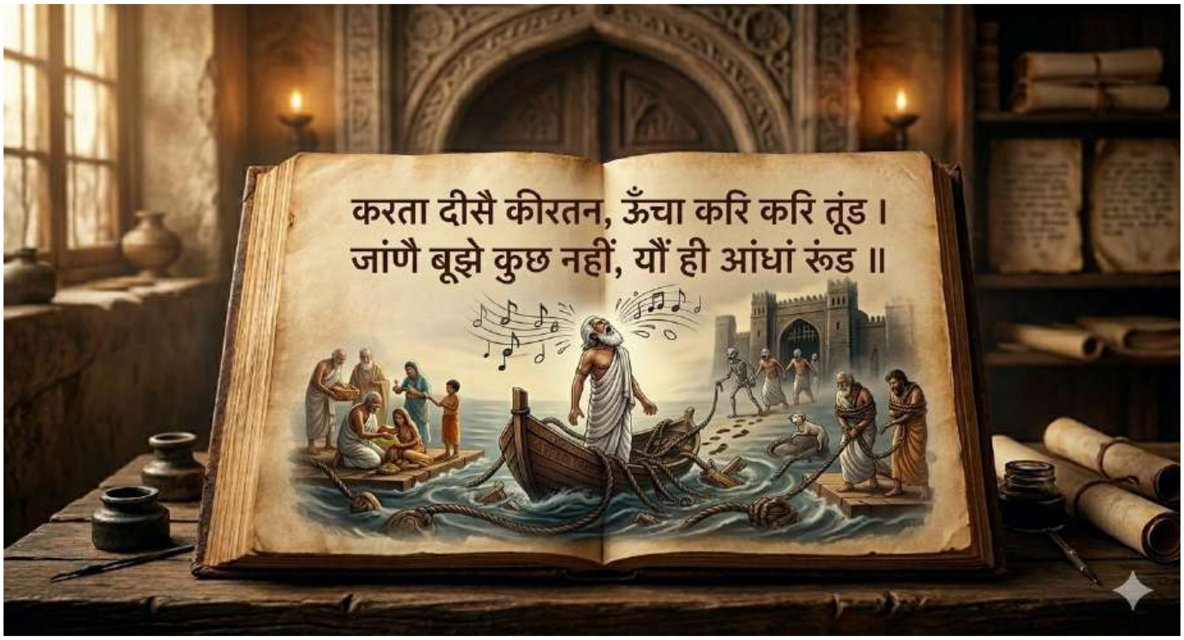
भावार्थ:

कबीर दास जी इस दोहे के माध्यम से उस दिखावटी भक्ति और ज्ञान पर प्रहार कर रहे हैं जो केवल ऊपरी आनंद तक सीमित है। वे कहते हैं कि भक्ति के पद गाकर मन को क्षणिक हर्ष तो मिल गया और साखियों (उपदेशों) को दोहराने से सुनने व कहने में आनंद भी आया, परंतु यदि व्यक्ति ने उस शरीर रूपी नौका (तन नांव) के वास्तविक मर्म को नहीं समझा–अर्थात यह नहीं जाना कि इस जीवन का सच्चा उद्देश्य क्या है और आचरण कैसे शुद्ध करना है–तो यह सारा ऊपरी ज्ञान व्यर्थ है। बिना आत्म-बोध और व्यावहारिक बदलाव के, मनुष्य संसार के मोह-माया के जाल में फंसा रह जाता है और अंततः उसके गले में काल का फंदा (मृत्यु और सांसारिक दुखों का जाल) पड़ जाता है।

प्रासंगिकता:

आज के दौर में यह साखी 'सूचना' और 'ज्ञान' के अंतर को स्पष्ट करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में हमारे पास इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से उपदेशों, प्रेरक विचारों और धार्मिक पदों की भरमार है। लोग इन्हें साझा करके या सुनकर मानसिक संतोष तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन उन्हें अपने चरित्र का हिस्सा नहीं बनाते। कबीर हमें सचेत करते हैं कि केवल बौद्धिक विलास या मनोरंजन के लिए ज्ञान का उपयोग करना अंततः आध्यात्मिक और नैतिक पतन का कारण बनता है। यह साखी हमें खोखले प्रदर्शन से बचकर वास्तविक आत्म-निरीक्षण की प्रेरणा देती है।

4.1.5 करता दीसै --- आंधां रूंड।।



भावार्थ

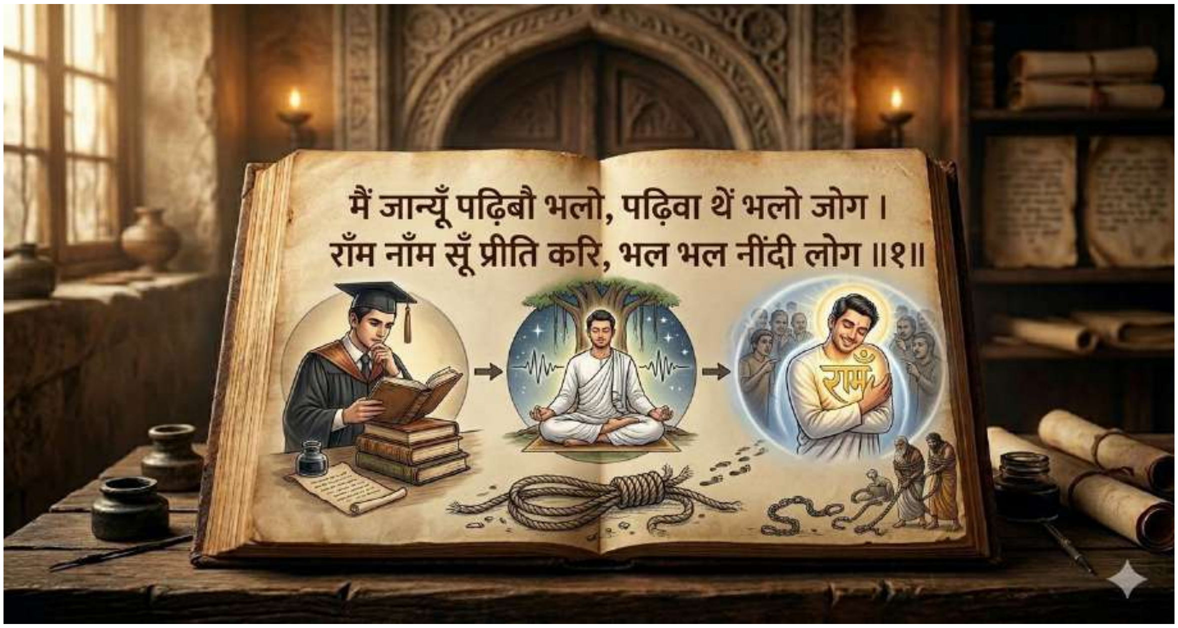
कबीर दास जी कहते हैं कि बहुत से लोग अपना गला ऊँचा कर-करके (पूरे जोर-शोर से) कीर्तन करते हुए दिखाई देते हैं। वे ऊँचे स्वर में भक्ति के पद तो गाते हैं, लेकिन वास्तव में वे उस ज्ञान के मर्म को 'जानते' या 'बूझते' (समझते) कुछ भी नहीं हैं। कबीर ऐसे व्यक्ति की तुलना एक 'अंधे धड़' (आंधां रूंड) से करते हैं, जिसके पास शरीर तो है पर देखने वाली आँखें (विवेक) नहीं हैं। बिना समझ और विचार के किया गया कोई भी भक्ति कार्य या प्रदर्शन व्यर्थ और दिशाहीन होता है।

प्रासंगिकता

आज के दौर में यह साखी 'प्रदर्शन की संस्कृति' (Culture of Display) पर सटीक बैठती है। वर्तमान समय में लोग धार्मिक, सामाजिक या यहाँ तक कि शैक्षिक कार्यों में भी गहराई से जुड़ने के बजाय केवल बाहरी दिखावे और शोर-शराबे पर अधिक ध्यान देते हैं। सोशल मीडिया के इस युग में जहाँ ज्ञान के वास्तविक बोध से अधिक उसके प्रदर्शन को महत्व दिया जाता है, वहाँ कबीर की यह साखी हमें याद दिलाती है कि बिना आंतरिक समझ के किया गया कोई भी प्रचार व्यक्ति को अंधकार की ओर ही ले जाता है। यह विवेकशून्य अनुकरण के विरुद्ध एक सशक्त चेतावनी है।

4.2 कथणीं बिना करणीं कै अंग

4.2.1 मैं जान्यूँ -- नींदी लोग।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि पहले मैं मानता था कि 'पढ़ना' (शास्त्रों और पुस्तकों का ज्ञान) ही जीवन में सबसे श्रेष्ठ और कल्याणकारी है। फिर मुझे लगा कि पढ़ने से भी बेहतर 'योग' (साधना और चित्त की एकाग्रता) है। लेकिन अंत में अनुभव हुआ कि इन सबसे ऊपर 'राम नाम' (ईश्वर/परम सत्य) से प्रेम करना और उसमें लीन होना है। कबीर कहते हैं कि भले ही समाज के लोग इस प्रेम मार्ग पर चलने के कारण मेरी निंदा करें, पर मेरे लिए सत्य का साक्षात्कार ही सबसे भला और महत्वपूर्ण है।

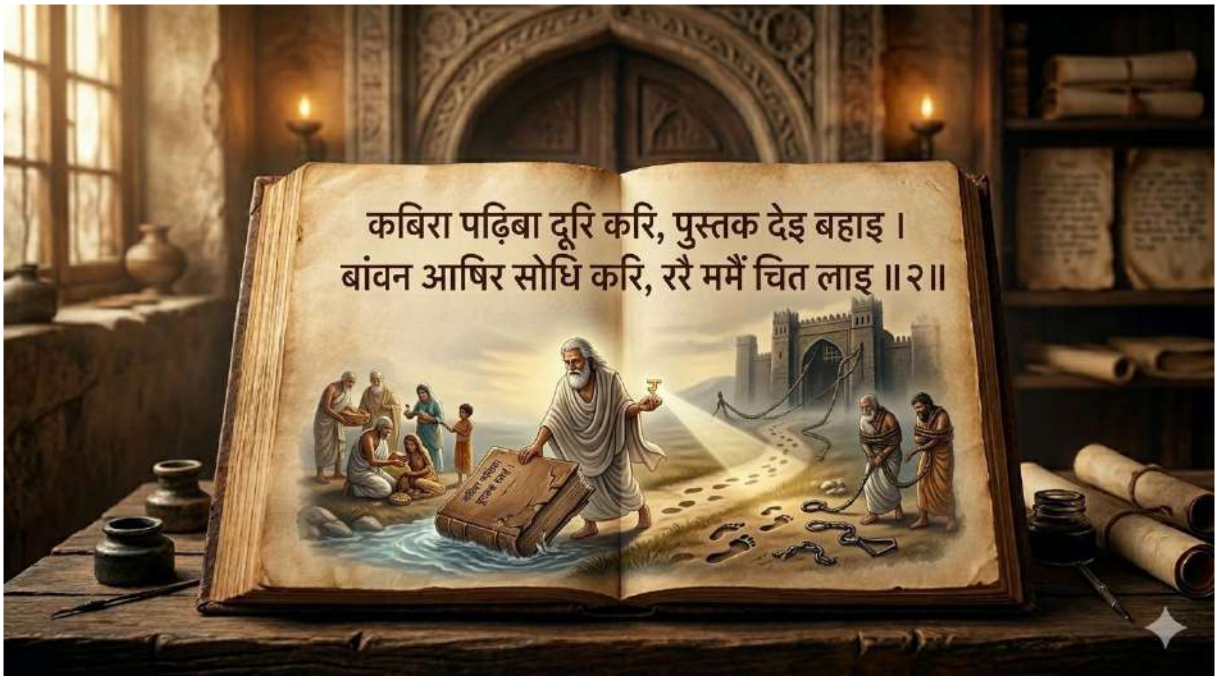
प्रासंगिकता

आज के दौर में यह साखी 'सूचना' और 'सच्चे बोध' के अंतर को समझाने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में हम केवल डिग्री और किताबी जानकारी (पढ़िबौ) को ही पूर्ण शिक्षा मान लेते हैं, लेकिन कबीर याद दिलाते हैं कि मात्र पढ़ना पर्याप्त नहीं है। यह साखी आज के 'सफलता की दौड़' वाले समाज में मानसिक शांति (योग) और आत्मिक प्रेम (राम

नाम) के महत्व को पुनर्स्थापित करती है। यह बताती है कि यदि समाज आपके सत्य के मार्ग की निंदा भी करे, तो भी अपने अंतर्मन की पुकार सुनना ही श्रेष्ठ है।

4.2.2 कबिरा पढ़िबा -- चित लाइ।।

भावार्थ



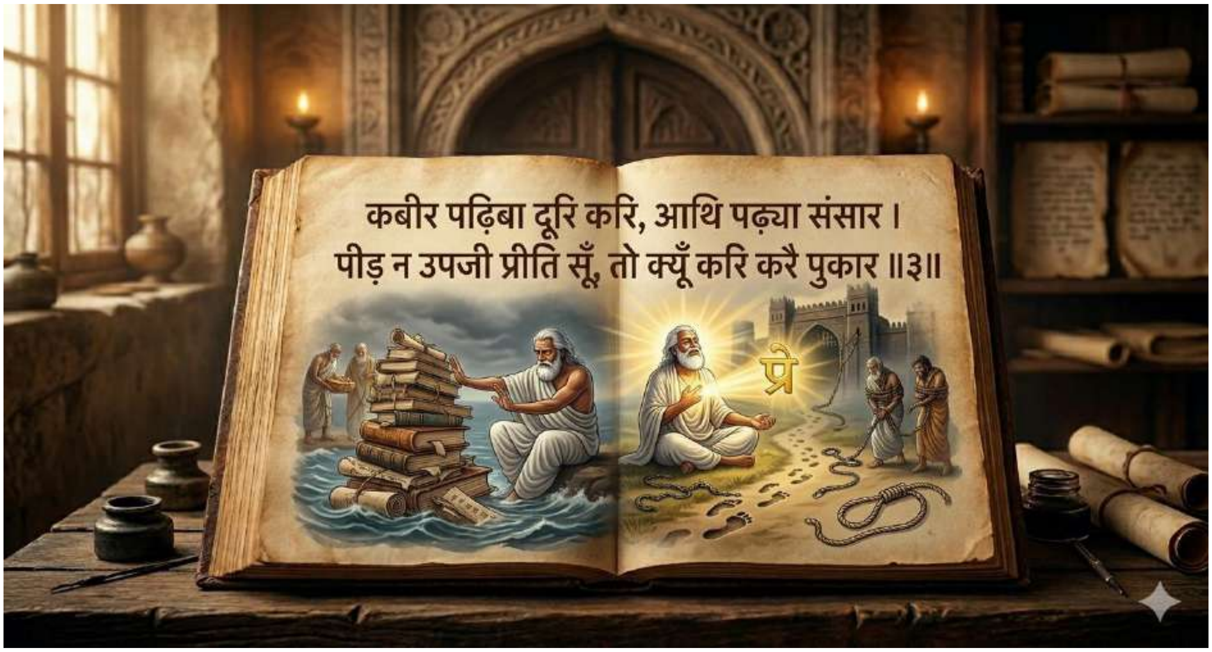
कबीर दास जी कहते हैं कि हे मनुष्य, यदि तू केवल बाहरी और शुष्क पांडित्य में उलझा है, तो ऐसे पढ़ने (पढ़िबा) को दूर कर दे और केवल सूचनाओं से भरी पुस्तकों को विसर्जित (बहाइ) कर दे। वे उपदेश देते हैं कि बावन अक्षरों (पूरी वर्णमाला/शास्त्रों) का अच्छी तरह शोध और विचार करने के बाद जो सार तत्व निकलता है, वह 'र' और 'म' (राम) का नाम है। कबीर के अनुसार, शास्त्रों के भारी बोझ को ढोने से श्रेष्ठ है कि अपने चित्त को उस परम सत्य (राम) में लगा दिया जाए, जो समस्त ज्ञान का मूल है।

प्रासंगिकता

वर्तमान सूचना प्रधान युग में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। आज के समय में हमारे पास सूचनाओं का अंबार है, लेकिन मौलिक समझ और शांति का अभाव है। कबीर की यह साखी हमें याद दिलाती है कि बहुत अधिक पढ़ लेना ही बुद्धिमानी नहीं है, बल्कि पढ़े हुए में से 'सार' या 'निचोड़' को पहचानना आवश्यक है। यह साखी 'अति-सूचना' (Information

Overload) के दौर में हमें मुख्य उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करने और मानसिक स्पष्टता प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।

4.2.3 कबीर पढ़िबा --- करै पुकार।।



भावार्थ

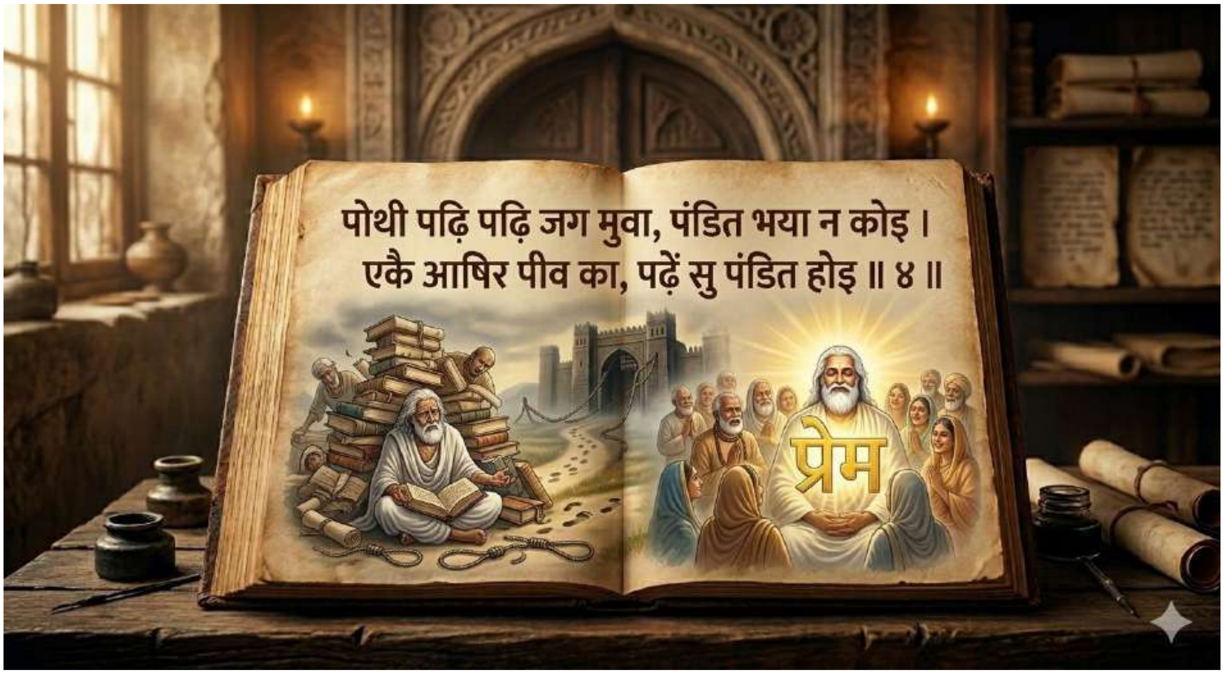
कबीर दास जी कहते हैं कि हे मनुष्य, तू ऐसे शुष्क 'पढ़ने' (पढ़िबा) को स्वयं से दूर कर दे, क्योंकि इस प्रकार के किताबी ज्ञान को तो सारा संसार ही पढ़ता आ रहा है। कबीर तर्क देते हैं कि यदि इतना सब पढ़ने के बाद भी तेरे हृदय में दूसरों के प्रति करुणा, मानवता और सत्य के प्रति 'पीड़' (तड़प या संवेदनशीलता) तथा 'प्रीति' (प्रेम) उत्पन्न नहीं हुई, तो तेरे ज्ञान का ढिंढोरा पीटना या चिल्लाना (पुकार करना) पूरी तरह व्यर्थ है। वास्तविक ज्ञान वही है जो मनुष्य के भीतर संवेदनशीलता और प्रेम का संचार करे।

प्रासंगिकता

वर्तमान 'सूचना विस्फोट' के युग में यह साखी असाधारण रूप से प्रासंगिक है। आज हमारे पास डिग्रियों और तकनीकी जानकारी की कमी नहीं है, लेकिन समाज में बढ़ती नफरत और संवेदनहीनता यह दर्शाती है कि हमने 'पढ़ना' तो सीख लिया है पर 'पीड़' और 'प्रीति' को खो दिया है। कबीर की यह साखी हमें याद दिलाती है कि बिना संवेदना और सहानुभूति

के ज्ञान केवल एक मानसिक बोझ है। यह आधुनिक समाज को एक 'संवेदनशील नागरिक' बनने की प्रेरणा देती है, न कि केवल एक 'सूचनाओं से भरा यंत्र'।

4.2.4 पोथी पढ़ि --- पंडित होइ।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि बड़ी-बड़ी और भारी पुस्तकें (पोथी) पढ़-पढ़कर न जाने कितने लोग इस संसार से विदा हो गए, लेकिन उनमें से कोई भी वास्तविक 'पंडित' या ज्ञानी नहीं बन सका। कबीर के अनुसार, पांडित्य या ज्ञान का पैमाना किताबी जानकारी नहीं है। वे कहते हैं कि जिसने प्रेम (पीव/परमात्मा/मानवता) का केवल एक अक्षर भी पढ़ लिया और उसे अपने जीवन में आत्मसात कर लिया, वही वास्तव में सच्चा ज्ञानी या पंडित है। यहाँ 'पीव' का अर्थ ईश्वरीय प्रेम के साथ-साथ मानवता और संवेदनशीलता से भी है।

प्रासंगिकता

आज के दौर में यह साखी 'डिग्री बनाम कौशल और संस्कार' की बहस में अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में हम उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, बड़ी-बड़ी उपाधियाँ ले रहे हैं, लेकिन समाज में बढ़ती नफरत, असहिष्णुता और संवेदनहीनता यह प्रमाणित करती है कि हमने पोथियाँ तो पढ़ ली हैं, पर प्रेम का अक्षर नहीं सीखा। कबीर की यह साखी आज के

'तकनीकी समाज' को यह संदेश देती है कि यदि शिक्षा मनुष्य को एक-दूसरे से जोड़ नहीं सकती और प्रेम करना नहीं सिखाती, तो वह ज्ञान केवल एक कागज़ी बोझ है। यह साखी 'मानवीय मूल्यों' को सर्वोच्च मानती है।

4.3 कुसंगति कौ अंग

4.3.1 निरमल बूँद --- भठछार।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि आकाश से गिरने वाली बूँद पूर्णतः निर्मल और पवित्र होती है, लेकिन जैसे ही वह पृथ्वी (भोमि) के संपर्क में आती है, वह मिट्टी और गंदगी के साथ मिलकर विकृत (बिकार) हो जाती है। इसी प्रकार, मनुष्य का मूल स्वभाव भी जन्म के समय निर्मल होता है, परंतु कुसंगति या गलत परिवेश में पड़कर वह अपने मूल स्वरूप और गुणों को खो देता है। 'मूल विनंठा' का अर्थ है अपने वास्तविक मानवीय गुणों का नष्ट हो जाना। कबीर चेतावनी देते हैं कि बिना सत्संगति के मनुष्य का जीवन 'भठछार' (राख या व्यर्थ) के समान हो जाता है।

प्रासंगिकता

वर्तमान डिजिटल और वैश्विक युग में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। आज के समय में परिवेश का अर्थ केवल भौतिक संगति नहीं, बल्कि सोशल मीडिया, इंटरनेट और डिजिटल सामग्री भी है। जिस प्रकार एक बूँद भूमि के संपर्क में आकर अपनी पवित्रता खो देती है, उसी प्रकार आज की युवा पीढ़ी भ्रामक सूचनाओं और अनैतिक परिवेश के प्रभाव में आकर अपने सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को खो रही है। यह साखी हमें सचेत करती है कि यदि हम अपने 'मूल' यानी चरित्र को बचाना चाहते हैं, तो हमें अपने परिवेश और संगति के प्रति अत्यंत सजग रहना होगा।

4.3.2 मूरिष संग -- तिहुँ भाइ।।



भावार्थ

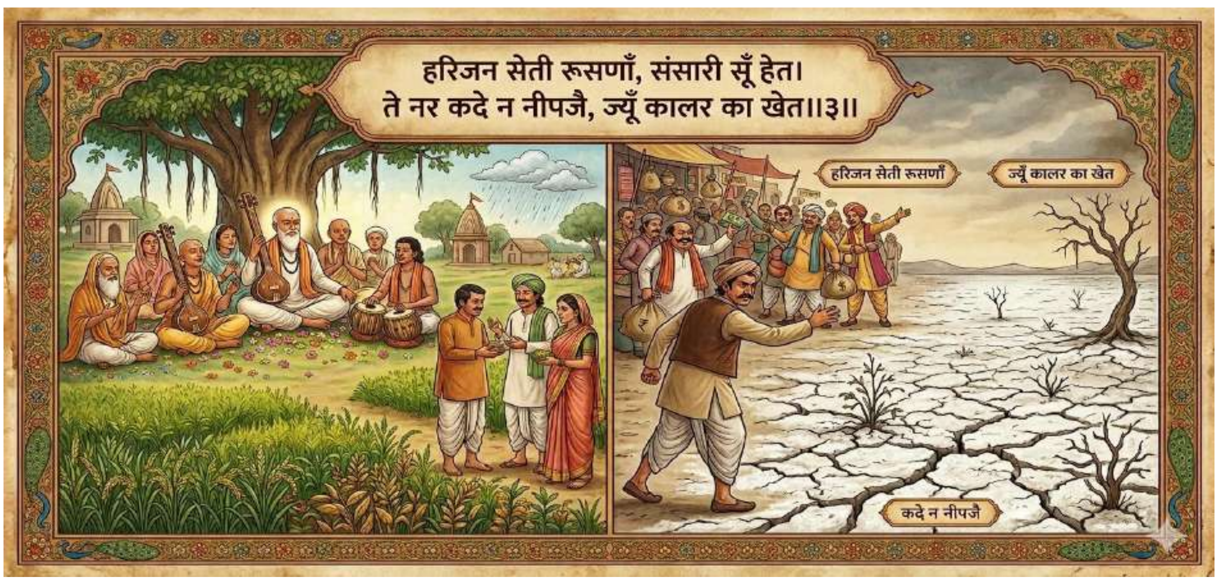
कबीर दास जी कहते हैं कि मूर्ख व्यक्ति की संगति कभी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वह उस लोहे के समान है जो स्वयं तो डूबता ही है, पानी में तैरने की शक्ति भी नहीं रखता (लोहा जलि न तिराइ)। संगति के प्रभाव को समझाते हुए वे स्वाति नक्षत्र की बूँद का उदाहरण देते हैं। वह बूँद जब 'कदली' (केले) पर गिरती है तो कपूर बन जाती है, 'सीप' में गिरती है तो मोती बन जाती है और 'भुजंग' (सांप) के मुख में गिरती है तो विष बन जाती

है। बूँद एक ही है, लेकिन अलग-अलग संगति के कारण उसके गुण और स्वरूप पूरी तरह बदल जाते हैं।

प्रासंगिकता

आज के प्रतिस्पर्धात्मक और सूचनात्मक युग में यह साखी 'संगति के चयन' पर जोर देती है। वर्तमान समय में युवा वर्ग अक्सर सोशल मीडिया या अपने समूह (Peer Group) के प्रभाव में आकर अपनी दिशा भटक जाता है। यह दोहा आज भी उतना ही प्रासंगिक है क्योंकि यह बताता है कि हमारे भीतर की क्षमताएँ (बूँद) तब तक सार्थक नहीं होंगी जब तक हमें सही मार्गदर्शन और परिवेश (सीप) नहीं मिलेगा। मूर्खतापूर्ण विचारों या नकारात्मक परिवेश का साथ हमें लोहे की तरह पतन की ओर ले जा सकता है।

4.3.3 हरिजन सेती --- कालर का खेत।।



भावार्थ

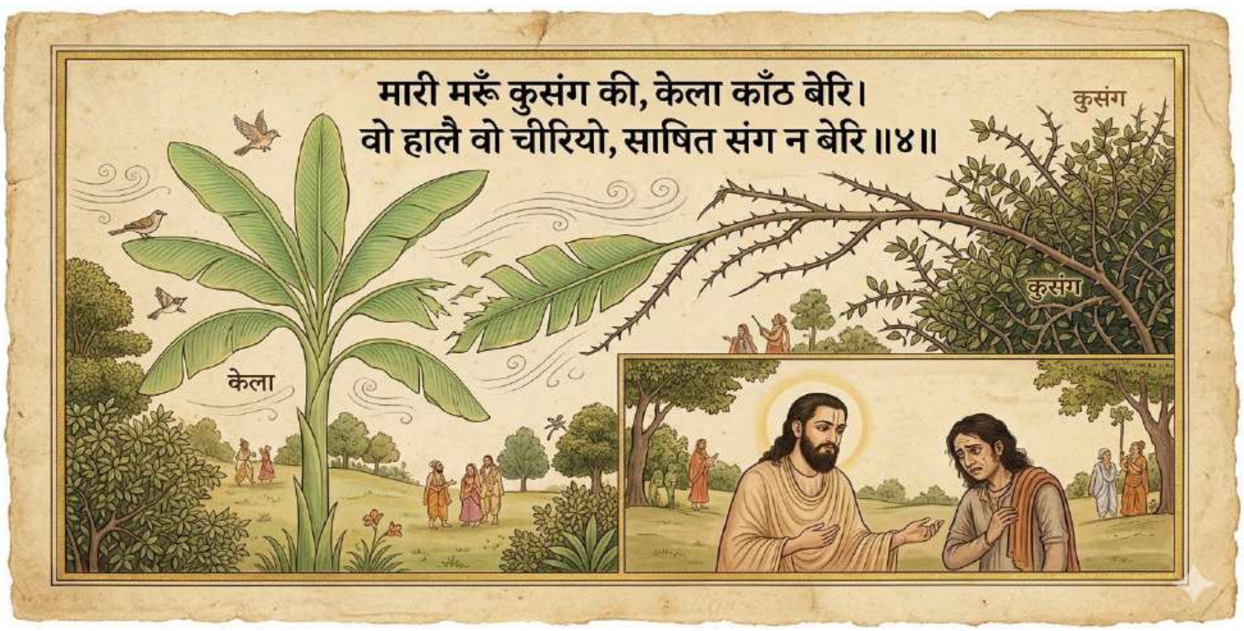
कबीर दास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति ‘हरिजन’ (ईश्वर के भक्त या सज्जन पुरुषों) से तो रूठता है या उनके प्रति द्वेष रखता है, लेकिन ‘संसारी’ (सांसारिक विषयों और माया-मोह में लिप्त लोगों) से प्रेम और मेल-जोल बढ़ाता है, उसका कल्याण कभी नहीं हो सकता। कबीर ऐसे व्यक्ति की तुलना ‘कालर के खेत’ (ऊसर या बंजर भूमि) से करते हैं। जिस प्रकार बंजर भूमि में बीज बोने पर भी कभी फसल नहीं उगती (नीपजै), उसी प्रकार सज्जनों

का साथ छोड़कर सांसारिकता में डूबे व्यक्ति के जीवन में कभी भी ज्ञान, सद्गुण या आत्मिक उन्नति की फसल पैदा नहीं हो सकती।

प्रासंगिकता

आज के भौतिकवादी युग में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में लोग प्रायः उन व्यक्तियों की संगति पसंद करते हैं जो उन्हें सांसारिक सुख, पद और प्रतिष्ठा की ओर ले जाते हैं, जबकि नैतिक और आध्यात्मिक मार्ग दिखाने वाले 'सज्जनों' या सच्चे मार्गदर्शकों की बातों को वे 'पुराना' या 'कठिन' मानकर उनसे दूरी बना लेते हैं। कबीर हमें सचेत करते हैं कि यदि हम मूल्यों और सिद्धांतों (हरिजन) को छोड़कर केवल स्वार्थ और भौतिकता (संसारी) को प्राथमिकता देंगे, तो हमारा व्यक्तित्व एक बंजर भूमि की तरह हो जाएगा, जिसमें कोई भी मानवीय संवेदना या श्रेष्ठ गुण जन्म नहीं ले पाएगा।

4.3.4 मरूँ -- संग न बेरि।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति 'हरिजन' (ईश्वर के भक्त या सज्जन पुरुषों) से तो रूठता है या उनके प्रति द्वेष रखता है, लेकिन 'संसारी' (सांसारिक विषयों और माया-मोह में लिप्त लोगों) से प्रेम और मेल-जोल बढ़ाता है, उसका कल्याण कभी नहीं हो सकता। कबीर ऐसे व्यक्ति की तुलना 'कालर के खेत' (ऊसर या बंजर भूमि) से करते हैं। जिस

प्रकार बंजर भूमि में बीज बोने पर भी कभी फसल नहीं उगती (नीपजै), उसी प्रकार सज्जनों का साथ छोड़कर सांसारिकता में डूबे व्यक्ति के जीवन में कभी भी ज्ञान, सद्गुण या आत्मिक उन्नति की फसल पैदा नहीं हो सकती।

प्रासंगिकता

आज के भौतिकवादी युग में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में लोग प्रायः उन व्यक्तियों की संगति पसंद करते हैं जो उन्हें सांसारिक सुख, पद और प्रतिष्ठा की ओर ले जाते हैं, जबकि नैतिक और आध्यात्मिक मार्ग दिखाने वाले 'सज्जनों' या सच्चे मार्गदर्शकों की बातों को वे 'पुराना' या 'कठिन' मानकर उनसे दूरी बना लेते हैं। कबीर हमें सचेत करते हैं कि यदि हम मूल्यों और सिद्धांतों (हरिजन) को छोड़कर केवल स्वार्थ और भौतिकता (संसारी) को प्राथमिकता देंगे, तो हमारा व्यक्तित्व एक बंजर भूमि की तरह हो जाएगा, जिसमें कोई भी मानवीय संवेदना या श्रेष्ठ गुण जन्म नहीं ले पपाएगा।

4.3.5 मेर नसाँणी -- सँभाल।।



भावार्थ

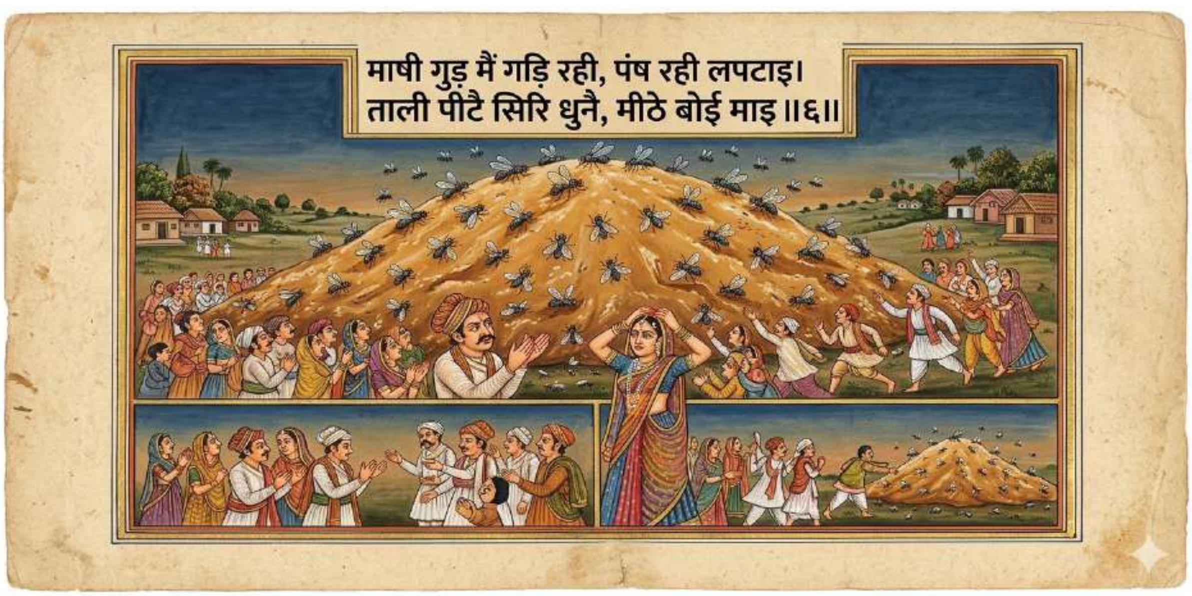
कबीर दास जी कहते हैं कि यह मानव शरीर वास्तव में मृत्यु की सीढ़ी (नसाँणी मीच की) के समान है, जहाँ हर क्षण हम अंत की ओर बढ़ रहे हैं। इस क्षणभंगुर जीवन में 'कुसंगति' साक्षात् काल (मृत्यु) के समान है जो समय से पूर्व ही व्यक्ति के गुणों और अस्तित्व का

विनाश कर देती है। कबीर मनुष्य को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि हे प्राणी! इस सच्चाई को समझ और अपनी 'वाणी' को ब्रह्म (परम सत्य/ईश्वर) के चिंतन में लगा, अर्थात अपनी वाणी को पवित्र और सार्थक कर। व्यर्थ की बातों और कुसंगति को त्याग कर सत्य का मार्ग अपनाना ही जीवन की सार्थकता है।

प्रासंगिकता

आज के दौर में जहाँ हर ओर शोर और विवादों का वातावरण है, यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में हम अपनी वाणी का उपयोग अक्सर दूसरों को नीचा दिखाने या कुसंगति के प्रभाव में आकर कटु वचन बोलने में करते हैं। कबीर हमें याद दिलाते हैं कि जीवन बहुत छोटा है और समय तेजी से बीत रहा है। यह साखी आज के समाज को 'सजगता' (Mindfulness) और 'सार्थक संवाद' की प्रेरणा देती है। यह हमें सचेत करती है कि हम अपनी ऊर्जा और वाणी को नकारात्मकता में नष्ट करने के बजाय आत्म-सुधार और रचनात्मक कार्यों में लगाएँ।

4.3.6 माषी गुड़ -- बोई मांइ।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि एक मक्खी गुड़ के लालच में उस पर जाकर बैठती है और उसमें पूरी तरह फँस जाती है (गड़ि रही)। उसके पंख भी उस चिपचिपे गुड़ में लिपट जाते हैं, जिससे वह उड़ने में असमर्थ हो जाती है। अब वह मक्खी पछतावे में अपने हाथ (ताली) पीटती है और सिर धुनती है (दुख प्रकट करती है), लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता क्योंकि वह उस 'मीठे' के स्वाद के जाल में अपनी जान गँवा चुकी है। यहाँ 'गुड़' सांसारिक मोह-माया और क्षणिक सुखों का प्रतीक है, और 'मक्खी' उस लालची मनुष्य का जो बिना सोचे-समझे इन सुखों में डूब जाता है।

प्रासंगिकता

आज के 'उपभोक्तावादी समाज' (**Consumerist Society)** में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में विज्ञापन और बाजारवाद हमें 'मीठे' यानी विलासिता और तात्कालिक सुखों का प्रलोभन देते हैं। लोग अक्सर बिना दूरगामी परिणामों को सोचे कर्ज, भ्रष्टाचार या अनैतिक रास्तों (गुड़) पर चल पड़ते हैं। जब वे इन समस्याओं के जाल में पूरी तरह फँस जाते हैं, तब पछतावा करते हैं। कबीर की यह साखी हमें 'सतर्कता' और 'आत्म-नियंत्रण' का संदेश देती है कि हम बाहरी चमक-धमक और क्षणिक स्वाद के पीछे अपनी स्वतंत्रता और अस्तित्व को दांव पर न लगाएँ।

4.3.7 उँचे कुल -- निंद्या सोइ।।



भावार्थ

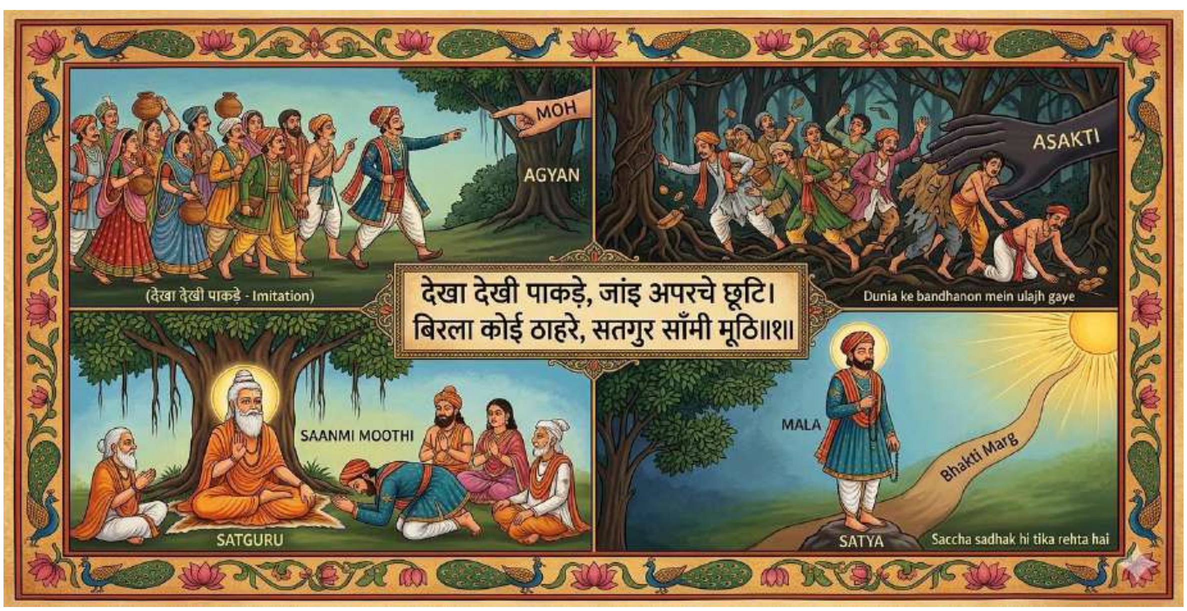
कबीर दास जी कहते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के कर्म (करणी) ऊंचे और श्रेष्ठ नहीं हैं, तो ऊंचे या प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेने से कोई लाभ नहीं है। वे एक सटीक उदाहरण देते हैं कि यदि सोने का कलश (सोवन कलस) भी हो, लेकिन यदि उसके भीतर मदिरा (सुरै) भरी हो, तो सज्जन पुरुष (साधूँ) उसकी निंदा ही करेंगे। जिस प्रकार सोने जैसा मूल्यवान पात्र मदिरा की बुराई को नहीं छिपा सकता, उसी प्रकार ऊंचा कुल व्यक्ति के नीच कर्मों को श्रेष्ठता प्रदान नहीं कर सकता।

प्रासंगिकता

आज के समय में यह साखी 'मेरिट' (योग्यता) और 'समानता' के सिद्धांत को पुष्ट करती है। वर्तमान समाज में अक्सर लोग अपने परिवार के नाम, धन या रसूख के बल पर सम्मान पाने की कोशिश करते हैं। कबीर की यह साखी याद दिलाती है कि समाज में वास्तविक प्रतिष्ठा केवल आपके चरित्र और कार्यों से मिलती है, न कि आपके 'सरनेम' या खानदान से। यह भाई-भतीजावाद (**Nepotism**) और जातिवाद के विरुद्ध एक सशक्त संदेश है, जो व्यक्ति को स्वयं के पुरुषार्थ से अपनी पहचान बनाने की प्रेरणा देता है।

4.4 संगति कौ अंग

4.4.1 देखा देखी -- साँमी मूठि।।



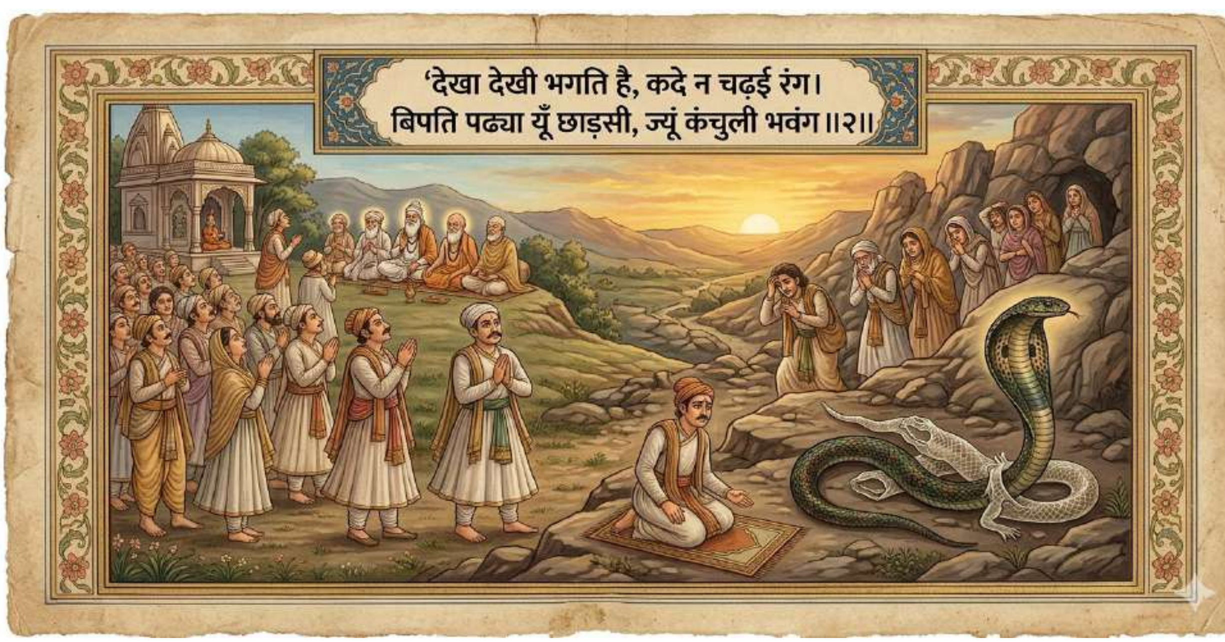
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति जितना अधिक मीठा बोलता है, उसे उतना ही बड़ा 'साधु' या सज्जन नहीं मान लेना चाहिए। वे सचेत करते हैं कि ऐसे कपटी लोग पहले तो आपको उथला पानी (थाह) दिखाकर विश्वास जीतते हैं कि रास्ता सुरक्षित और आसान है, लेकिन फिर धीरे से आपको गहरे पानी (ऊँडै) में ले जाकर डुबो देते हैं। यहाँ 'मीठी वाणी' एक जाल है और 'गहरा पानी' उस धोखे या संकट का प्रतीक है जिसमें भोला व्यक्ति फँस जाता है।

प्रासंगिकता

आज के दौर में यह साखी 'साइबर फ्रॉड', 'भ्रामक विज्ञापनों' और 'चाटुकारिता' के युग में अत्यंत सटीक बैठती है। वर्तमान समय में लोग बाहरी शिष्टाचार और मीठी बातों के झांसे में आकर अपना धन, समय और विश्वास गँवा देते हैं। कबीर हमें सिखाते हैं कि किसी के बाहरी व्यवहार से प्रभावित होने के बजाय उसके चरित्र की गहराई को परखना अनिवार्य है। यह साखी आज के समाज को 'अति-विश्वास' के प्रति सचेत करती है और 'सजग रहने' का संदेश देती है।

4.4.2 देखा देखी -- कंचुली भवंग।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि जो भक्ति केवल दूसरों की देखा-देखी या प्रदर्शन के लिए की जाती है, उस पर कभी भी ईश्वर प्रेम का वास्तविक रंग नहीं चढ़ता। ऐसी बनावटी भक्ति स्थायी नहीं होती। कबीर उदाहरण देते हैं कि जैसे ही व्यक्ति पर कोई विपत्ति या संकट आता है, वह उस भक्ति को वैसे ही छोड़ देता है जैसे सांप अपनी केंचुली (कंचुली भवंग) को त्याग देता है। अर्थात, दिखावे की निष्ठा स्वार्थ और सुख तक ही सीमित रहती है।

प्रासंगिकता

आज के 'दिखावे के युग' में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। सोशल मीडिया और बाहरी प्रदर्शन के इस दौर में लोग अक्सर दूसरों की नकल करके विचार, जीवनशैली और यहाँ तक कि आदर्शों को अपनाते हैं। जब वास्तविक जीवन में उन आदर्शों के कारण संघर्ष या कठिनाई आती है, तो लोग तुरंत अपने सिद्धांतों से समझौता कर लेते हैं। यह साखी हमें 'आंतरिक दृढ़ता' और 'मौलिकता' का संदेश देती है कि हमारे विश्वास दिखावे पर नहीं, बल्कि गहरे अनुभव और सत्य पर आधारित होने चाहिए।

4.4.3 करिए -- जाड़े रंग।।



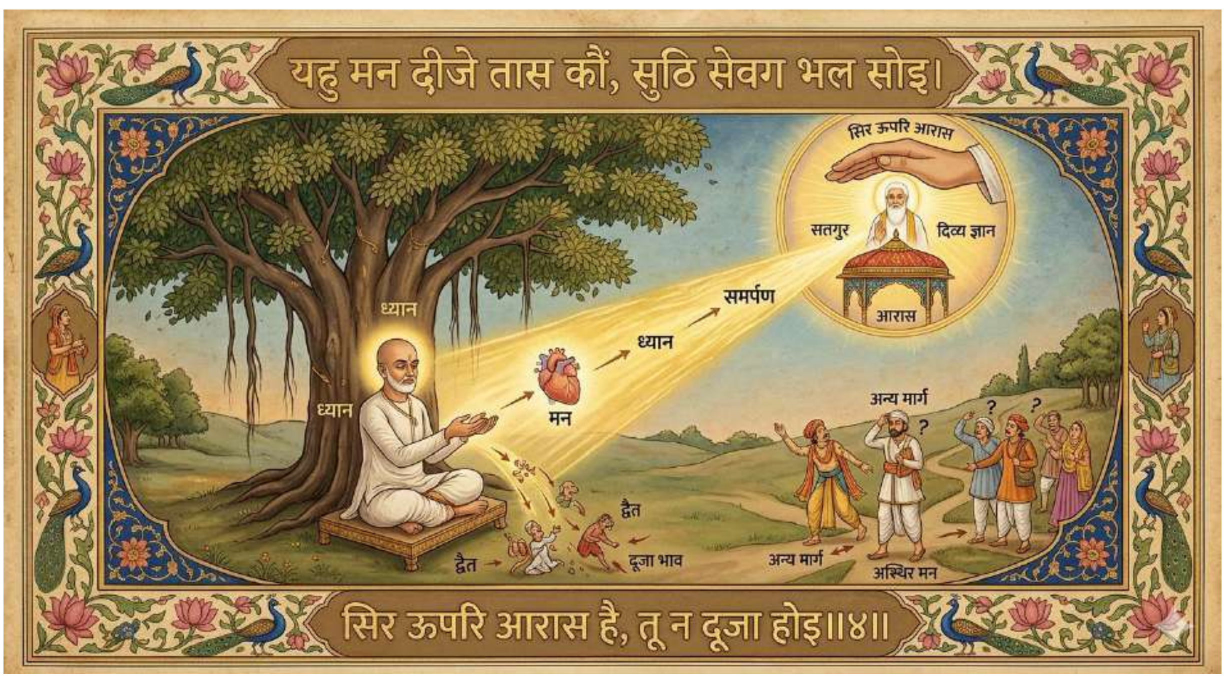
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि यदि किसी से प्रेम या मित्रता करनी हो, तो वह 'सारीपा' (मजीठ या एक प्रकार का पक्का रंग) के समान होनी चाहिए। जिस प्रकार मजीठ के रंग में रंगा हुआ कपड़ा (लोई) पुराना होकर फट जाता है और तार-तार (लीर-लीर) हो जाता है, लेकिन वह कपड़ा अपना रंग नहीं छोड़ता, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने सिद्धांतों, गुरु या ईश्वर के प्रति ऐसी निष्ठा रखनी चाहिए कि चाहे जीवन समाप्त हो जाए, पर उसका 'चरित्र का रंग' या 'निष्ठा' फीकी न पड़े।

प्रासंगिकता

आज के **'अवसरवादी'** दौर में, जहाँ लोग अपने स्वार्थ के अनुसार अपनी निष्ठाएँ और दल बदलते रहते हैं, यह साखी एक महान आदर्श प्रस्तुत करती है। वर्तमान समाज में 'पक्के चरित्र' वाले व्यक्तियों का अभाव है। कबीर हमें सिखाते हैं कि सच्चा व्यक्तित्व वह है जो कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने मूल्यों से समझौता न करे। यह साखी आज के युवाओं को यह संदेश देती है कि वे केवल सुख के साथी न बनें, बल्कि अपने लक्ष्यों और आदर्शों के प्रति इतने समर्पित हों कि विपत्ति में भी विचलित न हों।

4.4.4 यहु मन -- दूजा होइ।।



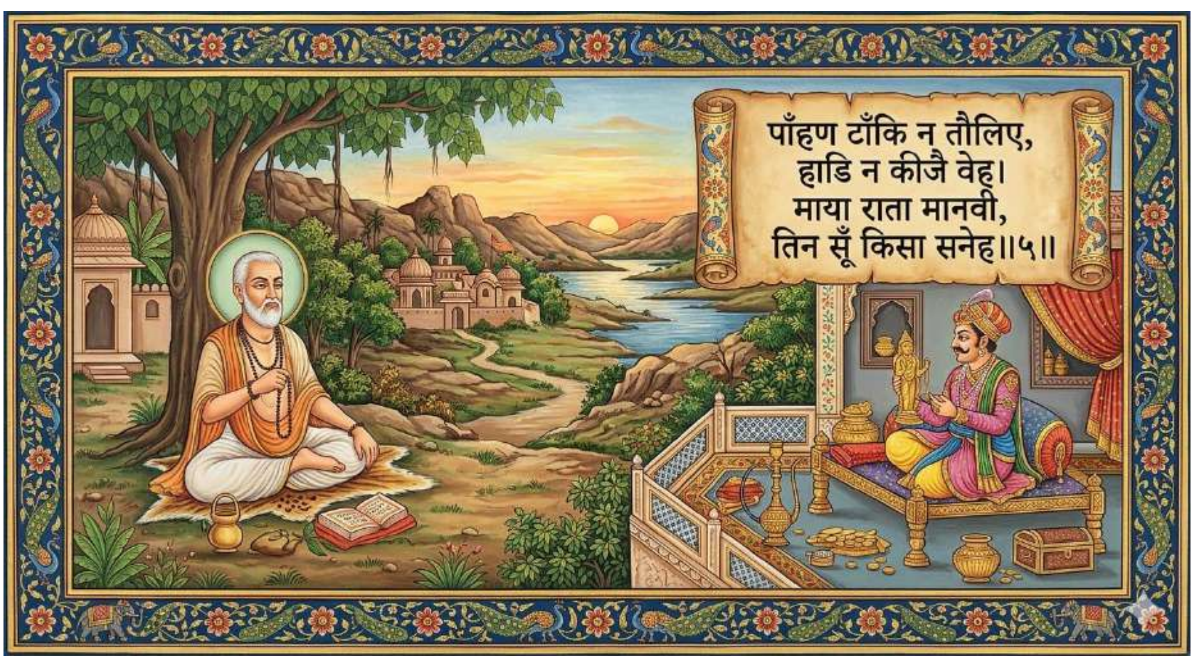
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि यह मन और अपना सर्वस्व केवल उसी (ईश्वर या गुरु) को सौंपना चाहिए जो वास्तव में एक श्रेष्ठ और सच्चा सेवक (सुठि सेवग) बनने के योग्य हो। समर्पण ऐसा होना चाहिए कि भले ही सिर के ऊपर 'आरा' (आरास - लकड़ी काटने वाला औजार) चल जाए, अर्थात प्राणों पर संकट आ जाए, तब भी मन में द्वैत भाव (तू न दूजा होइ) न आए। यहाँ कबीर का तात्पर्य है कि भक्ति या कर्तव्य के मार्ग में अडिग रहना चाहिए और कठिन से कठिन बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए।

प्रासंगिकता

आज के **'सतही और अस्थिर'** दौर में यह साखी **'एकाग्रता' (Focus)** और **'प्रतिबद्धता' (Commitment)** का पाठ पढ़ाती है। वर्तमान समय में हम अक्सर अपने लक्ष्यों से बहुत जल्दी विचलित हो जाते हैं या थोड़ी सी कठिनाई आने पर अपना मार्ग बदल लेते हैं। कबीर की यह साखी आज के युवाओं और पेशेवरों को यह संदेश देती है कि जिस कार्य या उद्देश्य को आपने चुना है, उसके प्रति आपका समर्पण 'एकनिष्ठ' होना चाहिए। यह साखी मानसिक दृढ़ता और आत्म-बलिदान की भावना को जागृत करती है, जो किसी भी महान कार्य की सफलता के लिए अनिवार्य है।

4.4.5 पाँहण टाँकि -- किसा सनेहा।।



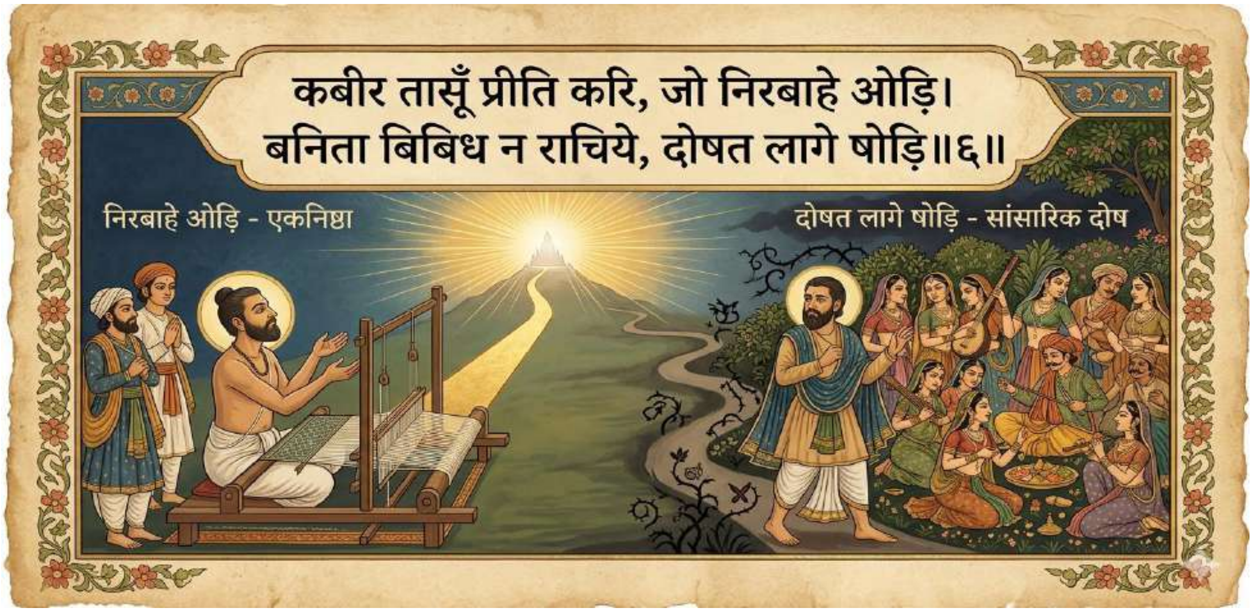
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार पत्थर (पाँहण) को तराश कर या तौल कर उसकी वास्तविकता नहीं बदली जा सकती, और जिस प्रकार हड्डियों (हाडि) को जलाकर या नष्ट करके कोई सार प्राप्त नहीं होता, उसी प्रकार जो मनुष्य केवल 'माया' (सांसारिक मोह, धन, वासना) में डूबा हुआ है, उससे प्रेम या स्नेह करना व्यर्थ है। 'माया राता मानवी' यानी वह व्यक्ति जो भौतिकता में पूरी तरह लिप्त है, उसका अंत पत्थर और अस्थियों की तरह नीरस और नश्वर है। ऐसे व्यक्ति से आध्यात्मिक या भावनात्मक लगाव रखना स्वयं को भ्रम में रखने के समान है।

प्रासंगिकता

आज के 'अत्यधिक भौतिकवादी' (Extreme Materialistic) युग में यह साखी एक कड़ा सत्य प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में लोग मानवीय रिश्तों और संवेदनाओं से ऊपर धन, संपत्ति और बाहरी दिखावे (माया) को महत्व देते हैं। कबीर हमें सचेत करते हैं कि जो व्यक्ति केवल स्वार्थ और विलासिता के पीछे भाग रहा है, वह कभी भी सच्चा साथी या मार्गदर्शक नहीं हो सकता। यह साखी आज के समाज को 'वस्तुवाद' से हटकर 'मानवता' और 'चरित्र' को प्रधानता देने की सीख देती है। यह हमें यह चुनने में मदद करती है कि हमें किन लोगों के साथ गहरे संबंध बनाने चाहिए।

4.4.6 कबीर तासूँ --षोड़ि।।



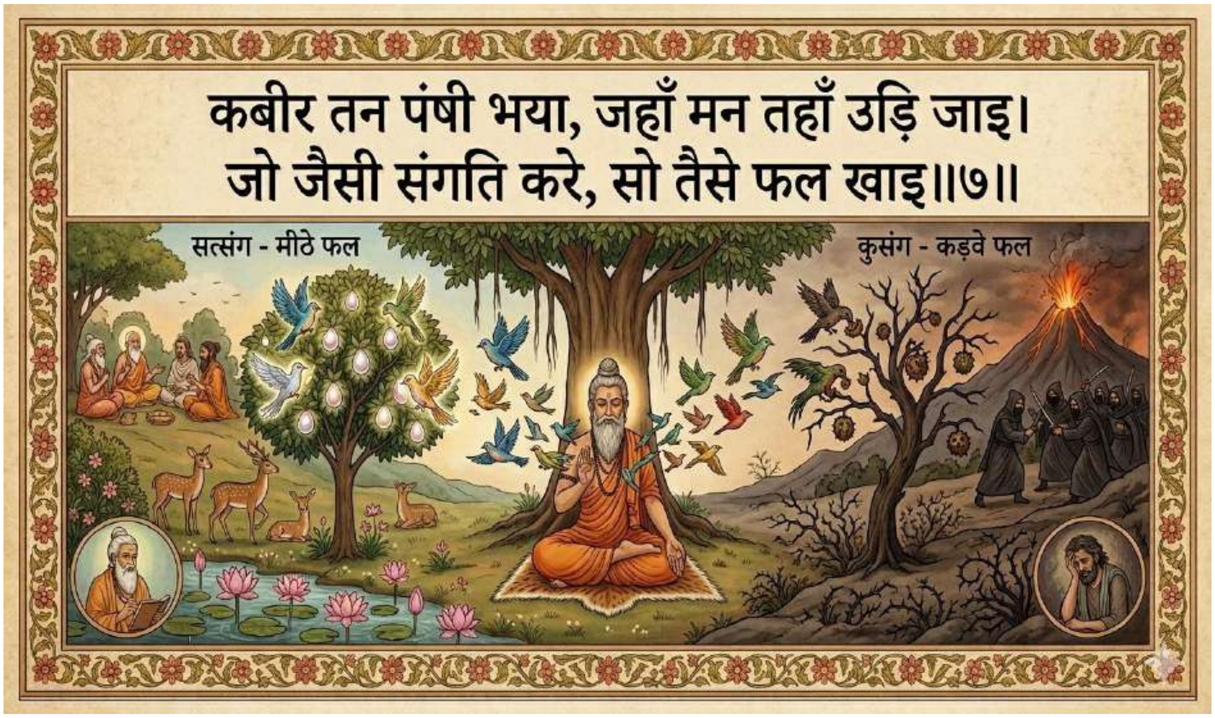
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि हे मनुष्य! प्रेम केवल उसी से करो जो जीवन के अंतिम क्षण (ओड़ि) तक साथ निभा सके, अर्थात परमात्मा या सत्य। वे चेतावनी देते हैं कि 'बनिता' (यहाँ बनिता का अर्थ केवल स्त्री नहीं, बल्कि संसार की विभिन्न मोह-माया और प्रलोभन हैं) के विविध रूपों में मत रमो। इन सांसारिक प्रलोभनों में पड़ने से व्यक्ति के चरित्र और जीवन में 'षोड़ि' (दोष या कलंक) लग जाता है, जो अंततः विनाश का कारण बनता है।

प्रासंगिकता

आज के 'क्षणभंगुर' और 'उपभोक्तावादी' समाज में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में लोग अक्सर उन चीजों या व्यक्तियों के पीछे भागते हैं जो केवल थोड़े समय के लिए सुख देते हैं। चाहे वह सोशल मीडिया की अस्थायी प्रसिद्धि हो या भौतिक वस्तुओं का संग्रह। कबीर हमें सिखाते हैं कि हमें अपनी ऊर्जा और प्रेम उन लक्ष्यों में निवेश करना चाहिए जो स्थायी हों। यह साखी आज के युवाओं को 'सतही आकर्षण' और 'गहरी प्रतिबद्धता' के बीच अंतर करना सिखाती है ताकि वे बाद में पछतावे और चारित्रिक दोषों से बच सकें।

4.4.7 कबीर तन -- फल खाइ।।



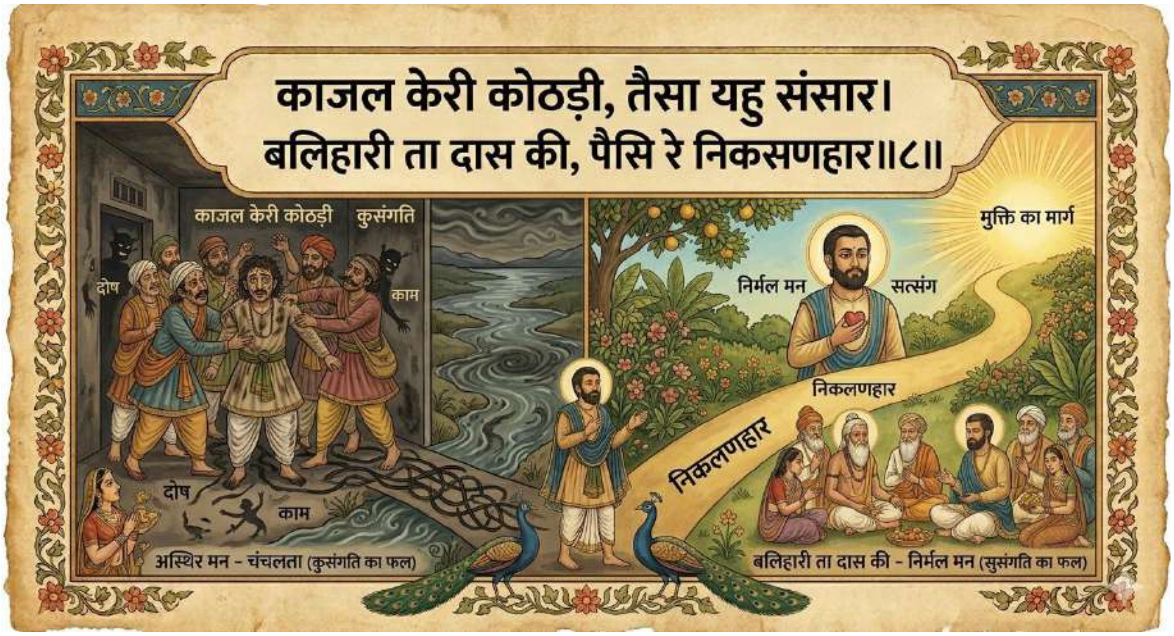
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि मनुष्य का यह शरीर एक 'पक्षी' के समान हो गया है, जिसका नियंत्रण उसके 'मन' के हाथ में है। मन रूपी पक्षी इतना चंचल है कि वह जहाँ जाना चाहता है, शरीर को वहीं उड़ा ले जाता है। आगे वे चेतावनी देते हैं कि यह मन रूपी पक्षी जिस प्रकार के लोगों या विचारों की संगति में बैठता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। यदि संगति अच्छी है तो फल सुखद और कल्याणकारी होगा, और यदि संगति बुरी है तो परिणाम भी विनाशकारी होगा।

प्रासंगिकता

आज के 'डिजिटल युग' और 'सूचनाओं के अंबार' में यह साखी अत्यधिक प्रासंगिक है। वर्तमान समय में हमारा मन इंटरनेट, सोशल मीडिया और विभिन्न विचारधाराओं के प्रभाव में 'पक्षी' की तरह हर पल कहीं न कहीं उड़ता रहता है। हम अक्सर अनजाने में ऐसी 'डिजिटल संगति' (सामग्री/कंटेंट) चुन लेते हैं जो हमारे मानसिक स्वास्थ्य और चरित्र पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। कबीर हमें याद दिलाते हैं कि हम जो देखते हैं, सुनते हैं और जिनके साथ समय बिताते हैं, वही हमारे भविष्य के 'फल' को निर्धारित करता है। यह साखी 'स्व-नियंत्रण' और 'सजग चुनाव' की महत्ता को रेखांकित करती है।

4.4.8 काजल केरी --- निकसणहार।।



भावार्थ

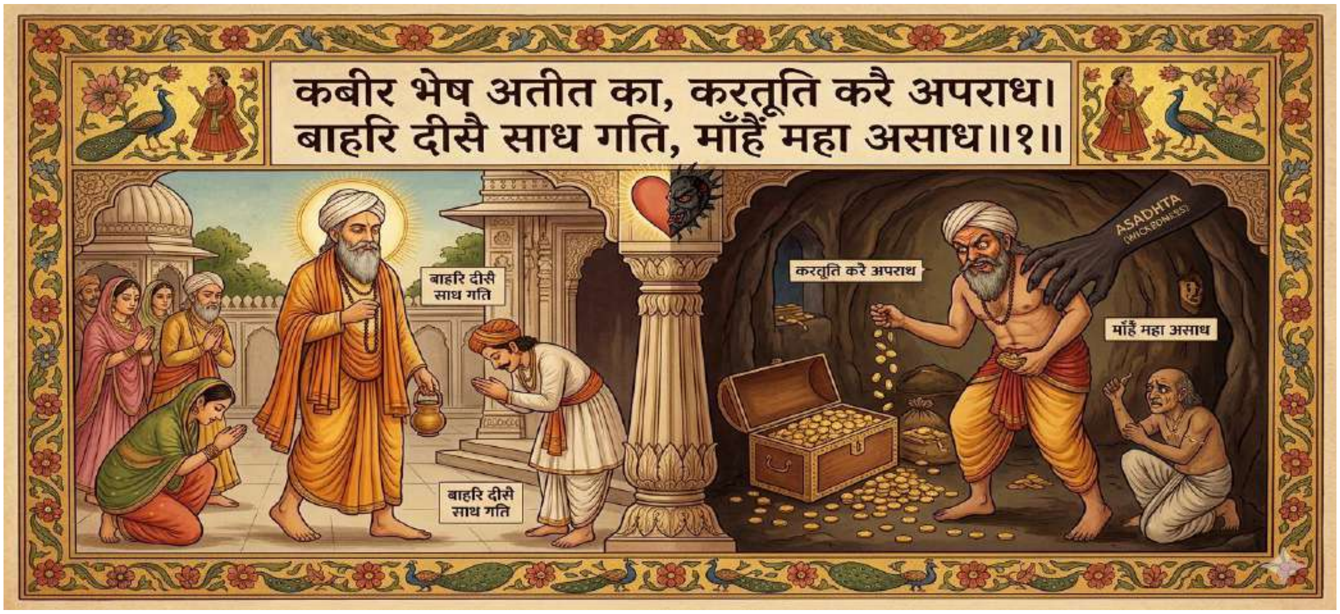
कबीर दास जी कहते हैं कि यह संसार 'काजल की कोठरी' (अंधकार और कलंक के स्थान) के समान है。 जिस प्रकार काजल की कोठरी में प्रवेश करने वाला व्यक्ति चाहे कितना भी सावधान रहे, उसे काजल की कालिख लग ही जाती है, उसी प्रकार इस संसार में रहकर दोषों और बुराइयों से बचना अत्यंत कठिन है। कबीर उस 'दास' (साधक या व्यक्ति) की बलिहारी जाते हैं, जो इस कालिख भरी कोठरी में प्रवेश तो करता है (पैसि), लेकिन बिना कोई दाग लगाए बेदाग बाहर निकल आता है (निकसणहार)।

प्रासंगिकता

आज के 'भ्रष्टाचार' और 'नैतिक पतन' के दौर में यह साखी एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाती है। वर्तमान समाज में हर क्षेत्र में लोभ, मोह और अनैतिकता की कालिख विद्यमान है। अक्सर लोग यह तर्क देते हैं कि "जब सब गलत कर रहे हैं, तो हम अकेले सही कैसे रह सकते हैं?" कबीर की यह साखी इस 'भीड़ चाल' को चुनौती देती है। यह हमें सिखाती है कि विपरीत और दूषित वातावरण में रहकर भी अपनी 'वैचारिक पवित्रता' और 'चरित्र' को अक्षुण्ण रखना ही वास्तविक महानता है। यह साखी आज के पेशेवरों और युवाओं को अपनी 'अंतरात्मा' की आवाज सुनने की प्रेरणा देती है।

4.5 असाध कौ अंग

4.5.1 कबीर भेष---असाध।।



भावार्थ

कबीरदास जी इस दोहे के माध्यम से उन लोगों पर गहरा कटाक्ष कर रहे हैं जो धर्म और आध्यात्मिकता का केवल बाहरी प्रदर्शन करते हैं। वे कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति ने शरीर पर तो वैरागी या संन्यासी का बाना धारण कर लिया है, लेकिन उसके कर्म अभी भी विकारों और अपराधों से भरे हुए हैं। वह व्यक्ति दुनिया की आँखों में धूल झोंकने के लिए बाहर से तो साधु जैसा शांत और पवित्र व्यवहार (साध गति) प्रदर्शित करता है, किंतु उसके मन के भीतर कुटिलता, कपट और असाधुता का वास है। कबीर के अनुसार, वेशभूषा बदल लेना बहुत सरल है, परंतु अपने भीतर के 'असाध' यानी दुष्ट प्रवृत्तियों को मारकर वास्तविक साधुता प्राप्त करना ही असली चुनौती है।

प्रासंगिकता

वर्तमान समय में यह दोहा 'दिखावे की संस्कृति' पर एक कड़ा प्रहार है। आज के समाज में जहाँ लोग अपने व्यक्तित्व की वास्तविकता को छिपाकर सोशल मीडिया या सार्वजनिक जीवन में एक आदर्श छवि प्रस्तुत करने की होड़ में लगे हैं, वहाँ कबीर की यह सीख अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह हमें सचेत करती है कि किसी व्यक्ति की महानता उसके पद, प्रतिष्ठा या पहनावे से नहीं, बल्कि उसके नैतिक आचरण और ईमानदारी से आँकी जानी चाहिए। यह दोहा हमें आत्म-निरीक्षण की प्रेरणा देता है कि हम बाहरी पाखंड को त्यागकर अपने भीतर की शुद्धता पर ध्यान दें, क्योंकि आडंबरपूर्ण जीवन अंततः व्यक्ति के नैतिक पतन का कारण बनता है। आधुनिक युग के छद्म वेशधारियों और नैतिक मूल्यों के दोहरे मापदंडों को समझने के लिए कबीर का यह दर्शन आज भी उतना ही सटीक है जितना सदियों पहले था।

4.5.2 उज्जल देखि -- ग्याँन।।



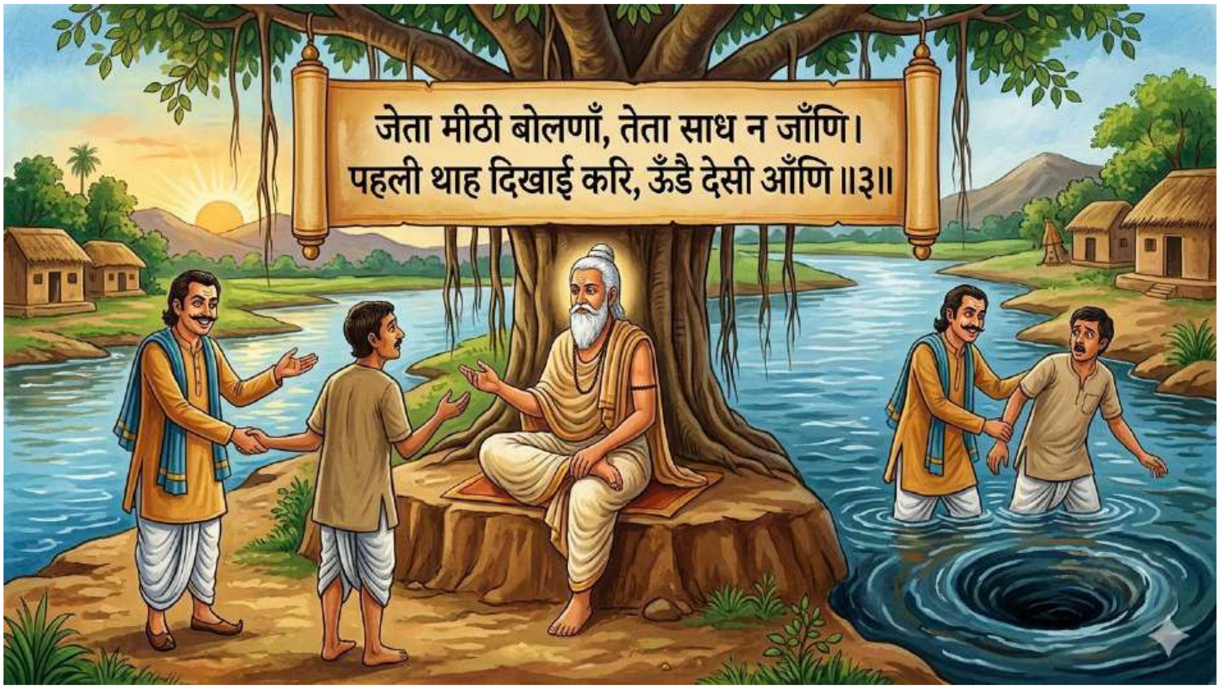
भावार्थ

कबीरदास जी इस दोहे में बगुले के उदाहरण से समाज के ढोंगी और कपटी लोगों के असली चरित्र को उजागर कर रहे हैं। वे कहते हैं कि किसी व्यक्ति के केवल 'उज्ज्वल' यानी सफेद कपड़ों या बाहरी चमक-दमक को देखकर उस पर विश्वास (धीजिये) नहीं कर लेना चाहिए। जिस प्रकार एक बगुला पानी के किनारे बिल्कुल शांत होकर ऐसे बैठता है मानो वह कोई बड़ा ध्यान लगा रहा हो, लेकिन उसका यह रूप केवल एक छलावा होता है। वह जैसे ही किसी मछली को देखता है, अत्यंत धैर्य से पास आकर उस पर झपट्टा (चपेटसी) मार देता है और उसे निगल जाता है। कबीर चेतावनी देते हैं कि इसी तरह समाज में छिपे हुए बगुला-प्रवृत्ति के कपटी लोग अपनी बाहरी सज्जनता से सीधे-सादे लोगों को भ्रमित करते हैं और मौका पाते ही उनका सब कुछ लूट लेते हैं, यहाँ तक कि उनके ज्ञान और विवेक को भी डुबो (विनाश कर) देते हैं।

प्रासंगिकता

आधुनिक समय में यह दोहा 'आकर्षक पैकेजिंग' और 'दिखावे की संस्कृति' पर एकदम सटीक बैठता है। आज के युग में ठगी, साइबर क्राइम और वित्तीय धोखाधड़ी करने वाले लोग अक्सर बेहद सभ्य, सुशिक्षित और आकर्षक वेशभूषा में सामने आते हैं ताकि लोगों का भरोसा जीता जा सके। यह दोहा हमें सिखाता है कि हमें किसी भी व्यक्ति, संस्था या लुभावने वादों पर केवल उनकी बाहरी चमक देखकर अंधविश्वास नहीं करना चाहिए। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में भी कई लोग जनता की भलाई का ढोंग (बगुला ध्यान) रचते हैं, लेकिन वास्तव में वे अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए समाज का शोषण करते हैं। कबीर का यह संदेश आज के समाज को जागरूक और सतर्क रहने की बेहद मजबूत प्रेरणा देता है।

4.5.3 जेता मीठी -- देसी आँणि।।



भावार्थ

कबीरदास जी इस साखी में अत्यंत मधुर वाणी बोलने वाले कपटी व्यक्तियों के वास्तविक चरित्र से अवगत करा रहे हैं। वे कहते हैं कि जो व्यक्ति जितना अधिक मीठा बोलता है, उसे उतना ही बड़ा सज्जन या भला इंसान मान लेने की भूल नहीं करनी चाहिए। मधुरता के पीछे अक्सर गहरे स्वार्थ छिपे होते हैं। कबीर एक सुंदर उदाहरण देते हुए कहते हैं कि ऐसे लोग उस चतुर व्यक्ति की तरह होते हैं जो किसी को नदी पार कराते समय पहले तो कम गहरा पानी (थाह) दिखाकर उसका विश्वास जीत लेता है, लेकिन जैसे ही व्यक्ति बीच धारा में पहुँचता है, वह उसे गहरे पानी (ऊँडै) में ले जाकर डुबो देता है। अर्थात्, अत्यधिक चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले लोग पहले भरोसा पैदा करते हैं और फिर ऐसा धोखा देते हैं जिससे उबरना कठिन हो जाता है।

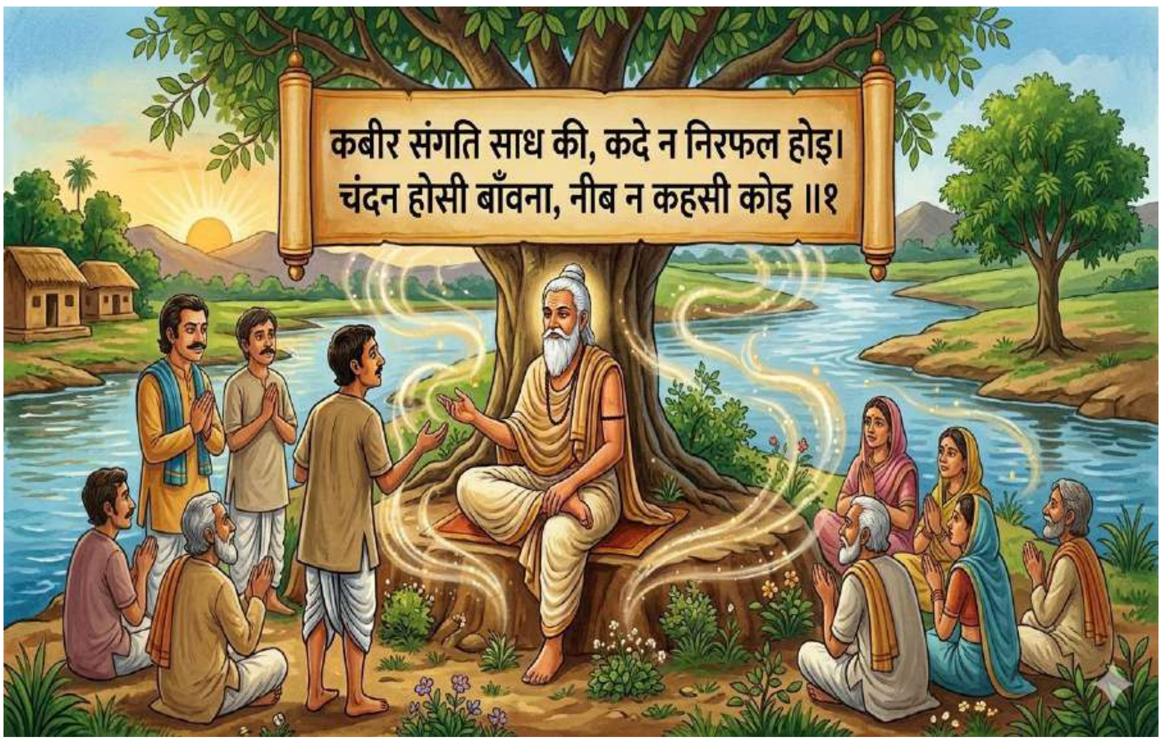
प्रासंगिकता

आज के दौर में कबीर का यह संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान समाज 'दिखावे' और 'चापलूसी' पर टिका हुआ है। व्यावसायिक जगत हो या व्यक्तिगत संबंध, लोग अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए अक्सर अत्यधिक विनम्रता और मीठी वाणी का कवच ओढ़ लेते हैं। आज के समय में होने वाले ऑनलाइन फ्रॉड और ठगी के

मामले भी इसी सच्चाई की पुष्टि करते हैं, जहाँ अपराधी पहले बहुत मीठी बातों से व्यक्ति को प्रलोभन देते हैं और फिर उसे भारी नुकसान पहुँचाते हैं। यह दोहा हमें सिखाता है कि किसी भी व्यक्ति की बातों के आकर्षण में फँसने के बजाय उसके वास्तविक उद्देश्यों और चरित्र को परखना अनिवार्य है। यह हमें अंधविश्वास से बचकर सतर्क जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

4.6 साध कौ अंग

4.6.1 कबीर संगति -- कहती कोइ।।



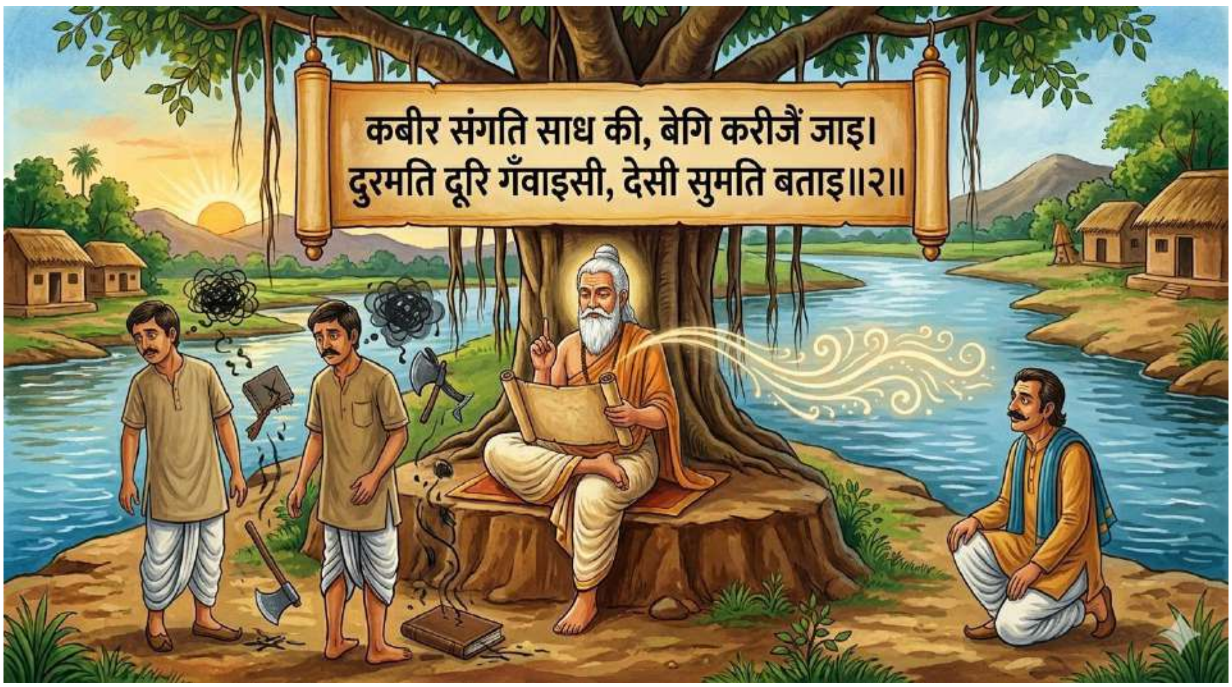
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि सज्जन पुरुषों या साधुओं की संगति कभी भी निष्फल (व्यर्थ) नहीं जाती। वे एक बहुत सुंदर प्राकृतिक उदाहरण देते हैं कि यदि चंदन के वृक्ष के पास कोई 'बाँवना' (बौना या छोटा वृक्ष) भी उगता है, तो वह चंदन के संपर्क में रहकर उसकी सुगंध को सोख लेता है और स्वयं भी चंदन जैसा सुगंधित हो जाता है। उस सुगंधित हो चुके वृक्ष को फिर कोई 'नीम' (नीब) जैसा कड़वा नहीं कहता। अर्थात्, अच्छी संगति साधारण व्यक्ति के स्वभाव को भी श्रेष्ठ बना देती है।

प्रासंगिकता

आज के 'प्रतिस्पर्धा' और 'मानसिक तनाव' वाले समाज में यह साखी सकारात्मक वातावरण के महत्व को सिद्ध करती है। वर्तमान समय में हम अक्सर नकारात्मकता और ईर्ष्या से घिरे रहते हैं। कबीर हमें सिखाते हैं कि यदि हम ज्ञानी और सकारात्मक सोच वाले लोगों के संपर्क में रहेंगे, तो हमारे भीतर के विकार (कड़वाहट) स्वतः ही समाप्त हो जाएंगे और हम भी समाज के लिए उपयोगी (सुगंधित) बन सकेंगे। यह साखी 'नेटवर्किंग' और 'परामर्श' (Mentorship) की आधुनिक अवधारणा को आध्यात्मिक आधार प्रदान करती है।

4.6.2 कबीर संगति --- सुमति बताइ।।



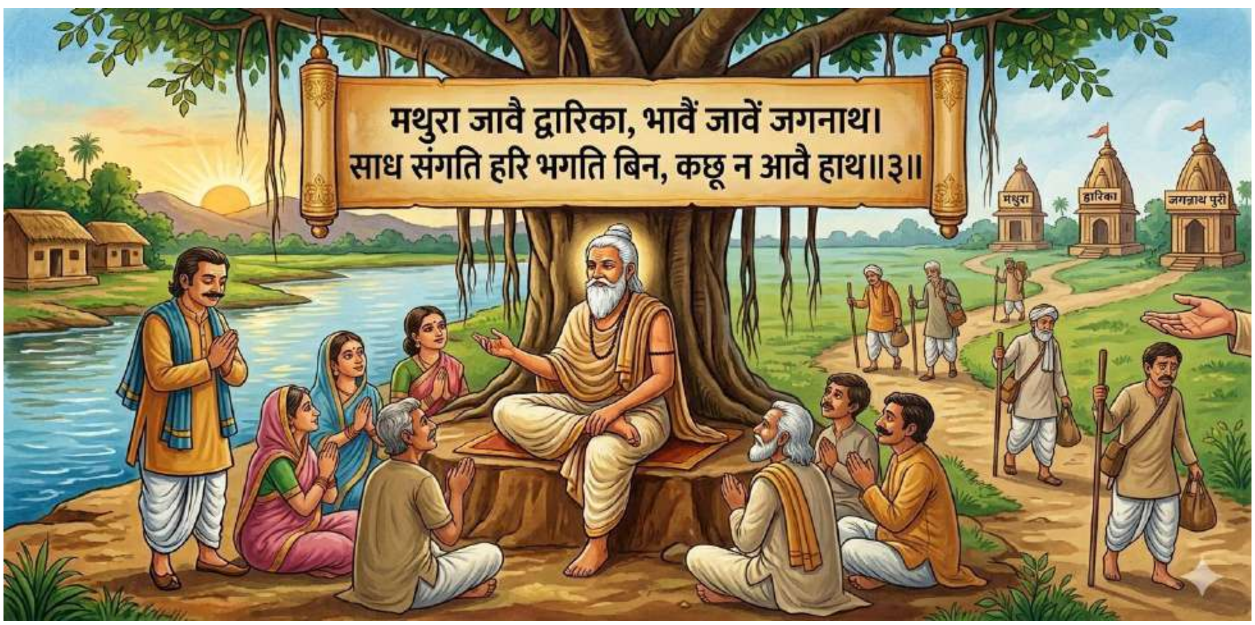
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि यदि कहीं सज्जन पुरुषों (साधु) का साथ मिले, तो बिना विलंब किए तुरंत उनकी संगति कर लेनी चाहिए। इसका कारण यह है कि सत्संगति मनुष्य के भीतर की 'दुरमति' (बुरी बुद्धि या नकारात्मक विचारों) को जड़ से मिटा देती है और उसे 'सुमति' (श्रेष्ठ बुद्धि और सही मार्ग) का बोध कराती है। अर्थात्, अच्छे लोगों का साथ वैचारिक शुद्धिकरण का सबसे तीव्र माध्यम है।

प्रासंगिकता

आज के **'सूचना अतिप्रवाह' (Information Overload)** और **'भ्रामक विचारधाराओं'** के दौर में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में व्यक्ति सोशल मीडिया और आसपास के परिवेश से कई तरह की नकारात्मक बातें (दुरमति) ग्रहण करता है। कबीर हमें सिखाते हैं कि अपने मानसिक स्वास्थ्य और सही निर्णय लेने की क्षमता को बनाए रखने के लिए हमें श्रेष्ठ लेखकों, विचारकों और सकारात्मक मित्रों की संगति 'शीघ्र' (बेगि) अपनानी चाहिए। यह साखी **'मानसिक स्वास्थ्य'** और **'सकारात्मक जीवनशैली'** के लिए एक सुरक्षा कवच की तरह है।

4.6.3 मथुरा जावै -- आवै हाथ।।



भावार्थ

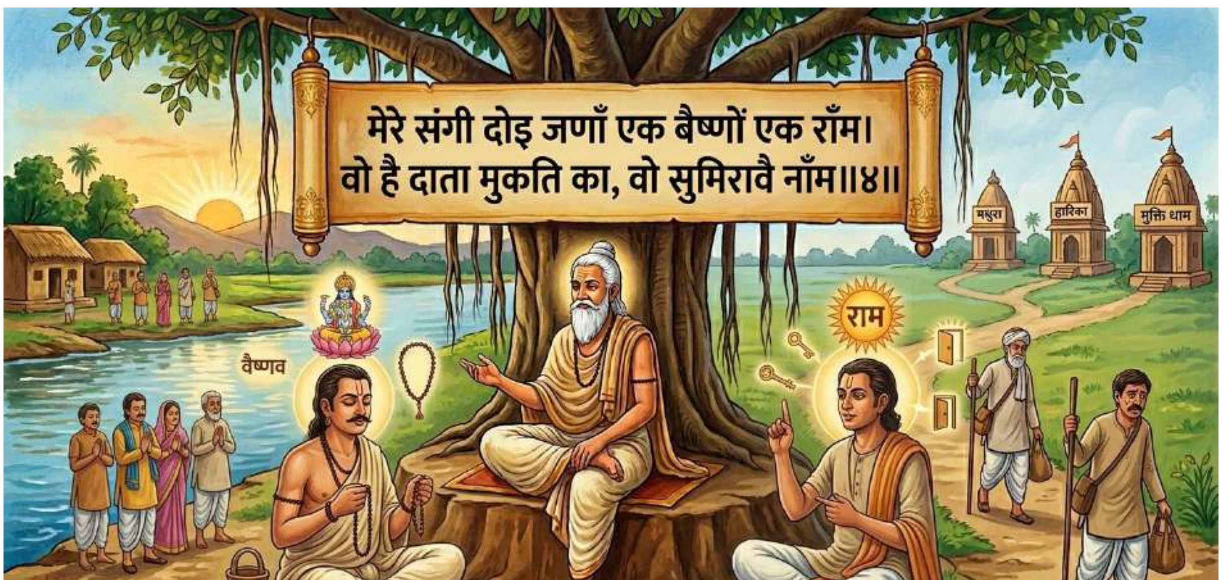
कबीर दास जी कहते हैं कि कोई व्यक्ति चाहे मथुरा जाए, द्वारिका जाए या जगन्नाथ पुरी की यात्रा करे, लेकिन यदि उसके जीवन में 'साधु की संगति' (सज्जनों का साथ) और 'हरि की भक्ति' (सच्चा प्रेम) नहीं है, तो इन तीर्थ यात्राओं से उसे कुछ भी हासिल नहीं होने वाला। कबीर का मानना है कि ईश्वर बाहर के मंदिरों में नहीं, बल्कि हृदय की शुद्धि और

ज्ञानियों के सान्निध्य में मिलता है। बिना आत्म-ज्ञान और सत्संग के, सारी बाहरी भाग-दौड़ व्यर्थ है।

प्रासंगिकता

आज के **'दिखावे'** और **'मैकेनिकल लाइफस्टाइल'** के दौर में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में लोग शांति और समाधान के लिए लंबी यात्राएँ करते हैं, धार्मिक स्थलों पर भीड़ लगाते हैं, लेकिन अपने व्यवहार और विचारों में परिवर्तन नहीं लाते। कबीर हमें सिखाते हैं कि **'शांति'** और **'सत्य'** बाहर किसी भौगोलिक स्थान पर नहीं, बल्कि अच्छी संगति और अपने भीतर के शुद्ध भावों में है। यह साखी आज के समाज को **'बाहाडंबरों'** से हटाकर **'गुण-ग्रहण'** की ओर प्रवृत्त करती है।

4. 6. 4 **मेरे संगी** -- **नाँम।।**



भावार्थ

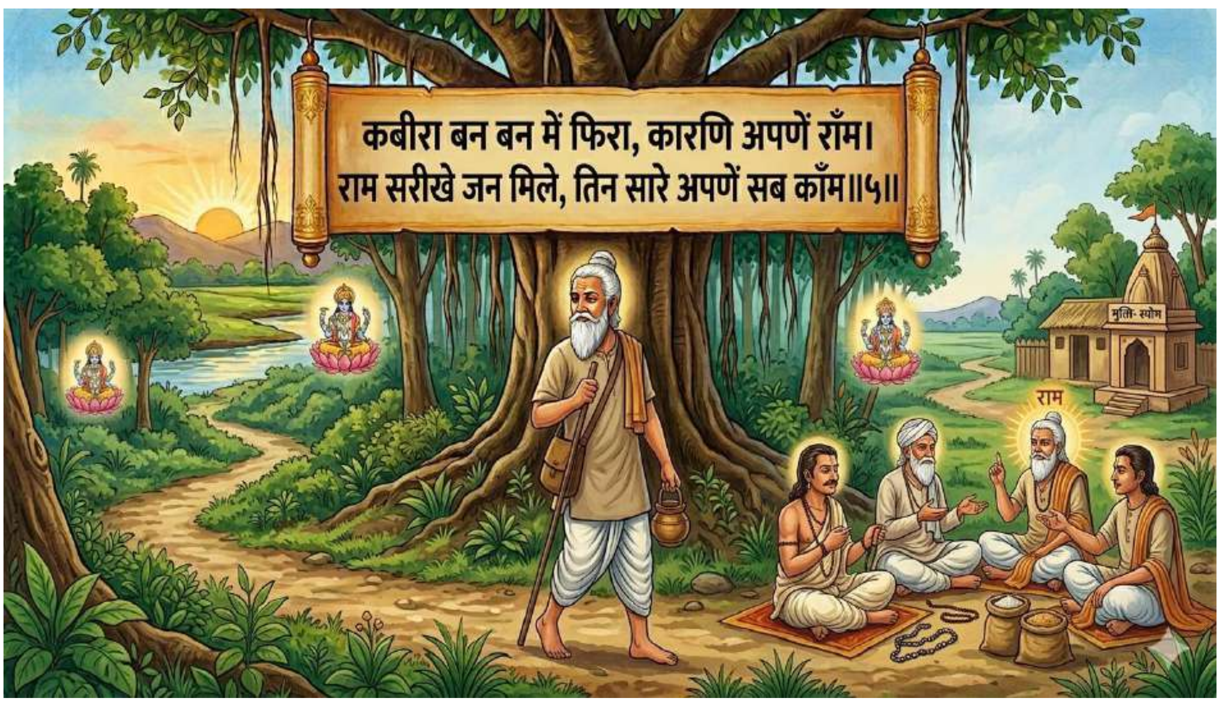
कबीर दास जी कहते हैं कि इस संसार में मेरे केवल दो ही सच्चे साथी (संगी) हैं– एक 'वैष्णव' (प्रभु का भक्त) और दूसरे स्वयं 'राम' (परमात्मा)। वे इन दोनों की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि 'राम' तो वह दाता हैं जो अंततः मोक्ष या मुक्ति प्रदान करते हैं, जबकि 'वैष्णव' (भक्त या गुरु) वह है जो निरंतर प्रभु के 'नाम' का स्मरण कराता है

और भक्ति के मार्ग पर चलना सिखाता है। बिना भक्त की संगति के भगवान का नाम नहीं मिलता, और बिना भगवान के मुक्ति नहीं मिलती।

प्रासंगिकता

आज के 'अकेलेपन' और 'अस्थिर रिश्तों' के दौर में यह साखी जीवन के स्थायी साथियों की पहचान कराती है। वर्तमान समय में लोग भौतिक संपदा और स्वार्थी मित्रों के पीछे भागते हैं, जो संकट में साथ छोड़ देते हैं। कबीर हमें सिखाते हैं कि वास्तविक सहारा 'आध्यात्मिक ज्ञान' और 'सत्संग' है। यह साखी आज के समाज को यह संदेश देती है कि मानसिक शांति और जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें ऐसे साथियों की आवश्यकता है जो हमें हमारे नैतिक और आध्यात्मिक कर्तव्यों की याद दिलाते रहें।

4.6.5 कबीरा -- सब काँम।।



भावार्थ

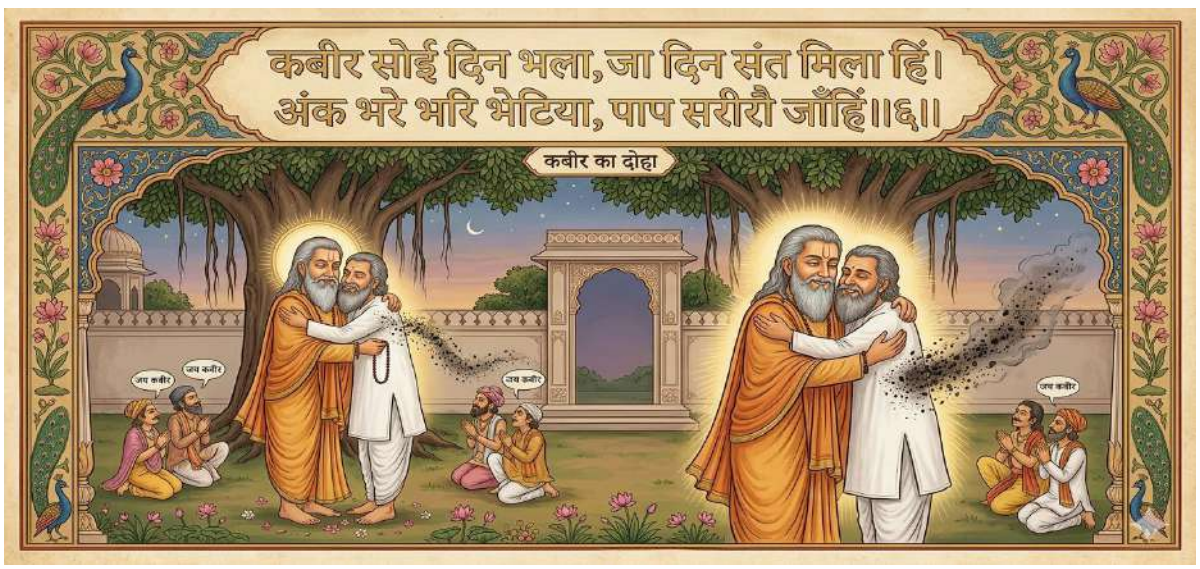
कबीर दास जी कहते हैं कि मैं अपने 'राम' (परमात्मा या सत्य) को पाने के लिए दर-दर, वन-वन भटकता रहा। लेकिन जब मुझे 'राम सरीखे जन' (ईश्वर के समान पवित्र और ज्ञानी संत) मिले, तो मेरे भटकाव का अंत हो गया और मेरे सारे अधूरे काम (आध्यात्मिक और मानसिक लक्ष्य) स्वतः ही सिद्ध हो गए। यहाँ कबीर स्पष्ट करते हैं कि निराकार

सत्य या ईश्वर की खोज तब तक सफल नहीं होती, जब तक उस सत्य को जीने वाले साक्षात मार्गदर्शक (गुरु या संत) नहीं मिल जाते।

प्रासंगिकता

आज के **'भ्रम' (Confusion)** और **'अति-सूचना'** के युग में यह साखी सही **'मार्गदर्शक' (Mentor)** की आवश्यकता को दर्शाती है। वर्तमान समय में युवा अपने करियर, जीवन के उद्देश्य और शांति की तलाश में 'वन-वन' भटक रहे हैं (विभिन्न कोर्सेज, मोटिवेशनल वीडियो और इंटरनेट के सागर में)। कबीर हमें सिखाते हैं कि लक्ष्य की प्राप्ति केवल भटकने से नहीं, बल्कि उस लक्ष्य तक पहुँचे हुए अनुभवी व्यक्तियों की शरण में जाने से होती है। यह साखी आज के समाज को **'अनुभव'** और **'ज्ञानी नेतृत्व'** के महत्व को समझने की सीख देती है।

4.6.6 सोई -- जाँहिं।।



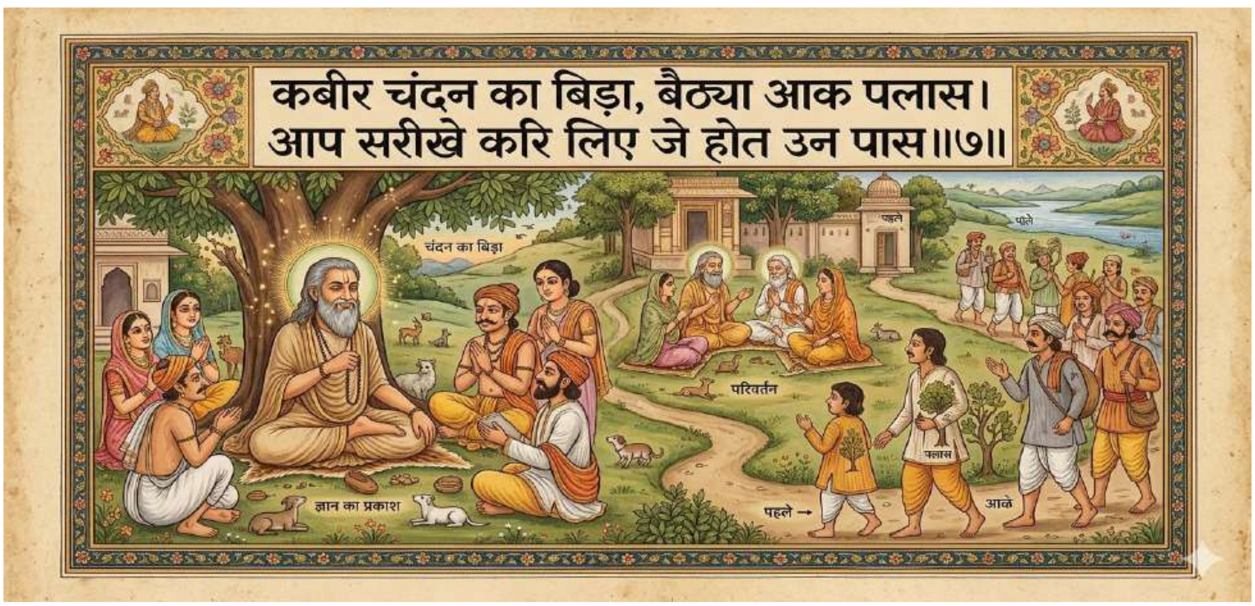
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि जीवन का वही दिन वास्तव में सार्थक और शुभ है, जिस दिन किसी संत या ज्ञानी पुरुष से भेंट होती है। जब ऐसे श्रेष्ठ पुरुष से हृदय खोलकर (अंक भरे भरि) मिला जाता है, तो उनके सान्निध्य और सकारात्मक ऊर्जा से शरीर और मन के समस्त पाप (नकारात्मकता, विकार और मानसिक बोझ) नष्ट हो जाते हैं। यहाँ 'भेंट' केवल शारीरिक मिलन नहीं, बल्कि विचारों का एकाकार होना है।

प्रासंगिकता

आज के 'अवसाद' (Depression) और 'अकेलेपन' के युग में यह साखी 'परामर्श' (Counseling) और 'सकारात्मक सान्निध्य' के महत्व को दर्शाती है। वर्तमान समय में हम अक्सर नकारात्मक विचारों के कारण मानसिक रूप से अस्वस्थ महसूस करते हैं। कबीर हमें सिखाते हैं कि किसी ज्ञानी या निस्वार्थ व्यक्ति से मिलकर अपने मन की बात साझा करना और उनके विचारों को अपनाना आत्म-शुद्धि का सबसे बड़ा मार्ग है। यह साखी आज के समाज को 'मानसिक स्वास्थ्य' के लिए सही मार्गदर्शकों और मित्रों की तलाश करने की प्रेरणा देती है।

4.6.7 कबीर चंदन -- उन पास।।



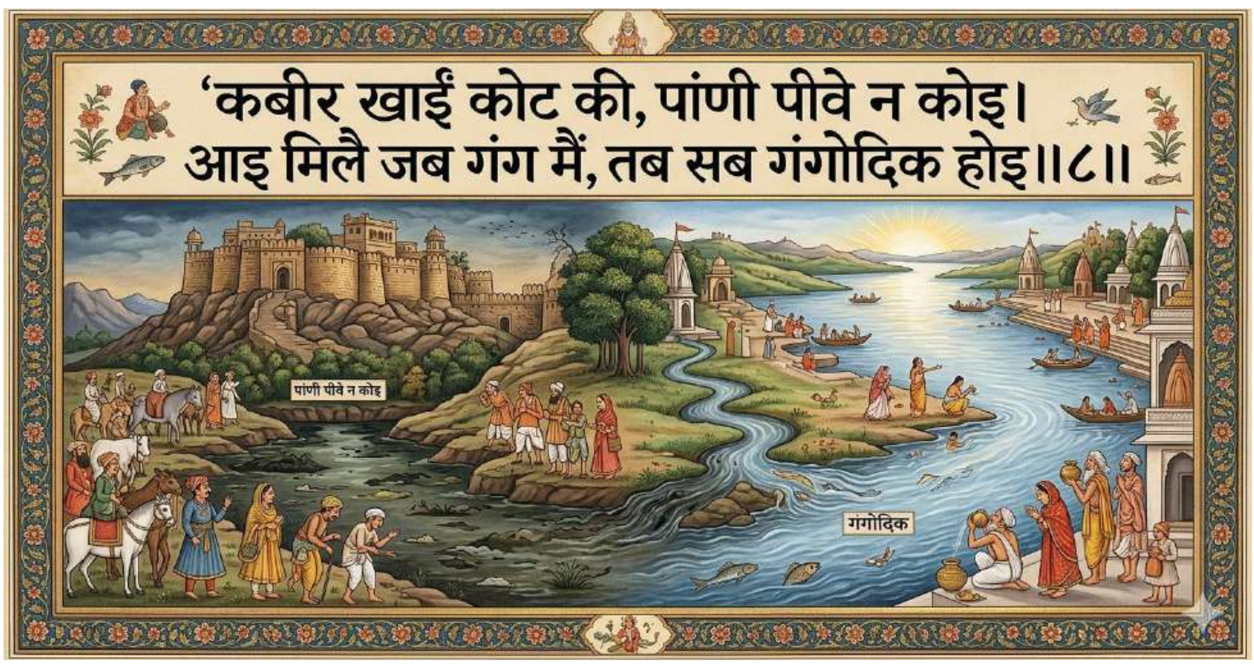
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि चंदन का वृक्ष (बिड़ा) आक और पलास जैसे साधारण और गंधहीन वृक्षों के बीच में बैठा रहता है। अपनी श्रेष्ठता का अहंकार करने के बजाय, चंदन अपनी सुगंध का प्रसार इस प्रकार करता है कि उसके पास रहने वाले आक और पलास भी चंदन के समान ही सुगंधित हो जाते हैं। चंदन ने उन्हें भी 'अपने सरीखा' (अपने जैसा) बना लिया। यहाँ चंदन 'सज्जन पुरुष' का और आक-पलास 'साधारण मनुष्यों' का प्रतीक हैं।

प्रासंगिकता

आज के **'विभाजित'** और **'स्वार्थी'** समाज में यह साखी **'सकारात्मक नेतृत्व' (Positive Leadership)** का आदर्श प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में लोग अक्सर अपनी योग्यता या पद का उपयोग दूसरों को छोटा दिखाने के लिए करते हैं। कबीर हमें सिखाते हैं कि वास्तविक महानता वह है जो दूसरों को भी अपने समान महान और गुणवान बना दे। यह साखी आज के समाज को **'समावेशिता'** और **'लोक-कल्याण'** के लिए प्रेरित करती है, जहाँ एक श्रेष्ठ व्यक्ति पूरे परिवेश को सकारात्मक बना सकता है।

4.6.8 कबीर खाई --- गंगोदिक होइ।।



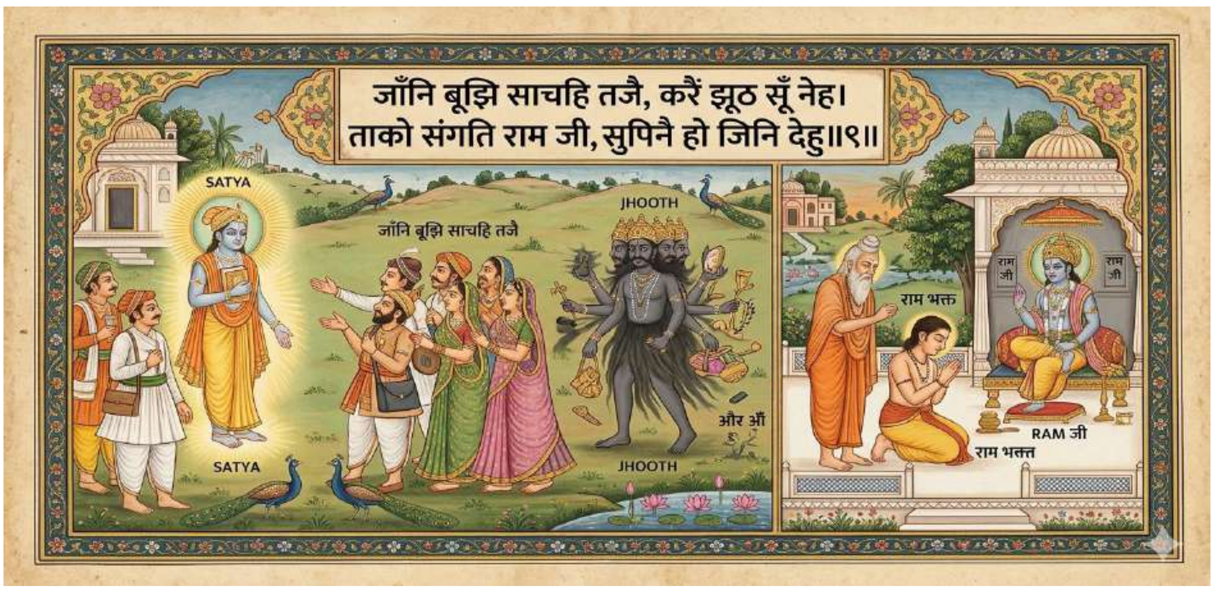
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि किले की खाई (कोट की खाई) में भरा हुआ पानी गंदा और स्थिर होता है, जिसे कोई पीना पसंद नहीं करता। लेकिन वही गंदा पानी जब बहकर गंगा नदी में मिल जाता है, तो वह अपनी पुरानी अशुद्ध पहचान खोकर स्वयं 'गंगोदिक' (गंगा जल) बन जाता है। गंगा में मिलने के बाद उस पानी की वही पवित्रता और महत्ता हो जाती है जो गंगा जल की होती है। यहाँ 'खाई का पानी' एक साधारण या दोषपूर्ण व्यक्ति का और 'गंगा' एक महान गुरु या सत्संगति का प्रतीक है।

प्रासंगिकता

आज के **'सोशल रिफॉर्म' (Social Reform)** और **'पुनर्वास' (Rehabilitation)** के दौर में यह साखी बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समाज में अक्सर किसी व्यक्ति की पुरानी गलतियों या उसकी पृष्ठभूमि के आधार पर उसे हमेशा के लिए नकार दिया जाता है। कबीर हमें सिखाते हैं कि कोई भी व्यक्ति स्थायी रूप से 'बुरा' या 'अनुपयोगी' नहीं होता। यदि उसे सही वातावरण, मार्गदर्शन और श्रेष्ठ विचार (गंगा) मिलें, तो वह भी समाज का एक अत्यंत सम्मानित और पवित्र अंग बन सकता है। यह साखी **'सुधारवाद'** और **'सकारात्मक परिवर्तन'** में विश्वास पैदा करती है।

4.6.9 जाँनि बूझि -- जिनि देहु।।



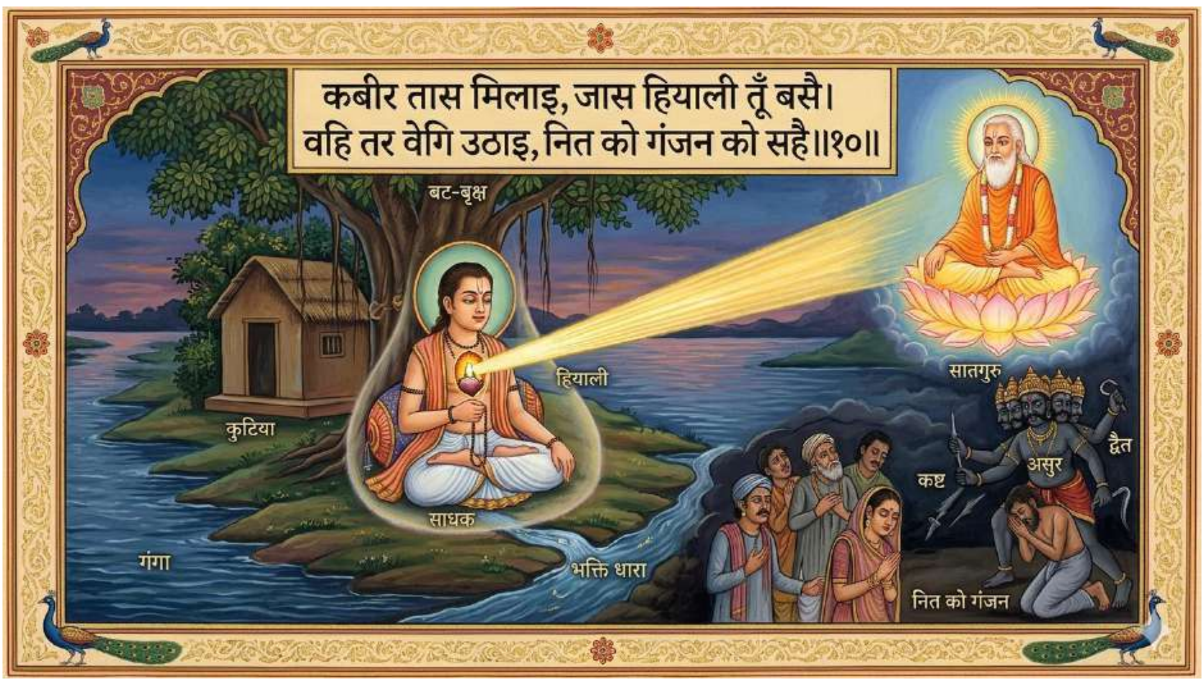
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति सत्य को जानते और समझते हुए भी उसका त्याग कर देता है (जाँनि बूझि साचहि तजै) और झूठ व अधर्म से प्रेम करता है, वह अत्यंत त्याज्य है। कबीर परमात्मा (राम जी) से प्रार्थना करते हैं कि ऐसे व्यक्ति की संगति उन्हें कभी स्वप्न में भी न मिले। यहाँ कबीर स्पष्ट कर रहे हैं कि अज्ञानवश की गई गलती क्षम्य हो सकती है, परंतु जानबूझकर सत्य का मार्ग छोड़ना व्यक्ति के चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा है।

प्रासंगिकता

आज के 'पोस्ट-ट्रुथ' (Post-Truth) और 'फेक न्यूज़' के दौर में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में लोग अपने स्वार्थ, राजनीतिक लाभ या व्यक्तिगत लाभ के लिए जानते हुए भी झूठ का सहारा लेते हैं और सत्य को दबाते हैं। कबीर हमें सिखाते हैं कि समाज के लिए सबसे घातक वे लोग हैं जो 'सत्य' को पहचानते तो हैं पर उसे स्वीकार करने का साहस नहीं रखते। यह साखी आज के समाज को 'वैचारिक ईमानदारी' और 'सत्यनिष्ठा' (Integrity) की ओर लौटने का संदेश देती है।

4.6.10 कबीर तास -- को सहै।।



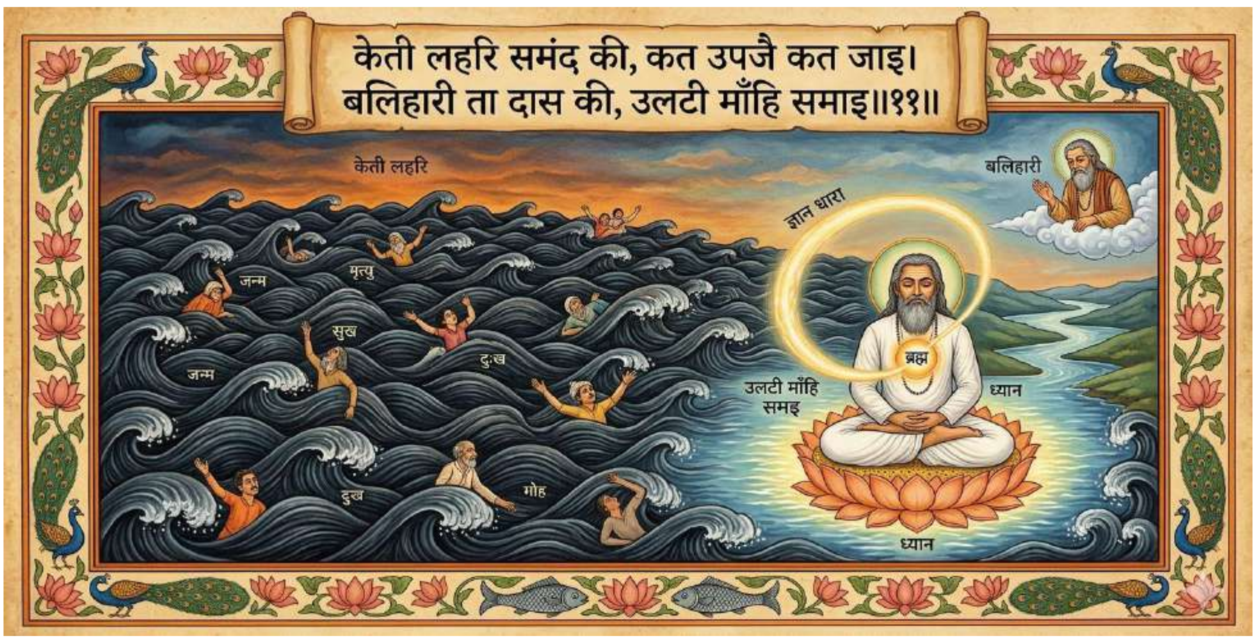
भावार्थ

कबीर दास जी परमात्मा से विनती करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु! मुझे केवल उन्हीं लोगों से मिलाओ जिनके हृदय (हियाली) में आप बसते हों। यदि ऐसे 'राम-स्नेही' लोग नहीं मिल सकते, तो मुझे इस संसार रूपी वृक्ष (यहि तर) से शीघ्र उठा लो (अर्थात् मृत्यु दे दो)। वे कहते हैं कि रोज-रोज का यह 'गंजन' (संसार की व्यर्थ की बातें, तिरस्कार और सांसारिक क्लेश) अब सहा नहीं जाता। कबीर का मानना है कि बिना वैचारिक और आध्यात्मिक तालमेल के लोगों के बीच रहना आत्मिक प्रताड़ना के समान है।

प्रासंगिकता

आज के **'प्रतिस्पर्धी'** और **'विषाक्त' (Toxic)** सामाजिक परिवेश में यह साखी बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में लोग अक्सर ऐसे वातावरण में फँस जाते हैं जहाँ उनके विचारों, मूल्यों और संवेदनाओं का कोई सम्मान नहीं होता। कबीर हमें सिखाते हैं कि मानसिक शांति के लिए **'समान विचारधारा वाले' (Like-minded)** और सकारात्मक लोगों का साथ होना अनिवार्य है। यह साखी आज के दौर में 'मानसिक स्वास्थ्य' के लिए अपनी **'सीमाएं तय करने' (Setting Boundaries)** और गलत संगति से दूरी बनाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

4.6.11 केती लहरि --माँहि समाइ।।



भावार्थ

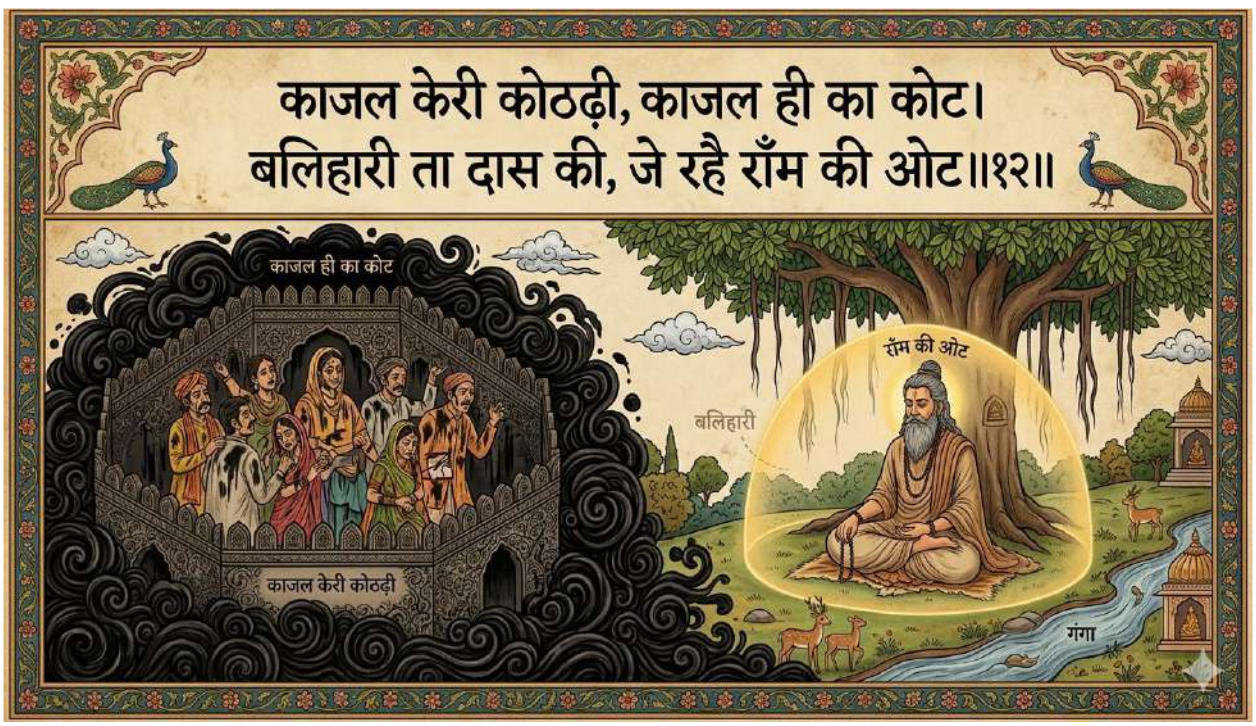
कबीर दास जी समुद्र और उसकी लहरों का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि समुद्र में अनगिनत लहरें उठती हैं और फिर वापस उसी में विलीन हो जाती हैं। वे प्रश्न करते हैं कि ये लहरें कहाँ से पैदा होती हैं और कहाँ चली जाती हैं? (अर्थात, संसार का आवागमन चक्र अनंत है)। कबीर उस 'दास' (साधक) की प्रशंसा करते हैं, जो लहर की तरह बाहर की ओर भटकने

के बजाय अपनी दिशा 'उलट' लेता है और वापस अपने मूल स्रोत (परमात्मा) के भीतर समा जाता है।

प्रासंगिकता

आज के 'उपभोक्तावादी' और 'विचलित' समाज में यह साखी 'स्व-अन्वेषण' की दिशा दिखाती है। वर्तमान समय में मनुष्य का मन बाहरी इच्छाओं, सूचनाओं और आकर्षणों की 'लहरों' में निरंतर बहता रहता है, जिससे वह मानसिक शांति खो देता है। कबीर हमें सिखाते हैं कि शांति बाहर नहीं, बल्कि अपने मूल स्वभाव में लौटने में है। यह साखी आज के दौर में 'माइंडफुलनेस' (Mindfulness) और अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने के महत्व को रेखांकित करती है।

4.6.12 काजल केरी -- की ओट।।



भावार्थ

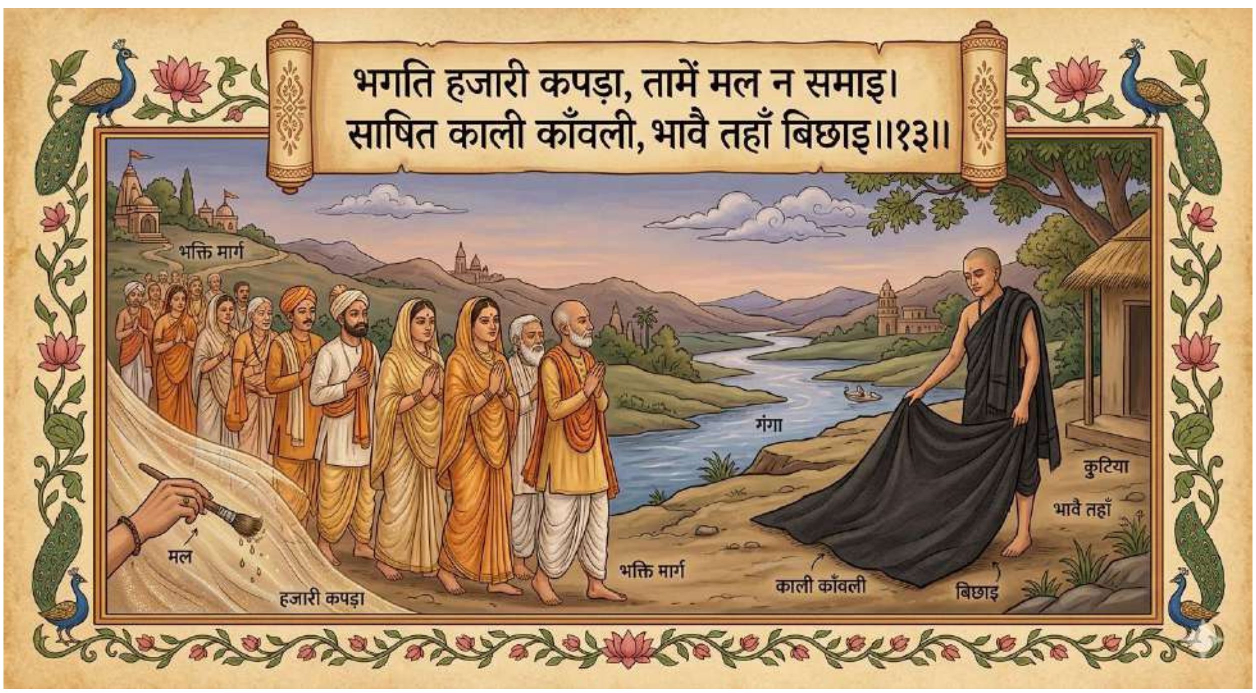
कबीर दास जी इस संसार की तुलना 'काजल की कोठरी' (अंधकार और कालिख से भरा कमरा) से करते हैं। वे कहते हैं कि यह संसार दोषों, बुराइयों और प्रलोभनों का एक ऐसा

किला (कोट) है जहाँ पग-पग पर व्यक्ति के चरित्र पर 'कालिख' लगने का डर रहता है। ऐसे विकट वातावरण में भी कबीर उस 'दास' (साधक) की सराहना करते हैं और उस पर न्योछावर होते हैं, जो परमात्मा (राम) की शरण या 'ओट' लेकर स्वयं को निष्कलंक और बेदाग बचाए रखता है।

प्रासंगिकता

आज के 'नैतिक संकट' और 'भ्रष्टाचार' के युग में यह साखी अत्यंत सटीक है। वर्तमान समय में हम देखते हैं कि व्यापार, राजनीति और यहाँ तक कि व्यक्तिगत संबंधों में भी 'शॉर्टकट' और अनैतिकता की कालिख चारों ओर फैली है। कबीर हमें सिखाते हैं कि यदि व्यक्ति के पास सुदृढ़ 'नैतिक आधार' और 'ईश्वर/सत्य' के प्रति निष्ठा हो, तो वह इस कलुषित वातावरण में रहकर भी अपने चरित्र को उज्ज्वल रख सकता है। यह साखी आज के दौर में 'चारित्रिक दृढ़ता' का सबसे बड़ा मंत्र है।

4.6.13 भगति हजारी -- तहाँ बिछाइ।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि सच्ची 'भक्ति' उस कीमती और महीन 'हजारी कपड़े' (मलमल का श्रेष्ठ वस्त्र) के समान है, जिसमें गंदगी का एक कण भी नहीं समा सकता। अर्थात्, जो

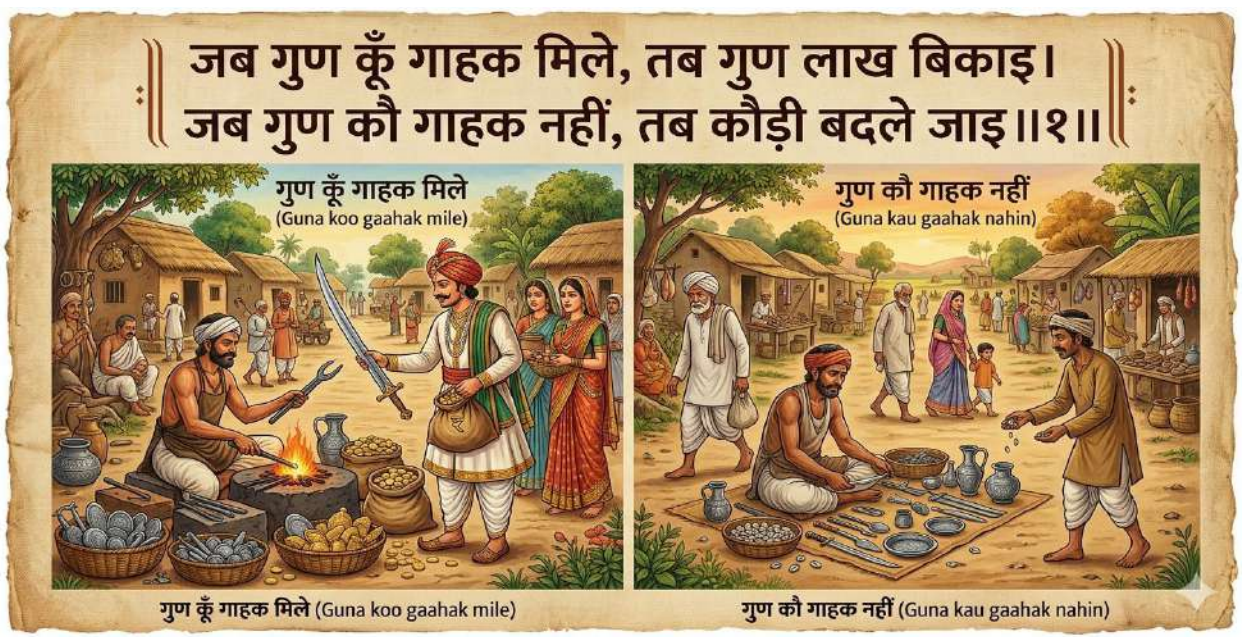
व्यक्ति सच्चे मन से भक्ति में लीन है, उसके भीतर बुराइयाँ प्रवेश नहीं कर पातीं। इसके विपरीत, जो केवल ऊपरी 'साख' (दिखावे का ज्ञान या सांसारिक विद्वत्ता) रखते हैं, उनका व्यक्तित्व उस 'काली कमली' (कंबल) के समान है, जिसे कहीं भी बिछाया जा सकता है और जिस पर कालिख या गंदगी का पता भी नहीं चलता।

प्रासंगिकता

आज के 'दिखावे' और 'दोहरे व्यक्तित्व' वाले समाज में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में लोग बाहरी ज्ञान और डिग्रियों का प्रदर्शन तो बहुत करते हैं (काली काँवली), लेकिन उनके आचरण में वह शुद्धता नहीं होती जो एक सच्चे मनुष्य में होनी चाहिए। कबीर हमें सिखाते हैं कि आंतरिक पवित्रता और सिद्धांतों के प्रति निष्ठा ही व्यक्ति को विशिष्ट बनाती है। यह साखी आज के समाज को 'कथनी और करनी' की एकता की ओर लौटने का संदेश देती है।

4.7 पारिष कौ अंग

4.7.1 जब गुण -- बदले जाइ।।



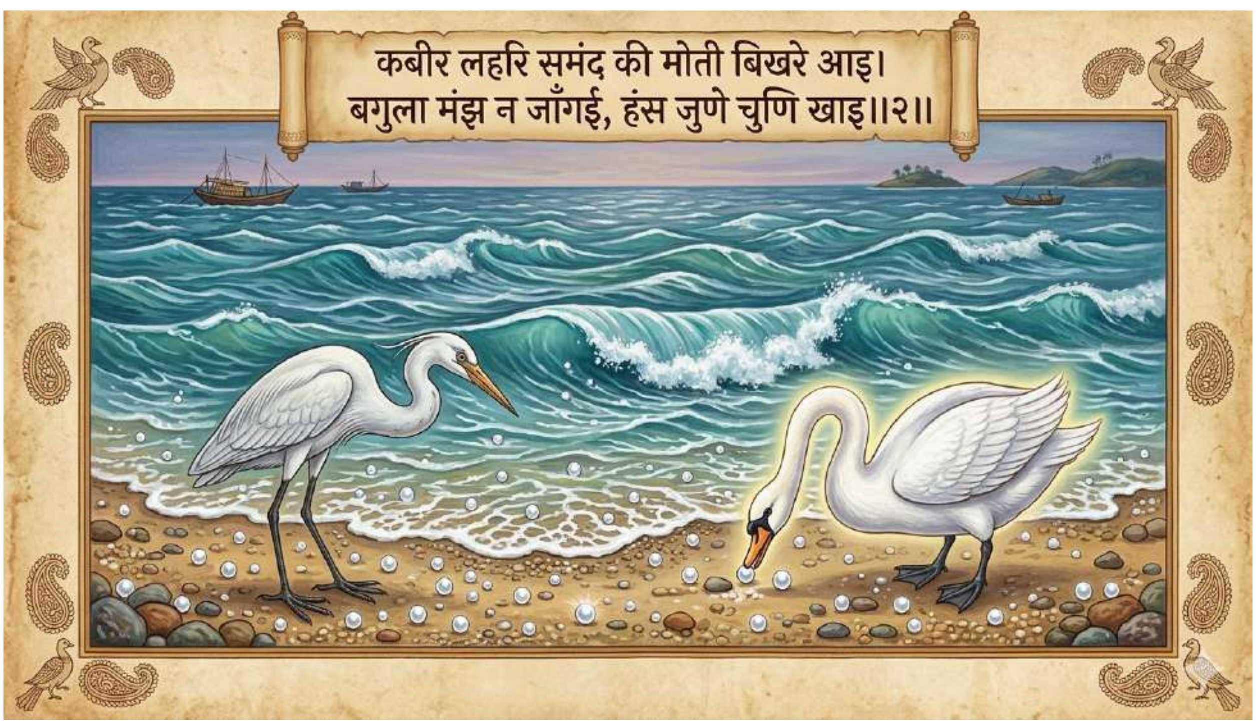
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि जब किसी गुण या योग्यता को पहचानने वाला पारखी (ग्राहक) मिल जाता है, तब उस गुण की कीमत लाखों में होती है। लेकिन यदि गुण को समझने वाला कोई गाहक न हो, तो वही अमूल्य गुण कौड़ियों के भाव बिकता है, अर्थात् उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता। यहाँ 'गुण' ज्ञान और कौशल का प्रतीक है, जबकि 'गाहक' उसे सराहने वाले समाज या गुरु का।

प्रासंगिकता

आज के 'कौशल-आधारित' (Skill-based) युग में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में प्रतिभा की कमी नहीं है, लेकिन सही 'मंच' (Platform) और 'अवसर' के अभाव में कई योग्य व्यक्ति गुमनामी में रह जाते हैं। यह साखी आज के समाज को 'प्रतिभा की खोज' (Talent Hunting) और गुणों के उचित मूल्यांकन का संदेश देती है। यह हमें सिखाती है कि किसी वस्तु या व्यक्ति का मूल्य उसकी उपयोगिता और उसे समझने वाले की दृष्टि पर निर्भर करता है।

4.7.2 कबीर लहरि -- चुणि खाइ।।



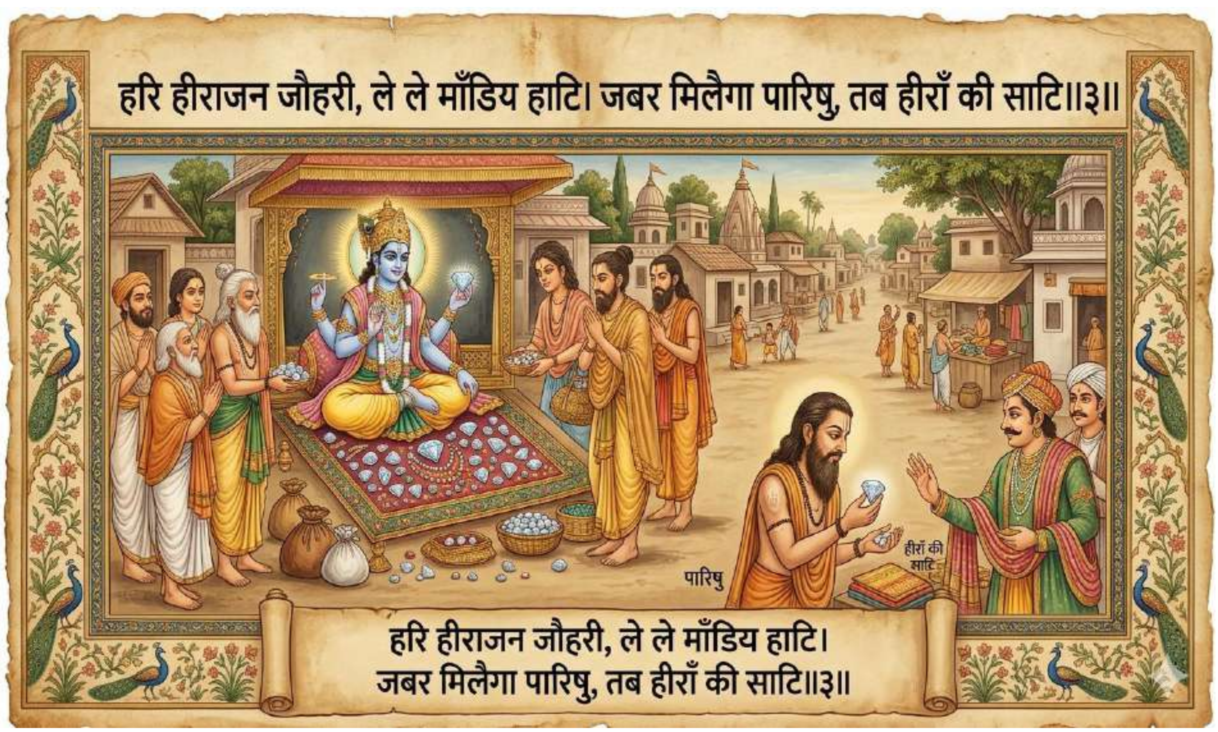
भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि समुद्र की लहरें तट पर अनगिनत मोती बिखेर देती हैं। लेकिन किनारे पर बैठा बगुला उन मोतियों के महत्व और उनकी गहराई (मंझ) को नहीं जानता, इसलिए वह उन्हें साधारण पत्थर समझकर छोड़ देता है। इसके विपरीत, 'हंस' जैसा पारखी जीव उन मोतियों को पहचान लेता है और उन्हें एक-एक करके चुन-चुनकर खाता है। यहाँ 'समुद्र' ज्ञान का भंडार है, 'लहरें' उपदेश हैं, 'मोती' जीवन-मूल्य हैं, 'बगुला' अज्ञानी व्यक्ति है और 'हंस' विवेकशील साधक या छात्र है।

प्रासंगिकता

आज के 'सूचना विस्फोट' (Information Explosion) के युग में यह साखी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में इंटरनेट और पुस्तकों के रूप में ज्ञान के 'मोती' चारों ओर बिखरे हुए हैं। कबीर हमें सिखाते हैं कि केवल सूचनाओं के बीच उपस्थित होना पर्याप्त नहीं है; व्यक्ति के पास उन सूचनाओं में से सारतत्व (Essence) निकालने का 'हंस जैसा विवेक' होना चाहिए। यह साखी आज के समाज को 'भीड़ का हिस्सा' बनने के बजाय 'सत्य का पारखी' बनने की प्रेरणा देती है।

4.7.3 हरि हीराजन --- की साटि।।



भावार्थ

कबीर दास जी कहते हैं कि परमात्मा (हरि) उस जौहरी के समान है जिसने अपने भक्तों रूपी हीरों को इस संसार रूपी हाट (बाज़ार) में सजाकर रखा है। वे कहते हैं कि इन अमूल्य हीरों की असली पहचान और सौदा तभी संभव होगा जब कोई 'जबर पारिषु' (महान पारखी या विशेषज्ञ) आएगा। बिना पारखी के इन हीरों का वास्तविक मूल्य दुनिया के सामने नहीं आ सकता। यहाँ 'हीरा' शुद्ध आत्मा या ज्ञान का प्रतीक है और 'जौहरी' उस ज्ञान को पहचानने वाले ईश्वर या सद्गुरु का।

प्रासंगिकता

आज के **'प्रतिभा प्रदर्शन' (Talent Showcase)** और **'प्रतिस्पर्धा'** के युग में यह साखी बहुत अर्थपूर्ण है। वर्तमान समय में व्यक्ति के पास योग्यता तो है, लेकिन उसे समाज के सामने सही ढंग से रखने और पहचानने के लिए एक दृष्टि की आवश्यकता है। कबीर हमें सिखाते हैं कि सत्य और गुणों का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व होता है, लेकिन उनकी सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब उन्हें कोई गुणवान व्यक्ति (पारखी) मान्यता प्रदान करता है। यह साखी आज के समाज को **'सच्ची योग्यता'** का सम्मान करने की सीख देती है।

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

5.1.1 जीवन परिचय सम्बन्धी

- प्रसिद्ध पद्य की तार्किक गणना के अनुसार कबीरदास का जन्म संवत् 1456 (ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा, चंद्रवार) सिद्ध होता है, क्योंकि पद्य में 'साल गए' शब्द का अर्थ है कि उस समय तक संवत् 1455 बीत चुका था।
- कबीर के 'विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से जन्म' और 'लहरतारा तालाब' की कथा ऐतिहासिक कसौटी पर कम, बल्कि लोक-प्रचलित जनश्रुतियों पर अधिक आधारित है। स्वयं कबीर के वचनों के अनुसार वे काशी के जुलाहा परिवार (नीरू और नीमा) में ही पले-बढ़े थे।
- ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार कबीर और स्वामी रामानंद का साक्षात् संवाद या दीक्षा कठिन जान पड़ती है। परंतु कबीर पर रामानंद जी के 'राम नाम' का इतना गहरा प्रभाव था कि उन्होंने स्वामी जी को अपना 'मानस गुरु' माना और मानसिक साक्षात्कार को ही वास्तविक गुरु-शिष्य संबंध स्वीकार किया।
- कबीर ने आजीवन जिन बाहय आडंबरों, कंठी-जनेऊ और कर्मकांडों का खंडन किया, विडंबना यह है कि आगे चलकर उनके बाद कबीरपंथ में उन्हीं कर्मकांडों और पंथवाद को अपना लिया गया।
- कबीर ने समाज में फैले इस अंधविश्वास को तोड़ने के लिए कि 'काशी में मरने से मोक्ष और मगहर में मरने से नरक मिलता है', जानबूझकर अपने अंतिम समय में काशी छोड़ी और मगहर में शरीर त्यागा।
- कबीर की मृत्यु के बाद हिंदू-मुस्लिम विवाद और शव के स्थान पर फूल मिलने की कथा भले ही अलौकिक हो, परंतु इसका मूल भाव यह संदेश देता है कि वे जीवन के बाद भी दोनों संस्कृतियों को जोड़ने वाले महासेतु थे।

5.1.2 चयनित दोहा सम्बंधी

5.1.2.1 करणीं बिना कथणीं कौ अंग

आध्यात्मिक प्रगति या ईश्वर की प्राप्ति केवल मुख से बड़ी-बड़ी बातें करने, उपदेश देने या बाहरी दिखावा करने से नहीं होती। जब तक मनुष्य का आचरण (करनी) उसकी बातों (कथनी) के अनुकूल पवित्र और सच्चा नहीं होता, तब तक उसका सारा ज्ञान और धार्मिक पाखंड ताश के महल की तरह ढह जाता है।

5.1.2.2 कथणीं बिना करणीं कौ अंग

केवल पुस्तकें पढ़ना, अक्षर ज्ञान बटोरना या खुद को विद्वान समझना व्यर्थ है, यदि उस ज्ञान से मन में ईश्वर (राम) के प्रति प्रेम, विनम्रता और आचरण की शुद्धता पैदा न हो। कबीरदास जी ने कोरे शास्त्र-ज्ञान की तुलना में व्यावहारिक और प्रेम-युक्त जीवन को श्रेष्ठ माना है।

5.1.2.3 कुसंगति कौ अंग

कुसंगति (बुरी सोहबत) और विषय-वासनाओं का प्रभाव मनुष्य के पवित्र स्वभाव और गुणों को पूरी तरह नष्ट कर देता है। कबीरदास जी के अनुसार, चाहे व्यक्ति कितने ही ऊंचे कुल में पैदा हुआ हो या कितना ही पवित्र हो, यदि उसकी संगति या आचरण बुरा है, तो उसका पतन निश्चित है। इसलिए जीवन में कुसंगति का त्याग और सत्संगति को अपनाना अनिवार्य है।

5.1.2.4 संगति कौ अंग

दिखावे या देखा-देखी की जाने वाली भक्ति और बेमेल या कुसंगति का साथ हमेशा विनाशकारी होता है। कबीरदास जी के अनुसार, मनुष्य का मन एक पक्षी की तरह चंचल है, वह जैसी संगति में बैठता है, वैसा ही उस पर रंग चढ़ता है और वैसा ही फल उसे भुगतना पड़ता है। संसार एक काजल की कोठरी के समान है, जहाँ बिना आत्म-नियंत्रण के कलंकित होने से बचना असंभव है।

5.1.2.5 असाध कौ अंग

मनुष्य की पहचान उसके बाहरी पहनावे, चमकीले रूप या मीठी बातों से नहीं, बल्कि उसके आंतरिक आचरण से होती है। कबीरदास जी ने बाहर से साधु और भीतर से कपटी दिखने वाले ढोंगियों से सावधान रहने की चेतावनी दी है, और यह स्पष्ट किया है कि सच्चे संतों (साधु) की संगति कभी भी निष्फल (व्यर्थ) नहीं जाती।

5.1.2.6 साध कौ अंग

सच्चे संतों और सज्जनों की संगति कभी भी निष्फल नहीं जाती। जैसे चंदन अपनी सुगंध से साधारण पेड़ों को भी महका देता है, वैसे ही संतों का साथ मनुष्य की दुर्बुद्धि को नष्ट कर उसके पापों का अंत कर देता है। कबीरदास जी के अनुसार, बिना सत्संगति और हरि-भक्ति के सारे तीर्थ और बाहरी साधन व्यर्थ हैं, और जो इस संसार रूपी 'काजल की कोठरी' में परमात्मा की ओट (शरण) ले लेता है, वही कलंक से बच पाता है।

5.1.2.7 पारिष कौ अंग

गुणों, ज्ञान और भक्ति का वास्तविक मूल्य केवल एक सच्चा पारखी (जौहरी) ही समझ सकता है। जब तक समाज में सही पारखी नहीं मिलता, तब तक अनमोल गुण भी कौड़ियों के भाव बिकते हैं। इसके साथ ही, कबीरदास जी स्पष्ट करते हैं कि जब जीवन में सच्चे पारखी (परमात्मा या सद्गुरु) से साक्षात्कार होता है, तभी मनुष्य के भीतर वास्तविक ज्ञान का उदय (उपजाणि) होता है और सांसारिक भ्रम समाप्त होते हैं।

5.2 शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

साखी के चयनि दोहों से निम्नलिखित शैक्षिक मूल्य उभरकर सामने आते हैं:

1. **व्यावहारिक प्रामाणिकता एवं क्रियात्मक अधिगम (Practical Authenticity & Learning by Doing)**

- कबीर का पूरा दर्शन 'कथनी' के ऊपर 'करनी' की विजय का उद्घोष है। किताबी शब्दों को याद कर लेना या नैतिक नियमों की बड़ी-बड़ी बातें करना तब तक निरर्थक है जब तक वे आचरण में न उतरें।
- **शोध दृष्टि से निहितार्थ:** यह आधुनिक शिक्षा शास्त्र के 'अनुभवात्मक अधिगम' (Experiential Learning) और 'व्यावहारिक प्रामाणिकता' (Authentic Learning) के सिद्धांत को पुष्ट करता है। शिक्षा का ढांचा ऐसा होना चाहिए जहां सिद्धांत (Theory) और व्यवहार (Practice) के बीच कोई खाई न हो। यह रटंत प्रणाली (Rote Learning) को खारिज कर ज्ञान को विद्यार्थी के अस्तित्व का हिस्सा बनाने की वकालत करता है।

2. **पारिस्थितिकीय अधिगम और परिवेशीय शुद्धता (Ecological Learning & Environment)**

- 'निर्मल बूँद', 'केले और बेर' तथा 'काजल की कोठरी' के रूपकों के माध्यम से कबीर यह स्पष्ट करते हैं कि ज्ञान शून्य में विकसित नहीं होता; छात्र का परिवेश ही उसके गुणों की दिशा तय करता है।

  शोध दृष्टि से निहितार्थ: यह शैक्षिक मनोविज्ञान के इस सिद्धांत को रेखांकित करता है कि बालक के विकास में वातावरण (Environment) और समकक्षी समूह (Peer Group) की भूमिका अत्यंत संवेदनशील होती है। शिक्षण संस्थानों का दायित्व केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि एक ऐसा 'निर्मल और सुरक्षित' परिवेश निर्मित करना है जो छात्र की जन्मजात अच्छाइयों को विकारों से बचाकर उसे सृजनात्मकता (सीप में मोती बनने की प्रक्रिया) की ओर अग्रसर करे।

3. **आत्म-विनियमन और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (Self-Regulation & Emotional Intelligence)**

- **'माषी गुड़' (प्रलोभन में फंसना)** और 'पोथी पढ़ि' (हृदयहीनता) जैसी साखियों के सामूहिक सार से स्पष्ट होता है कि कबीर केवल बौद्धिक तीक्ष्णता के पक्षधर नहीं थे।

  शोध दृष्टि से निहितार्थ: वर्तमान शिक्षा प्रणाली जहां केवल संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Domain) पर केंद्रित है, वहीं कबीर का दर्शन भावात्मक पक्ष

(Affective Domain) और 'आत्म-नियंत्रण' (Self-Regulation) जैसे जीवन कौशलों (Life Skills) पर बल देता है। सच्ची शिक्षा विद्यार्थी को समाज की बुराइयों और तात्कालिक प्रलोभनों (डिजिटल भटकाव या अनैतिक मार्ग) के बीच रहते हुए भी 'सजकता' (Mindfulness) के साथ अपने चरित्र की शुचिता बनाए रखने की प्रतिरोधी क्षमता (Immunity) प्रदान करती है।

4. **शिक्षक की बहुआयामी भूमिका: उत्प्रेरक और पारखी (Multifaceted Role of the Teacher)**

- 'साध' और 'पारिष' अंगों के समन्वय से शिक्षक की पारंपरिक छवि बदलकर एक आधुनिक मार्गदर्शक (Facilitator) के रूप में सामने आती है।

  शोध दृष्टि से निहितार्थ: कबीर का शैक्षिक दर्शन शिक्षक को तीन विशिष्ट रूपों में स्थापित करता है:

- चंदन (उत्प्रेरक): जो छात्र की वर्तमान अज्ञानता (आक-पलास) को स्वीकार कर उसे अपने सान्निध्य से गुणवान बना देता है।
- गंगा (समावेशी): जो छात्र की सामाजिक या व्यक्तिगत पृष्ठभूमि (खाई-नाले) को देखे बिना उसे समान रूप से अपनाकर उसका कायाकल्प करती है (Inclusive Education)।
- **जौहरी/पारखी (मूल्यांकनकर्ता):** जो पारंपरिक परीक्षा और अंकों के संकीर्ण दायरे से ऊपर उठकर छात्र के भीतर छिपे सुप्त 'हीरे' (Real Potential) को पहचानता है।

5. **आलोचनात्मक चिंतन और बौद्धिक ईमानदारी (Critical Thinking & Intellectual Honesty)**

- 'देखा-देखी' (अंधानुकरण) पर कबीर का कड़ा प्रहार और 'जाँनि बूझि' (जानबूझकर झूठ का साथ न देना) का सिद्धांत सीधे तौर पर ज्ञान की शुद्धता से जुड़ा है।

  शोध दृष्टि से निहितार्थ: यह विद्यार्थियों और विशेषकर शोधार्थियों में 'आलोचनात्मक विवेक' (Critical Thinking) और 'बौद्धिक ईमानदारी' (Research Ethics) विकसित करने की प्रेरणा देता है। शिक्षा का उद्देश्य छात्र को 'भीड़ चाल' का हिस्सा बनाना नहीं, बल्कि उसमें यह साहस पैदा करना है कि वह किसी भी सूचना या

छद्म रूप (डिजिटल मिसइन्फॉर्मेशन या बाहरी आडंबर) को बिना तर्क की कसौटी पर कसे स्वीकार न करे।

6. अंतर्मुखी शोध और संज्ञानात्मक गहराई (Deep Work & Inward Reflection)

- 'खेती लहरि समाइ' (लहर का समुद्र में मिलना) और 'बगुले' की जगह 'हंस वृत्ति' अपनाने का शैक्षिक अर्थ सतही ज्ञान से हटकर मूल तत्वों की खोज करना है।
- **शोध दृष्टि से निहितार्थ:** यह अधिगम में 'तल्लीनता' (Deep Work) और 'सार-तत्व की पहचान' (Conceptual Understanding) के महत्व को दर्शाता है। सूचनाओं के महासागर में से केवल उपयोगी और नैतिक निष्कर्षों (मोतियों) को चुनना ही वास्तविक शोध और शिक्षा है। यह छात्र को बाहरी दुनिया की असीमित सूचनाओं (Information Overload) को बटोरने के बजाय स्वयं के भीतर झांकने (Self-Reflection) की क्षमता देता है।

7. शोधपरक निष्कर्ष (Research Conclusion)

- यदि इन सभी विन्दुओं को एक वाक्य में पिरोया जाए, तो कबीरदास जी का शैक्षिक दर्शन "व्यावहारिक प्रामाणिकता (Authenticity), संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) और सामाजिक समावेशिता (Inclusivity) पर आधारित चरित्र-केंद्रित शिक्षा" का प्रतिपादन करता है। वर्तमान परिदृश्य में जब शिक्षा व्यावसायिक और सूचना-प्रधान होती जा रही है, तब कबीर का यह मूल्य-आधारित दृष्टिकोण शिक्षा को 'उपाधि' (Degree) से ऊपर उठाकर 'संस्कार' (Values) तक ले जाने के लिए अनिवार्य मार्गदर्शक है।कबीर वाणी का सामूहिक एकीकृत शैक्षिक निहितार्थ (Comprehensive Educational Implications)

5.3 अध्ययन के सुझाव

कबीर के काव्य में लोकजीवन, मानवीय संवेदना, श्रम-संस्कृति, नैतिकता, सामाजिक समानता, भाषा की सरल अभिव्यक्ति और जीवन-मूल्यों का अत्यंत सशक्त चित्रण मिलता है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल परीक्षा-केन्द्रित न होकर मूल्यपरक, व्यावहारिक और मानवीय होनी चाहिए; इसलिए कबीर के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस विषय पर अध्ययन करते समय अलग-अलग वर्गों के लिए निम्न सुझाव उपयोगी हो सकते हैं–

5.3.1. विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-सुझाव

(क) मूल्यपरक अध्ययन विद्यार्थियों को कबीर के काव्य का अध्ययन केवल साहित्यिक दृष्टि से नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी मूल्यों की दृष्टि से करना चाहिए। उनकी कविताओं से निम्न मूल्यों को ग्रहण किया जा सकता है–

- श्रम का सम्मान
- सादगीपूर्ण जीवन
- ईमानदारी और सत्यनिष्ठा
- सामाजिक समानता
- मानवीय संवेदना और करुणा
- आत्मनिरीक्षण की भावना

(ख) भाषा और अभिव्यक्ति कौशल का विकास कबीर की भाषा सरल, लोकधर्मी और सहज है। विद्यार्थी उनकी कविताओं का अध्ययन करके–

- शुद्ध एवं सरल हिंदी लिखना सीख सकते हैं।
- लोकभाषा और जनभाषा के महत्व को समझ सकते हैं।
- व्यंग्य तथा सीधी अभिव्यक्ति की रचनात्मक लेखन क्षमता विकसित कर सकते हैं।

(ग) सामाजिक चेतना का विकास उनकी कविताएँ समाज के सामान्य लोगों, जुलाहों, शोषितों और उपेक्षित वर्गों के जीवन से जुड़ी हैं। इससे विद्यार्थियों में–

- सहानुभूति और संवेदनशीलता जागृत होती है।
- सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध होता है।
- तथा लोकतांत्रिक व तार्किक दृष्टिकोण विकसित होता है।

(घ) व्यावहारिक शिक्षा विद्यार्थियों को समूह चर्चा, दोहा-पाठ, नाट्य प्रस्तुति और प्रोजेक्ट कार्य के माध्यम से कबीर के शैक्षिक व सामाजिक मूल्यों को व्यावहारिक जीवन में लाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

5.3.2. शिक्षकों के लिए अध्ययन-सुझाव

(क) मूल्य आधारित शिक्षण शिक्षकों को कबीर के काव्य और जीवन परिचय को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर जीवन-शिक्षण के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। वे कक्षा में निम्न बिंदुओं पर चर्चा कर सकते हैं–

- नैतिक शिक्षा और सदाचार
- श्रम की गरिमा और सादगी
- सामाजिक समरसता
- मानवता और आंतरिक शुचिता

(ख) शिक्षण विधियों में प्रयोग कबीर के काव्य को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को–

- संवादात्मक शिक्षण,
- गतिविधि आधारित शिक्षण (जैसे दोहा अंत्याक्षरी),
- कविता-पाठ और सस्वर गायन,
- समूह कार्य,
- तथा अनुभवात्मक शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए।

(ग) विद्यार्थियों को सामाजिक यथार्थ से जोड़ना शिक्षकों को विद्यार्थियों को यह समझाना चाहिए कि साहित्य केवल कोरी कल्पना नहीं, बल्कि समाज का दर्पण है। कबीर के माध्यम से मध्यकालीन और वर्तमान समाज की कुरीतियों तथा वास्तविक समस्याओं का तुलनात्मक बोध कराया जा सकता है।

(घ) भाषा शिक्षण में उपयोग उनकी कविताएँ हिंदी भाषा शिक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी हैं क्योंकि उनमें–

- सरल शब्दावली,
- लोकभाषा का पुट,
- तथा संप्रेषणीय शैली का सुंदर प्रयोग मिलता है।

5.3.3. जनसामान्य के लिए अध्ययन-सुझाव

(क) सामाजिक जागरूकता जनसामान्य को कबीर के काव्य के माध्यम से सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता, मानवीय संबंधों और लोकसंस्कृति के महत्व को समझना चाहिए।

(ख) सांस्कृतिक संरक्षण उनकी कविताएँ भारतीय लोकजीवन और निर्गुण परंपरा का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। अतः समाज को अपनी लोकपरंपरा, साखियों और साझा सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए इससे प्रेरणा मिलती है।

(ग) नैतिक मूल्यों का विकास आज के भौतिकवादी युग में कबीर का काव्य सादगी, ईमानदारी, अहंकार-मुक्ति और परोपकार की शिक्षा देता है। जनसामान्य को इन मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

(घ) साहित्यिक चेतना का विस्तार पुस्तकालयों, साहित्यिक गोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से कबीर के पदों व साखियों का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए ताकि आम जनता उनके सांप्रदायिक सौहार्द के मूल संदेश से जुड़ सके।

5.3.4 प्रशासकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए अध्ययन-सुझाव

(क) मूल्यपरक शिक्षा नीति का निर्माण प्रशासकों को शिक्षा व्यवस्था में ऐसे साहित्य और जीवन चरित्र को शामिल करना चाहिए जो विद्यार्थियों में–

- नैतिकता,
- सामाजिक उत्तरदायित्व,
- तथा लोकतांत्रिक मूल्यों (समानता और धर्मनिरपेक्षता) का विकास करे।

(ख) पाठ्यक्रम में समावेश विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर कबीर की प्रामाणिक साखियों, पदों और ऐतिहासिक काल-गणना के वैज्ञानिक तथ्यों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक चेतना का विकास हो।

(ग) ग्रामीण एवं लोक साहित्य को बढ़ावा प्रशासकों को लोकधर्मी साहित्य और कबीरपंथ से जुड़े ऐतिहासिक स्थलों (जैसे काशी का कबीरचौरा और मगहर की मज़ार व समाधि) के संरक्षण और शोध के लिए–

- साहित्यिक संगोष्ठियों,
- शोध परियोजनाओं,
- तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।

(घ) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को मूल्यपरक एवं साहित्य-आधारित व्यावहारिक शिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे कबीर जैसे क्रांतिकारी कवियों के माध्यम से विद्यार्थियों का समग्र विकास कर सकें।

(ङ) मानवीय शिक्षा पर बल वर्तमान समय में तकनीकी और भौतिक शिक्षा के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं को विकसित करने वाली शिक्षा भी आवश्यक है। कबीर का काव्य प्रशासन को ऐसी संतुलित शिक्षा व्यवस्था निर्मित करने की प्रेरणा देता है।

निष्कर्ष

कबीर का काव्य और उनका जीवन चरित्र भारतीय समाज, लोकजीवन और मानवीय मूल्यों का प्रामाणिक दस्तावेज है। उनके काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य आज के समय में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं, क्योंकि आधुनिक शिक्षा में नैतिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना का अभाव दिखाई देता है।

विद्यार्थियों, शिक्षकों, जनसामान्य और प्रशासकों–सभी को कबीर के काव्य और उनके क्रांतिकारी जीवन संघर्षों से प्रेरणा लेकर शिक्षा व समाज को अधिक मानवीय, तार्किक, मूल्यपरक और समाजोपयोगी बनाने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

5.4 शैक्षिक उपादेयता

कबीरदास हिंदी साहित्य के निर्गुण भक्ति काव्यधारा के अंतर्गत ज्ञानाश्रयी शाखा के सर्वप्रमुख और युगांतकारी कवि हैं। उनकी कविताओं और जीवन वृत्त में भारतीय जनजीवन, लोकसंस्कृति, मानवीय संवेदना, निर्भीकता तथा सामाजिक यथार्थ का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। वे एक ऐसे अनूठे रचनाकार हैं जिन्होंने साहित्य को केवल कोरा मनोरंजन या दर्शन न मानकर उसे समाज और व्यावहारिक जीवन से जोड़ने का कार्य किया। इसलिए उनके जीवन परिचय और साहित्य का अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं शिक्षाप्रद माना जाता है। उनके अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता निम्नलिखित प्रकार से विस्तारपूर्वक स्पष्ट की जा सकती है–

5.4.1 भाषा-विकास में सहायक

कबीर की भाषा अत्यंत सरल, सहज, लोकधर्मी और बोलचाल के निकट है। उन्होंने कृत्रिमता से दूर रहकर जनभाषा और लोकभाषा (सधुक्कड़ी) का प्रयोग किया है, जिससे विद्यार्थियों को भाषा की स्वाभाविकता समझने में सहायता मिलती है। उनके अध्ययन से विद्यार्थी–

- शुद्ध, स्पष्ट और प्रभावशाली हिंदी लिखना सीखते हैं।
- शब्द-भंडार और मुहावरेदार भाषा में वृद्धि होती है।
- व्यंग्य और सीधी अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है।
- भाषा के व्यावहारिक व संप्रेषणीय रूप का ज्ञान प्राप्त होता है।

उनकी कविताएँ और साखियाँ पढ़कर विद्यार्थी यह समझते हैं कि अत्यंत सरल और लोकभाषा में भी कितनी गहराई के साथ गंभीर भाव व्यक्त किए जा सकते हैं।

5.4.2 लोकजीवन एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान

कबीर ने काशी, मगहर तथा अपने भ्रमण काल के दौरान ग्रामीण जीवन, बुनकरों, किसानों और सामान्य जन की समस्याओं एवं जीवनशैली का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कविताएँ भारतीय लोकसंस्कृति का एक जीवंत दस्तावेज प्रतीत होती हैं। उनके अध्ययन से विद्यार्थियों को–

- तत्कालीन और मध्यकालीन भारतीय समाज की वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है।
- लोकसंस्कृति, लोकपरंपराओं एवं सामान्य जन के जीवन की समझ विकसित होती है।
- भारतीय समाज की जड़ों से जुड़ने का अवसर मिलता है।
- सांस्कृतिक चेतना और भारतीयता की भावना मजबूत होती है।

आज के शहरी और तकनीकी युग में यह अध्ययन विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान और मिट्टी से जोड़ने में विशेष रूप से सहायक है।

5.4.3 नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास

कबीर की साखियों और वचनों में मानवता, करुणा, सादगी, ईमानदारी, अहंकार-मुक्ति, प्रेम और श्रम के गौरव जैसे मानवीय मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इनका अध्ययन विद्यार्थियों में–

- दूसरों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करता है।
- सहयोग, परोपकार और सह-अस्तित्व की भावना विकसित करता है।
- श्रम के महत्व (जैसे जुलाहा जीवन के प्रति सम्मान) को समझाता है।
- नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी का बोध कराता है।

इस प्रकार उनका साहित्य और जीवन चरित्र विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण तथा आंतरिक शुचिता में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है।

5.4.4 सामाजिक चेतना का विकास

कबीर सामाजिक विषमताओं, जाति-पाँत के भेदों, बाह्याडंबरों और रूढ़िवादिता के विरुद्ध अपनी कविताओं में मुखर होकर आवाज़ उठाते हैं। वे समाज के शोषित और उपेक्षित वर्ग के पक्षधर कवि हैं। उनकी रचनाओं से विद्यार्थियों में–

- सामाजिक समस्याओं और कुरीतियों के प्रति जागरूकता आती है।
- अन्याय और रूढ़ियों के विरुद्ध तार्किक ढंग से सोचने की क्षमता विकसित होती है।
- समानता, समरसता और लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ बढ़ती है।
- समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती है।

यह प्रसंग विद्यार्थियों को केवल एक कुशल पाठक ही नहीं, बल्कि एक सजग और जागरूक नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।

5.4.5 चिंतन और विश्लेषण क्षमता का विकास

कबीर की उक्तियाँ केवल भावप्रधान नहीं हैं, बल्कि उनमें विचार, तर्क और अनुभव की गहरी परख होती है। वे जीवन के वास्तविक अनुभवों को बहुत ही सटीक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इसके अध्ययन से विद्यार्थी–

- घटनाओं, किंवदंतियों और ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण करना सीखते हैं।
- तर्कशील, वैज्ञानिक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।
- स्वतंत्र चिंतन की क्षमता प्राप्त करते हैं।
- जीवन की विषमताओं और सामाजिक अंतर्विरोधों को गंभीरता से समझते हैं।

यह गुण विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास और उनकी निर्णय लेने की क्षमता में अत्यंत सहायक होता है।

5.4.6 साहित्यिक रुचि और सौंदर्यबोध का विकास

कबीर की साखियों और पदों में भाव, विचार, गेयता और शिल्प का सुंदर समन्वय मिलता है। उनकी अनूठी उलटबाँसियाँ और सीधे दिल पर चोट करने वाले दोहे साहित्य के प्रति विद्यार्थियों की रुचि को बढ़ाते हैं। इससे–

- कविता-पठन और सस्वर वाचन की आदत विकसित होती है।
- साहित्यिक सौंदर्य और व्यंग्य को समझने की क्षमता बढ़ती है।
- कल्पनाशीलता का विकास होता है।
- रचनात्मक लेखन और सृजनात्मकता की प्रेरणा मिलती है।

इस प्रकार उनका साहित्य विद्यार्थियों में एक परिपक्व साहित्यिक संस्कार विकसित करने का कार्य करता है।

5.4.7 यथार्थवादी दृष्टिकोण का विकास

कबीर जीवन के वास्तविक, व्यावहारिक और जीवंत रूप को प्रस्तुत करते हैं। वे कल्पना की काल्पनिक दुनिया से दूर रहकर वास्तविक धरातल पर जीने पर बल देते हैं। उनकी कविताओं से विद्यार्थी–

- जीवन के वास्तविक संघर्षों को समझते हैं।
- कठिन परिस्थितियों का साहस और निर्भीकता से सामना करना सीखते हैं।
- सत्य और वास्तविकता को सहजता से स्वीकार करने की क्षमता प्राप्त करते हैं।
- काल्पनिक संसार के बजाय सकारात्मक और व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

5.4.8 जनवादी चेतना का विकास

कबीरदास मूलतः जनसामान्य के कवि हैं। वे राजदरबारों के आश्रय से दूर रहकर समाज के साधारण व्यक्ति, कामगार और शोषितों को अपने साहित्य का केंद्र बनाते हैं। इससे विद्यार्थियों में–

- समानता और लोकतंत्र की भावना मजबूत होती है।
- समाज के कमजोर, उपेक्षित और श्रमिक वर्गों के प्रति सम्मान जागृत होता है।
- सामाजिक न्याय की समझ उत्पन्न होती है।
- सामूहिक जीवन और सामाजिक सहयोग का महत्व स्पष्ट होता है।

5.4.9 शिक्षा को जीवन से जोड़ने में सहायक

कबीर की शिक्षाएँ केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि जीवन की व्यावहारिक परिस्थितियों से जुड़ी होती हैं। इसीलिए उनका अध्ययन विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन की गहरी समझ प्रदान करता है। इससे–

- शिक्षा का वास्तविक सामाजिक महत्व समझ में आता है।
- जीवनोपयोगी निष्ठा और स्वावलंबन की भावना विकसित होती है।
- अनुभवात्मक ज्ञान और क्रियाशीलता को महत्व मिलता है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि कबीरदास का साहित्य और जीवन चरित्र विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनका अध्ययन न केवल भाषा और साहित्य का ज्ञान देता है, बल्कि विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदनाएँ, तार्किक दृष्टिकोण, नैतिक मूल्य, निर्भीकता और सांस्कृतिक समझ भी विकसित करता है। इस दृष्टि से उनका साहित्य शिक्षा जगत के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों–तीनों के लिए अत्यंत उपयोगी, व्यावहारिक और सदा प्रेरणादायक है।

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य में कबीर के जीवन परिचय, ऐतिहासिक अंतःसाक्ष्यों और उनके वैचारिक दृष्टिकोण में निहित शैक्षिक मूल्यों एवं उनकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन

किया गया है। यह अध्ययन अनेक नवीन शोध संभावनाओं को भी उद्घाटित करता है। भविष्य में निम्नलिखित विषयों पर विस्तृत शोध कार्य किया जा सकता है –

1. कबीर के समग्र काव्य में लोकचेतना, ऐतिहासिक काल-गणना और मूल्यबोध का विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
2. कबीर के जीवन परिचय से जुड़े भौगोलिक संदर्भों (काशी, मगहर और लहततारा) का ऐतिहासिक एवं सामाजिक विश्लेषण किया जा सकता है।
3. कबीर एवं अन्य मध्यकालीन निर्गुण संतों जैसे रैदास, दादू दयाल तथा गुरु नानक के काव्य में शैक्षिक व नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के संदर्भ में कबीर के जीवन-दर्शन की उपयोगिता, चरित्र-निर्माण और प्रासंगिकता पर शोध किया जा सकता है।
5. कबीरपंथ के ऐतिहासिक विकास और इसके परवर्ती स्वरूप में आए कर्मकांडीय अंतर्विरोधों का आलोचनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा स्तर पर मूल्य-आधारित भाषा शिक्षण में कबीर की साखियों और पदों के प्रयोग की संभावनाओं का अध्ययन किया जा सकता है।
7. कबीर के काव्य में प्रयुक्त लोकभाषा, सधुक्कड़ी और जनभाषा के शैक्षिक महत्व पर भाषावैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है।
8. वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक संकट के संदर्भ में कबीर के सांप्रदायिक सौहार्द और 'मानवीय एकता' के सिद्धांतों की प्रासंगिकता का अंतःविषयी (Interdisciplinary) अध्ययन किया जा सकता है।
9. कबीर के वैराग्य दर्शन बनाम व्यावहारिक गार्हस्थ्य जीवन (लोई, कमाल-कमाली प्रसंग) के सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थों पर शोध किया जा सकता है।
10. डिजिटल युग में कबीर के लोक-साहित्य और जनवादी चेतना के अंतर्संबंधों के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता पर भी शोध किया जा सकता है।
11. कबीर के काव्य में नारी, दलित एवं वंचित वर्गों के जीवन-संघर्ष और मानवीय अधिकारों की अभिव्यक्ति का अध्ययन भी भावी शोध के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।
12. मूल्यपरक शिक्षा के विकास में हिंदी संत-साहित्य की भूमिका विषय पर व्यापक शोध करते हुए कबीर को केंद्रीय कवि के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, रा. (2015)। *संत-साहित्य में प्रगतिशील चेतना: कबीर के विशेष संदर्भ में* (थीसिस नं. 331595) [पी-एच.डी. शोध-प्रबंध, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/331595

देवी, उ. (2001)। सामाजिक *चेतना के सन्दर्भ में कबीर तथा तुलसीदास के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन* (थीसिस नं.124212) [पी-एच.डी. शोध-प्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालयला]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/124212

मिश्रा, म. (2002)। *सन्त काव्य परम्परा में सन्त कबीर और सन्त दादू का तुलनात्मक अध्ययन* (थीसिस नं. 77551) [पी-एच.डी. शोध-प्रबंध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/177551

राज, स. (2002)। *आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता* (थीसिस नं. 23005) [पी-एच.डी. शोध- प्रबंध, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/23005

वशिष्ठ, भा. (2017)। *शैक्षिक उन्नयन एवंम् जीवन मूल्यों के विकास के संत कबीर के योगदान का शोधपरक अनुशीलन (*थीसिस नं.193067) [पी-एच.डी. शोध-प्रबंध, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबडेवाला विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/193067

विश्राम. (2015)। *कबीर-बीजक में बिम्ब-विधान (*थीसिस नं. 332904) [पी-एच.डी. शोध- प्रबंध, उत्तर प्रदेश राजर्ष टण्डन मुक्तविश्वविद्यालय]। शोधगंगा।

http://hdl.handle.net/10603/332904

शशिबाला. (2015)। *संत-साहित्य में प्रगतिशील चेतना: कबीर के विशेष संदर्भ में* (थीसिस नं. 332160) [पी-एच.डी. शोध-प्रबंध, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/332160

सिंह, अ. (2000)। *सन्त कबीर के साहित्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन* (थीसिस नं. 301075) [पी-एच.डी. शोध-प्रबंध, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/301075

सोनोने, त्रि. (2005)। *सन्त कबीर और सन्त तुकाराम के सामाजिक दर्शन का तुलनात्मक अनुशीलन* (थीसिस नं. 179355) [पी-एच.डी. शोध-प्रबंध, सन्त गाडगेबाबा विश्वविद्यालय]। शोध गंगा। http://hdl.handle.net/10603/179355

श्रीवास्तवा, नी. (2005)। *कबीर के काव्य में विचार और कवित्व* (थीसिस नं. 201141) [पी- एच.डी. शोध-प्रबंध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/201141

सिंह, अ. कु. (2022)| *केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन।* अप्रकाशित [एम.एड. लघु शोध-प्रबन्ध, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज]।

दास, श्यामसुन्दर (सम्पादक)। (2022)। *कबीर ग्रन्थावली* । वाणी प्रकाशन।

अमर उजाला ब्यूरो. (2021, जून 24)। *Kabirdas Jayanti 2021: इस दिन है समाज सुधारक संत कबीर दास की जयंती, जानिए उनके जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य*। अमर उजाला। https://www.amarujala.com/spirituality/religion/sant-kabirdas-jayanti-2021-date-tithi-his-biography-and-know-tha-important-things-about-kabeerdas

आजतक डिजिटल. (2025, मार्च 13)। *चेहरे पर रंग, मन में भेद... संत कबीर की अनोखी होली जो घमंड जलाकर मनती है।* आजतक। https://www.aajtak.in/religion/festivals/story/sant-kabir-spiritual-holi-festival-love-devotion-holika-dahan-ntcpvp-1914175-2025-03-13

ईटीवी भारत उत्तर प्रदेश टीम. (2026, जनवरी 29)। *कबीरदास ने जहां ली थी अंतिम सांस वहां शुरू हुआ ये महोत्सव, कबीर पंथियों का लगा मेला।* ईटीवी भारत। https://share.google/Em62YXMiJyxsKg1Iv

कबीर न्यूज़ ब्यूरो. (2026, मई 24)। *Mainpuri Kabir Ashram Sermon: Mahant Amar Sahab on Worldly Pleasures.* कबीर न्यूज़। https://share.google/Cf709YaR08w2euwDa

एबीपी न्यूज़ वेब डेस्क. (2026, मई 7)। *कबीरदास जयंती 2026 कब है? | Kabirdas Jayanti 2026 Kab Hai.* एबीपी लाइव। https://share.google/kZwNMsI9SLVadXn72

नवभारत टाइम्स डिजिटल डेस्क. (2026, मई 20)। *Kabir Jayanti 2026: 'राम' और 'अल्लाह' को एक बताने वाले कबीरदास हिंदू थे या मुस्लिम? जानिए समाज सुधारक संत के धर्म का रहस्य।* नवभारत टाइम्स। https://share.google/CfiRbCkF7N7iMYdQJ

डेलीहंट न्यूज़ डेस्क. (2026, मई 21)। *Kabirdas Jayanti 2026: संत कबीरदास की शिक्षाएं पाखंड से दूर करने वाली अमूल्य विरासत।* डेलीहंट। https://share.google/WC2biPSFIm57sCYVW

ज़ी न्यूज़ डेस्क. (2026, मई 18) *Kabirdas Jayanti 2026: कबीरदास जयंती कब है ? जानें उनके जीवन से जुड़ी वो बातें, जिनसे आप अनजान हैं | Kabirdas Jayanti 2026 Date history unknow facts kabir dohe।* ज़ी न्यूज़। https://share.google/pqMJt5o60vQQqs0Nu

जागरण जोश डेस्क. (2025, जून 10)। *Sant Kabir Das Jayanti 2025: Legacy and Teachings.* जागरण जोश। https://share.google/EifVIbdJ5kVZ5tn7r

लेखक/वेबसाइट संपादक टीम. (वर्ष, तिथि)। *लेख का शीर्षक (Italics में). वेबसाइट/पोर्टल का नाम।* https://share.google/4DbmZFNV2NoA3jvow

परिशिष्ट

I अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

II जीवन वृत्त

परिशिष्ट ।

अध्ययन संबंधित, लेख इत्यादि

Kabirdas jayanti 2021: इस दिन है समाज सुधारक संत कबीर दास की जयंती, जानिए उनके जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य

धर्म डेस्क, अमर उजाला Published by: Shashi Shashi Updated Thu, 24 Jun 2021 06:06 AM IST

सार

कबीर दास भक्ति काल के कवि और समाज सुधारक थे। इन्होंने अपना पूरा जीवन समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वास को दूर करने में लगा दिया। प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ मास में पूर्णिमा को इनकी जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस बार कबीर दास जयंती 24 जून 2021 को मनाई जाएगी।



आज तक

Channel RADIO LIVE

चेहरे पर रंग, मन में भेद... संत कबीर की अनोखी होली जो घमंड जलाकर मनती है

संत कबीर ने होली को केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि आत्मा की जागरूकता और प्रेम का प्रतीक बताया है. उनकी होली बाहरी रंगों से नहीं, बल्कि भीतर के रंगों से जुड़ी है, जो स्थायी है.



Kabirdas Jayanti 2026: संत कबीरदास की शिक्षाएं पाखंड से दूर करने वाली अमूल्य विरासत

DN डाइनामाइट न्यूज़ 1 week ago

New Delhi: कबीरदास जयंती 2026 इस वर्ष 29 जून को मनाई जाएगी। इस दिन संत कबीरदास की 649वीं जन्म वर्षगांठ के रूप में पूरे देश में श्रद्धा और उत्साह के साथ जश्न मनाया जाएगा। कबीरदास केवल एक कवि नहीं थे, बल्कि समाज सुधारक, निडर विचारक और मानवता के सच्चे प्रवक्ता भी थे।

नईदुनिया

मेरी खबरें NEW

होम ताजा खबरें मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ उत्तर प्रदेश देश धर्म

भोजशाला पर फैसला एलपीजी संकट जनगणना गर्मी का म

होम / धर्म / कहते हैं

Kabir Jayanti 2026: 'राम' और 'अल्लाह' को एक बताने वाले कबीरदास हिंदू थे या मुस्लिम? जानिए समाज सुधारक संत के धर्म का रहस्य

संत कबीरदास केवल एक महान संत ही नहीं, बल्कि समाज सुधारक और प्रसिद्ध कवि भी थे। इस वर्ष संत कबीरदास जी की 649वीं जयंती मनाई जाएगी। ...और पढ़ें

abp न्यूज़

हिंदी

न्यूज़ राज्य मनोरंजन खेल ऐस्ट्रो बिजने

Israel Iran War आईपीएल 2026 राशिफल फोटो गैलरी Eve

हिंदी न्यूज़ / लाइफस्टाइल / धर्म / KABIRDAS JAYANTI 2026: कबीर...

Kabirdas Jayanti 2026: कबीरदास जयंती कब है ? जानें उनके जीवन से जुड़ी वो बातें, जिनसे आप अनजान हैं

Kabirdas Jayanti 2026: कबीरदास जयंती 29 जून को है. समाज सुधारक रहे कबीरदास जी के जीवन की कई ऐसी खास बाते हैं जो आज भी लोगों को मोटिवेट करती हैं.



VARANASI NEWS | LUCKNOW NEWS | ISRAEL IRAN

उत्तर प्रदेश Uttar Pradesh

लाइव | राज्य | IPL 2026 | भारत | चैंपियन

ETV Bharat / State

कबीरदास ने जहां ली थी अंतिम सांस वहां शुरू हुआ ये महोत्सव, कबीर पंथियों का लगा मेला

36 वर्षों से लगातार हो रहा आयोजन, इस बार छह दिनों तक चलेगा ये आयोजन.



दैनिक भास्कर

On Google

मैनपुरी कबीर आश्रम में विशाल सत्संग का आयोजन: महंत अमर साहब ने सांसारिक सुखों पर दिए प्रवचन, कई लोग मौजूद रहे

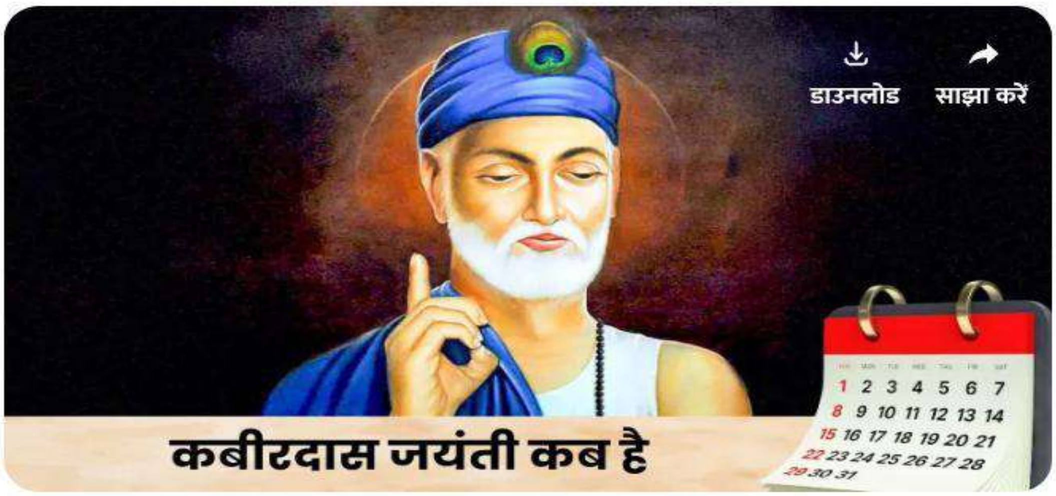
आपकी पूजा, आपके संकल्प — अब और भी सरल और पवित्र अनुभव के साथ

ऐप डाउनलोड करे

श्री मंदिर

अA

(•••) › कबीरदास जयंती 2026 कब है?



कबीरदास जयंती 2026 कब है? | Kabirdas Jayanti 2026...

इस लेख में जानिए 2026 में कबीरदास जयंती की तिथि, संत कबीरदास का जीवन, उनके विचार, इस दिन का महत्व और मनाने की परंपराओं की संपूर्ण जानकारी।

पूरब में गूंजेगी कबीरवाणी: बंगाल में बना पहला कबीर मंदिर, सदगुरु ज्ञान मंदिर का उद्घाटन; काशी के 10 संत पहुंचे

अमर उजाला नेटवर्क, वाराणसी। Published by: Aman Vishwakarma Updated Sun, 17 May 2026 02:01 PM IST

सार

Varanasi News: कबीर प्राकट्यधाम लहरतारा से जुड़े संतों ने पश्चिम बंगाल के कालेबुंड जिले में पूर्वोत्तर भारत के पहले कबीर ज्ञान मंदिर का उद्घाटन किया। 15 वर्षों में बने इस मंदिर से करीब 10 राज्यों में कबीर वाणी का प्रसार होगा। देशभर में कबीर साहेब के 2500 मठ-आश्रम और 500 से अधिक मंदिर संचालित हैं।

NBT नवभारत टाइम्स By THE TIMES OF INDIA

Hindi News / State / Madhya Pradesh / Umaria / Kabirpanthis Reache

200 कर्मी, 100 से अधिक जवान और डॉक्टरों की टीम... तगड़ी सुरक्षा के बीच कबीर चौरा पर पहुंचे कबीरपंथी

Umaria News: बांधवगढ़ नेशनल पार्क में हजारों की संख्या कबीरपंथी पहुंचे। इस दौरान प्रशासन की तरफ से सख्त व्यवस्था की गई थी। वन में आए श्रद्धालुओं ने कबीर चौरा के दर्शन किए हैं। साथ ही बांधवगढ़ किला पर भी गए।

3:42

Sant Kabir Da...
ghtsonindia.com

INSIGHTSIAS
SIMPLIFYING IAS EXAM PREPARATION

Sant Kabir Das

Syllabus: Bhaktism

Source: IE

Context: Sant Kabirdas Jayanti was celebrated on June 11, marking his 648th birth anniversary.

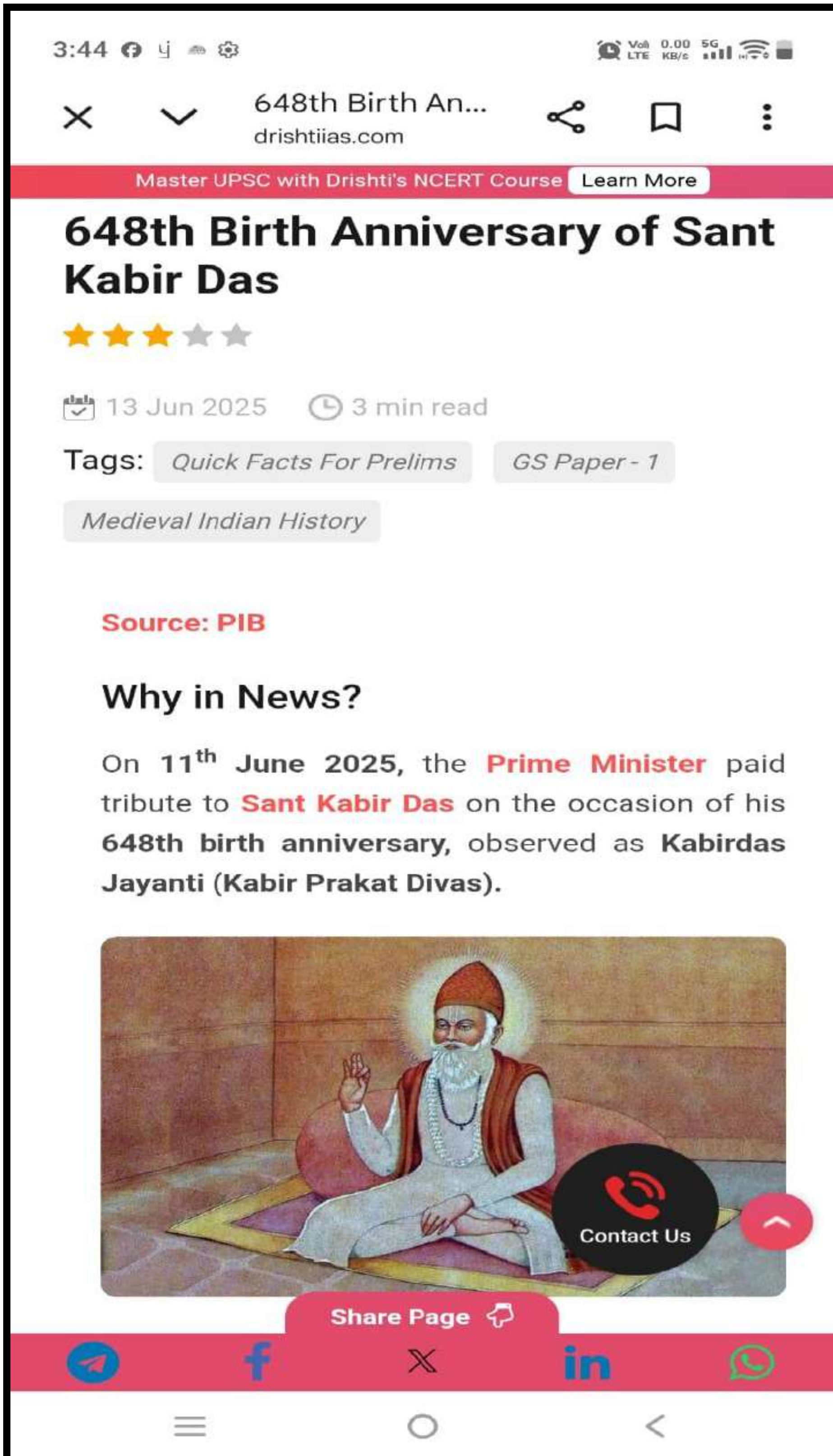
- This occasion honours the 15th-century poet-saint's timeless contribution to **spiritual unity and social reform**.



About Sant Kabir Das:

Who Was Sant Kabir Das?

- Sant Kabirdas was a **15th-century mys** **poet, Bhakti saint, and social reform**



3:44

648th Birth An...
drishtiias.com

Master UPSC with Drishti's NCERT Course Learn More

648th Birth Anniversary of Sant Kabir Das

13 Jun 2025 3 min read

Tags: *Quick Facts For Prelims* *GS Paper - 1* *Medieval Indian History*

Source: PIB

Why in News?

On **11th June 2025,** the **Prime Minister** paid tribute to **Sant Kabir Das** on the occasion of his **648th birth anniversary,** observed as **Kabirdas Jayanti (Kabir Prakat Divas).**

Contact Us

Share Page

परिशिष्ट II

जीवन–वृत्त

व्यक्तिगत सूचना -



नाम - निशा

पिता का नाम - श्री रामनरेश

माता का नाम - श्रीमती राजू देवी

जन्मतिथि - 10/04/2001

सम्पर्क सूत्र - 8423919810

ई-मेल – mishamisha 98691@ gmail. Com

पता - मूसा नगर, बिसण्डा रोड, अतर्रा (बाँदा)

शैक्षिक योग्यता -

क्रम.संख्या	योग्यता	बोर्ड / विश्वविद्यालय	विद्यालय / महाविद्यालय	वर्ष	श्रेणी
1.	हाई स्कूल	UP Board	HIC Atarra	2016	First
2.	इण्टरमीडिएट	UP Board	HIC Atarra	2018	First
3.	स्नातक	BU jhansi	BPMMM Atarra (Banda)	2021	First
4.	बी.एड.	BU jhansi	SRSM Naraini (Banda)	2023	First
5.	परा स्नातक (रसायन विज्ञान)	BU jhansi	ADC Atarra (Banda)	2025	Second
6.	एम. एड.	BU jhansi	ADC Atarra (Banda)	....	......

कौशल/रुचियाँ-

शिक्षण कार्य, गेम खेलना, विडियो देखना, संगीत, नृत्य, घूमना, कम्प्यूटर चलाना, खाना बनाना इत्यादि।

Published Book –

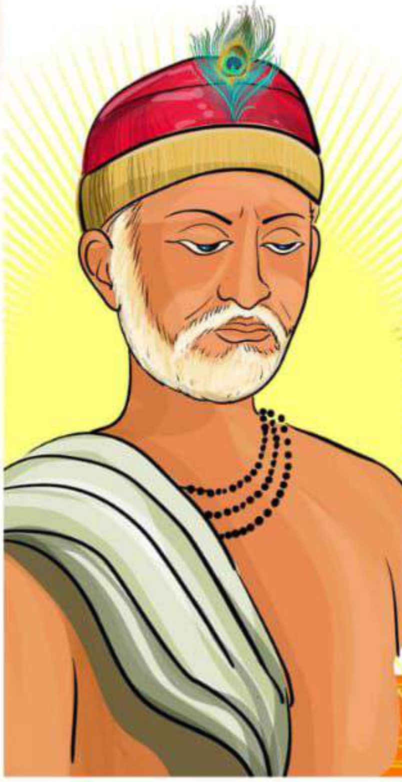
S. no.	Topic	Year	Page no.	ISBN	Website
1	स्वामी दयानंद सरस्वती का शैक्षिक योगदान	2026	75	978-93-5692-442-0	https://archive.org/details/nisha-file

दिनांक- **हस्ताक्षर**

स्थान- अतर्रा (बाँदा)

(निशा)

कबीर के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता: एक अध्ययन



संत ना छाडै संतई,
जो कोटिक मिले असंत।
चंदन भुवंगा बैठिया,
तऊ सीतलता न तजंत।।

अर्थ - जिन लोगों के संस्कार अच्छे होते हैं, वे बुरे लोगों के बीच रहकर भी अपनी अच्छाई नहीं छोड़ते हैं। जिस तरह चंदन के पेड़ पर सांप लिपटे रहते हैं, लेकिन चंदन अपने गुण नहीं छोड़ता है।

 मूल्य: ₹111

9 789359 430560

TQRCG